सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मितान

सत्रहवां संस्करण 2023





कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़-रायपुर

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़-रायपुर

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 23.05.2023 को किए गए निरीक्षण के दौरान की कुछ झलकियाँ









rawpixel

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मितान

सत्रहवां संस्करण 2023

हिन्दी वार्षिक पत्रिका

स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़-रायपुर
जीरो पाईंट, बलौदा बाजार रोड
पिन - 492005

आभार-सीजी ऑनलाइन जीपीएफ़ अंतिम भुगतान प्रणाली के तहत वेब आधारित एप्लीकेशन

पुरस्कृत कार्यालय
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
(लेखा एवं हकदारी), छत्तीसगढ़

उत्कृष्टता का क्षेत्र
हकदारी प्रक्रियाएं और दावों का निपटान, आईटी संचालित और आईटी आधारित पहल



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), छत्तीसगढ़ ने ई-कोष पोर्टल में "आभार- सीजी ऑनलाइन पेंशन प्रबंधन प्रणाली" के तहत एक पोर्टल 'ऑनलाइन जीपीएफ़ अंतिम भुगतान प्रणाली' बनाई है। पोर्टल को त्वरित निपटान के लिए विभिन्न चरणों में जीपीएफ़ मामलों का प्रबंधन और समीक्षा करने और जीपीएफ़ अभिदाताओं को उनकी सेवानिवृत्ति के बाद कठिनाई से बचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। जीपीएफ़ अंतिम भुगतान प्रणाली 1 अप्रैल 2021 से छत्तीसगढ़ की सभी ट्रेजरी में लागू कर दी गयी है। पोर्टल ने सटीक प्रबंधन सूचना प्रणाली, जीपीएफ़ मामलों की अद्यतित स्थिति और एक ऑनलाइन ट्रैकिंग प्रणाली प्रदान करके जीपीएफ़ ग्राहकों को लाभान्वित किया है। इसके अलावा, अंतिम भुगतान मामलों को पूरा करने मे लगने वाला औसत समय 44 कार्य दिवसों से घटकर लगभग आठ कार्यदिवस हो गया।

उपरोक्त कार्य हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा ऑडिट दिवस वर्ष 2022 में सम्मानित किया गया।

सत्यमेव जयते

मितान परिवार

संरक्षक

श्री पूर्ण चंद्र माझी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़, रायपुर

अध्यक्ष

श्री यशवंत कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

परामर्शदात्री समिति

श्री विलास यू. पाटिल
उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्रीमती जी. एजिलरसी
उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि)

श्रीमती एम. उमा
उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II)

संपादक

श्री यशवंत वर्मा
हिन्दी अधिकारी

सह संपादक

श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

श्रीमती संगीता साटकर
पर्यवेक्षक

श्री सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक

श्री केदार नाथ जंघेल
लेखापरीक्षक

श्री शिव शंकर गोरे
कनिष्ठ अनुवादक

वृक्ष मित्र

(पांचवी वर्षगांठ)

प्रधान महालेखाकार कार्यालय परिवार, छत्तीसगढ़, रायपुर









सत्यमेव जयते

संदेश



प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालयीन हिन्दी वार्षिक गृह पत्रिका 'मितान' के 17 वें अंक का प्रकाशन किए जाने पर मुझे अत्यधिक गर्व एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किये गये प्रयास सराहनीय है।

यह कार्यालय राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग के लिए सदैव अग्रणीय रहा है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग तथा समर्पण का परिणाम है, जिसके कारण संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण में इस कार्यालय को प्रशंसा प्राप्त हुई है।

संयुक्त कार्यालय की इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं/लेख तथा कविता में विषय का विवरण सहज एव सुबोध तरीके से किया गया है। आशा है कि जिस प्रकार यह पत्रिका अधिकारियों/कर्मचारियों के लेखन प्रतिभाओं को अभिव्यक्ति प्रदान का एक सशक्त माध्यम बनी है, इसमें रचनाकारों एवं पाठकों का भी हिन्दी में रूचि की वृद्धि होगी और यह पत्रिका विचारधारा का वास्तविक दर्पण बनकर हमारे उम्मीदों पर खरा उतरेगी।

पत्रिका 'मितान' के प्रकाशन हेतु रचनाकारों, चित्रकारों, संपादक मंडल सहित प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े कर्मियों को मैं बधाई एवं शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं।

पूर्ण चंद्र माझी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़, रायपुर

15 अगस्त 2023 की झलकियां

















सत्यमेव जयते

संदेश



यह प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि, कार्यालय अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका 'मितान' के 17वें संस्करण का प्रकाशन करने जा रहा है। राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं संवर्धन करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और इस दायित्व को पूरा करने में 'मितान' पत्रिका का प्रकाशन एक उल्लेखनीय योगदान है।

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें, भारतीय जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरसता, सुबोधता एवं ग्राह्यता के बल पर ही भारतीय समाज, संस्कृति एवं साहित्य को जीवंत बनाए रखा है।

लेखन के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करना पुलकित करता है। यदि वही लेखन अन्य लोगों तक उसी मनोभाव के साथ संप्रेषित होती है, तो रचनाधर्मिता के निर्वहन का आनंद बढ़ जाता है। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वरचित रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रति उनके उत्कट प्रेम को दर्शाता है।

मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि 'मितान' पत्रिका पाठकों को रुचिकर लगेगी तथा कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अभिवृद्धि होगी एवं रचनाकारों को अपनी बात पाठकों तक पहुंचाने में पत्रिका एक सशक्त माध्यम बनेगी।

मैं हृदय से सम्पादकीय मंडल एवं रचनाकारों को अपनी हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूं, जिनके प्रयास से पत्रिका का प्रकाशन सतत् जारी है।

य: कुमार

यशवंत कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़

दिनांक 23.01.23 को नेताजी सुभाषचंद बोस के जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित पराक्रम दिवस में मुख्य अतिथि ब्रिग्रेडियर विगनेश महंती महोदय













संपादकीय



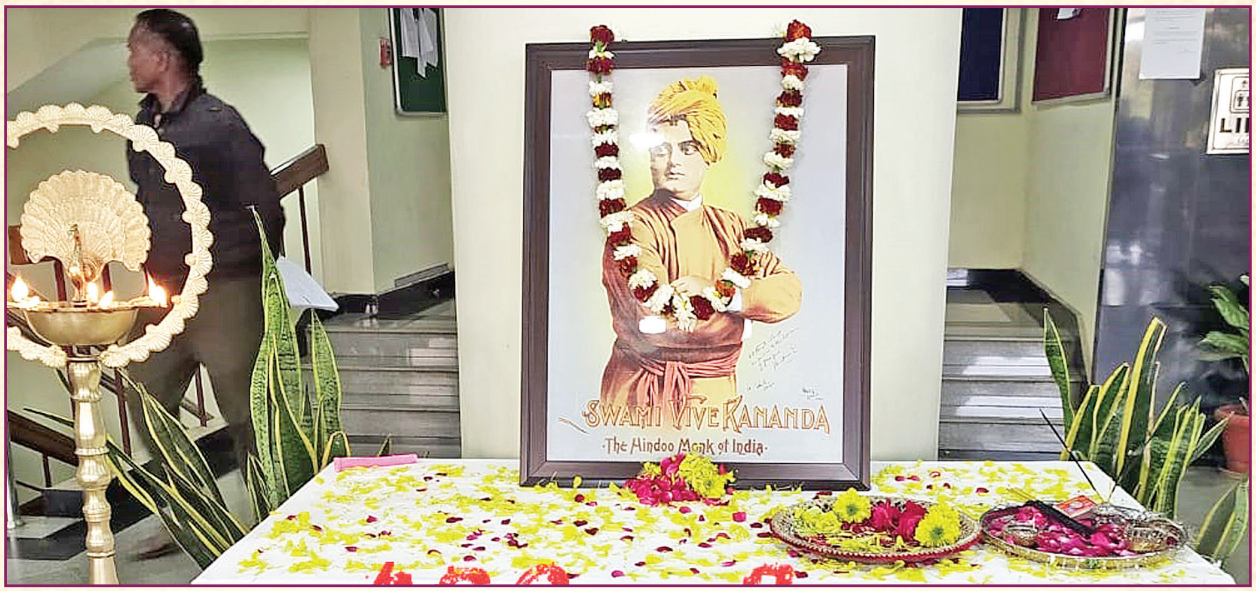
'मितान' के 17 वें अंक को संपादीत करते हुए मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। कार्यालय की पत्रिका मितान वर्षों से राजभाषा की सेवा में समर्पित है। 'मितान', छत्तीसगढ़ राज्य में आजीवन एक मैत्री संबंध का सूचक है जिसमें भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान सहजता के साथ करने का संकल्प लिया जाता है। कुछ ऐसा ही इस पत्रिका का उद्देश्य है। इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के नीति निर्देशों को पालन करने के साथ-साथ कार्यालयीन कर्मियों के लेखन/पठन कला को विकसित करना भी एक महती उद्देश्य है। मुझे विश्वास है कि ज्ञान, धर्म एवं साहित्य से सुसज्जित यह पत्रिका आपके हाथों में सौंपे जाने के बाद इन उद्देश्यों के पालन में सफल साबित होगा।

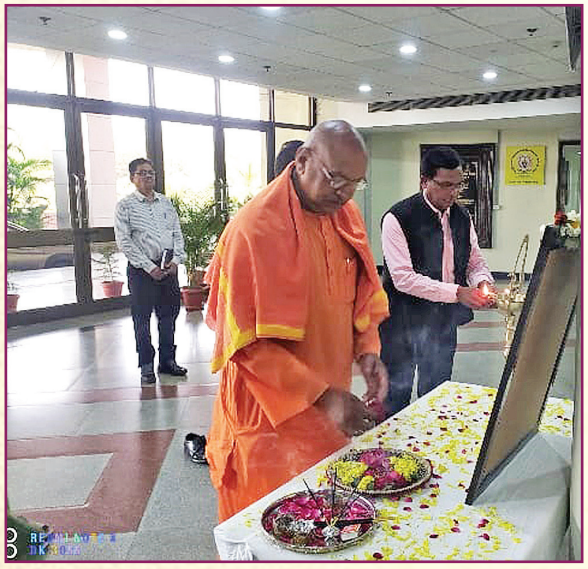
भाषा, राष्ट्रीय विकास के प्रमुख स्तंभो में से एक है। अतः राष्ट्रहित के भाव से राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग के साथ व्यापक प्रचार-प्रसार करना भी एक संवैधानिक उत्तरदायित्व है। यह तभी संभव होगा जब हम हिन्दी को 'उदर' की नहीं 'हृदय' की भाषा के रूप में स्वीकार करेंगे। आज हिन्दी को वैश्विक दृष्टिकोण से चुनौतियों का सामना कर पड़ रहा है परंतु यह भी स्वीकारना हमारा कर्तव्य है कि आज हिन्दी देश के कोने-कोने तक पहुंचकर अपनी सरलता-सहजता का बोध करा रही है। विश्व पटल पर हिन्दी को एक नई पहचान मिल रही है। संपर्क की भाषा हो या अध्ययन की, हर जगह हिन्दी प्रेमियों की संख्या में वृद्धि स्पष्ट दिखाई दे रही है। हिन्दी हृदय की ही नहीं रोजगार की भी भाषा बनकर उभरी है।

मैं सभी रचनाकारों/लेखकों/चित्रकारों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद प्रेषित करते हुए सभी पाठकों से यह अपेक्षा करता हूं कि अपनी प्रतिक्रिया से हमें जरूर अवगत कराएँ ताकि राजभाषा को समर्पित इस पत्रिका को और अधिक उन्नत बनाया जा सके।

यशवंत वर्मा
हिन्दी अधिकारी

12.01.23 को स्वामी विवेकानन्द जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रामकृष्ण मिशन रायपुर के सचिव स्वामी अव्ययात्मानंद जी महाराज आमंत्रित











OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
CHHATTISGARH, RAIPUR

Certificate of Appreciation

It gives me immense pleasure in conveying my appreciation to ***Shri Kumar Arjun, Asst. Audit Officer*** *for passing Sub-ordinate Audit Service (Civil) Examination -2 of 2022 with merit.*

I hope he will keep up the excellent performance and continue to earn laurels in future.

Date : 22 August 2023
Place : Raipur, Chhattisgarh

(Yashwant Kumar)
Principal Accountant General
(Audit)

श्री कुमार अर्जुन (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी) को अखिल भारतीय अधीनस्थ लेखापरीक्षा/लेखा वर्ष 2022 परीक्षा-II में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं नगद राशि प्रदान किया गया।

21 जून योग दिवस पर आयोजित योग शिविर









छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ में पैनल अंपायर एवं बी.सी.सी.आई. लेवल-2 अंपायरिंग सेमिनार में हिस्सा लेते हुए श्री आशुतोष जाधव (पूर्व रणजी खिलाड़ी, म. प्र.), पर्यवेक्षक भारत के सर्वश्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय अंपायर श्री नितिन मेनन के साथ।

अंगदान महोत्सव की झलक



- पुरुष एकल मास्टर स्टेट चैम्पियनशिप जगदलपुर में श्री हिमांशु वर्मा (वरिष्ठ लेखापरीक्षक) ने स्वर्ण पदक हासिल किया।
- अखिल भारतीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय दिल्ली, पुरुष एकल में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- पुरुष डबल मेट्रो इंटरनेशनल टूर्नामेंट नागपुर में भाग लिया।
- पुरुष डबल मुख्यमंत्री ट्रॉफी इंटरनेशनल टूर्नामेंट, रायपुर में भाग लिया।





अखिल भारतीय मास्टर्स रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट 2023 उदयपुर में कांस्य पदक विजेता श्री मनीष गुप्ता, सहायक पर्यवेक्षक। इस टूर्नामेंट उपरान्त दिनांक 11.09.23 से 17.09.23 तक आयोजित होने वाले वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप साउथ कोरिया, जिऊंजू सियोल में इनका चयन भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय की ओर से भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु किया गया।



धमतरी (छत्तीसगढ़) में आयोजित फर्स्ट छत्तीसगढ़ स्टेकिंग (Statanking) टेबल टेनिस चैंपियनशिप में श्री ए. संतोष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।



श्री मनीष गुप्ता (सहायक पर्यवेक्षक) ने अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा गुजरात में स्वर्ण पदक हासिल किया।



- भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिनिधित्व करते हुए हैदरबाद में सीनियर नेहरू गोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट में श्री तेलुगु वेंकटेश (लेखापरीक्षक) ने रजत पदक प्राप्त किया।
- भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिनिधित्व करते हुए कोविलपट्टी, तमिलनाडु में लक्ष्मी अम्मल आल इंडिया हॉकी टूर्नामेंट में तृतीय स्थान प्राप्त किया।





श्री मनीष गुप्ता (सहायक पर्यवेक्षक) ने अखिल भारतीय सीनियर बैडमिंटन, गोवा में स्वर्ण पदक हासिल किया।

अनुक्रमणिका

स.क्र.	शीर्षक	रचनाकार (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पृष्ठ सं.
1.	रिपोर्ट अनुभाग की आत्मकथा	मनोज कुमार देवांगन, लेखापाल	01
2.	चंदा मामा अब टूर के...	यशवंत वर्मा, हिन्दी अधिकारी	02
3.	मेरी रसोई	अपूर्वा श्री, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	04
4.	कामयाबी	सौरिश राय, कनि. अनुवादक	05
5.	ज्ञान हमेशा झुक कर हासिल किया जाता है	मोहम्मद जफ़र, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	06
6.	अपनी गृहस्थी को कुछ इस तरह बचा लिया करो	मोहम्मद जफ़र, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	06
7.	हम दो हमारे दो, जियो और जीने दो	विकास कुमार, लेखापाल	07
8.	भारतीय महाकाव्य, जिन्होंने सदियों बाद भी अपनी महत्ता नहीं खोई	वाय. जवाहर, पर्यवेक्षक	08
9.	भारत @75	उज्जवल कुमार, लेखापरीक्षक	10
10.	खामोश टेबल	अनिता वर्मा, पत्नी- श्री रवि प्रकाश वर्मा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	11
11.	बेटियाँ	अनिता वर्मा, पत्नी- श्री रवि प्रकाश वर्मा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	11
12.	'हम बदलेंगे, युग बदलेगा'	कुंदन कुमार,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	12
13.	G20 सम्मेलन : समृद्ध भविष्य के लिए वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना	पंकज कुमार, लेखापरीक्षक	13
14.	छत्तीसगढ़ के अपरिचित पर्यटन स्थल	प्रेम प्रकाश यादव, डी. ई. ओ.	14
15.	बहाना (एक सफेद झूठ)	मेंडके मनोज रविन्द, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	17
16.	अक्षर...	मेंडके मनोज रविन्द, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	17
17.	अभ्यास का महत्व	गौरव कुमार , सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	18
18.	भारत की अखंडता का आधार, "विविधता में एकता"	प्रभात शेखर बारिक, लेखापाल	19
19.	राम सेतु (एडम्स ब्रिज) वैज्ञानिक तथ्य, इतिहास और धार्मिक महत्व	अपूर्वा श्री, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20
20.	'सकारात्मक सोच की शक्ति'	श्री कुंदन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	22
21.	सर्वोत्तम उपहार	यशवंत वर्मा, हिन्दी अधिकारी	23
22.	अंडमान : एक अभूतपूर्व सफरनामा	जितेन्द्र नयन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	24
23.	समाज सेवा- हमारा कर्तव्य	सौरिश राय, कनिष्ठ अनुवादक	26
24.	दोस्त के लिबास में	संगीता साटकर, पर्यवेक्षक	28
25.	समय का मौसम	प्रसेनजित दास, लेखालिपिक	28

स.क्र.	शीर्षक	रचनाकार (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पृष्ठ सं.
26.	स्वाद और संस्कृति का तिलिस्म : वाराणसी	मयंक सिंघानिया, लेखापरीक्षक	29
27.	डिजिटल इंडिया	वेद प्रकाश, भाई : श्री प्रेम प्रकाश यादव (डी.ई.ओ.)	30
28.	नीली अर्थव्यवस्था	शिव शंकर गोरे, कनिष्ठ अनुवादक	32
29.	इंसान तू है एक दरिंदा जानवर	राय चौधरी बस्तरिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	33
30.	एक औरत का दर्द	राय चौधरी बस्तरिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	33
31.	अंग्रेजी ऑक्सफोर्ड डिक्शनरीज़ में उपस्थित कुछ हिंदुस्तानी शब्द	वाय. जवाहर, पर्यवेक्षक	34
32.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव	नीरज कुमार, लेखापरीक्षक	35
33.	महा प्रतापी राजा महाराणा प्रताप	सुजित मंडल, कल्याण सहायक	36
34.	स्वाभिमान और आत्मसम्मान	मोहम्मद जाफ़र, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	37
35	धड़कन	नीरज कुमार, लेखापरीक्षक	37
36.	नरम बिस्तर में वैज्ञानिक विचार	ऋषभ जैन, वरिष्ठ संभागीय लेखाधिकारी लोक निर्माण विभाग, खैरागढ़	38
37.	जगतगुरू शंकराचार्य से जुड़े बहुत ही रोचक तथ्य	वाय. जवाहर, पर्यवेक्षक	39
38.	चाहत जो अधूरी रही	सचिन कुमार, लेखापरीक्षक	40
39.	साइबर सुरक्षा-हमारा उत्तरदायित्व	डूमेश कुमार धनकर, लेखापरीक्षक	42
40.	बुद्ध	मेंडके मनोज रविन्द्र वरिष्ठ लेखापरीक्षक	44
41.	बबूल का पेड़	मेंडके मनोज रविन्द्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	44
42.	पहन (धारण कर)	सचिन कुमार, लेखापरीक्षक	45
43.	आंतरिक महाभारत	मयंक सिंघानिया, लेखापरीक्षक	45
44.	सपनों का झूला	मेंडके मनोज रविन्द्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	46
45.	तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता के तहत आयोजित कार्यशाला	टीजीएस कक्ष, लेखापरीक्षा कार्यालय	48
46.	लेखा परीक्षा शब्दावली (Audit Terminology)	के.पी. संतोष, पर्यवेक्षक	50
47.	पदोन्नति/सेवानिवृत्ति		52
48.	आर्ट		56

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं रचनाएं संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारियों के द्वारा स्वरचित हैं।
भविष्य में किसी भी प्रकार की विवाद की स्थिति में संपादक परिवार जवाबदेह नहीं होगा।

मितान 2023
सत्रहवां संस्करण

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



रिपोर्ट अनुभाग की आत्मकथा

सुनो सुनो जी कार्यालय वाले, कथा मैं अपनी सुनाता हूं।
मैं हूं कार्यालय का वो अनुभाग, जो राज्य के वार्षिक लेखें बनाता हूं।।

वार्षिक लेखें में है समाहित, राज्य सरकार की वित्तीय स्थिति।
आय-व्यय का सम्पूर्ण ब्यौरा और वर्ष के दौरान की प्रगति।।
शुरु होती है कहानी मेरी, दिसम्बर के मासिक लेखों से।
जो संकलित किये गये है, विभागों से प्राप्त अभिलेखों से।।

संकलन में त्रुटि ढूँढना, काम है मुझे अब करना।
बजट बुक और कुंजियों से, उन सारी त्रुटियों को भरना।।

अब तो भैया समय आ गया, मुख्यालय के पत्राचारों का।
आ गयी है समय-सारणी, लेखों के निपटारों का।।
पांच दिन का बना दौरा कार्यक्रम, जाना है संचनालय।
है जल्दी तो फोन भी करना, मंत्रालय और सचिवालय।।

एक अनुदान की है दो नस्तियां, जिसमें जमा है स्वीकृतियां हजार।
जांच अभी है उनका करना और करना है गलतियों का सुधार।।
अब रूकना नहीं है एक भी पल, चाहे जुकाम हो या हो मर्ज।
सुबह नौ से रात नौ तक, करना है सब सर्वर में दर्ज।।

महोदय ने दिये हैं आदेश, जल्दी से करना है सब काम।
काम तो ऐसे करना है, हो मुख्यालय में अपना पहला नाम।।
आवागमन अब प्रारंभ हो गई, हुई दिशा-निर्देश अनुभागों को जारी।
संकलन अनुभाग अब हो गये शामिल, कर रहे युद्ध स्तर पर तैयारी।।

पहुंच गया अब आई.टी.ए. तक, सम्पूर्ण जाँच अब उनकी जिम्मेदारी।
हो रहा नस्तियों का सम्पूर्ण विश्लेषण और हो रही पूछताछ बारी-बारी।।
चलना है अब लेखापरीक्षा, जहाँ मिलेगा लेखों को अंतिम फरमान।
क्यों ? कब ? कहाँ ? कितना ? इन सभी सवालों का देना है मुझे प्रमाण।।

इंतजार है मुझे प्रमाण-पत्र का, जो होगा लेखापरीक्षा का एक इशारा।
भेज सकेंगे शासकीय लेखा शाखा को, सम्पूर्ण लेखाओं का पिटारा।।
मंथनों का लम्बा दौर चलेगा, शासकीय लेखा और हमारा।
किसी का कुछ ही भाग बदल दो, किसी को बदल दो सारा।।



अब तो ऐसी घड़ी है आई, जब लेखों को देनी है असल परीक्षा।
मुख्यालय के सी.आर. विंग में, अधिकारी करेंगें अब अंतिम समीक्षा।।
तारीखे बढ़ रही कश्मकस बढ़ रहा, है जाना अब मुख्यालय।
अधिकारियों संग कर्मचारी जा रहे, लेके ज्ञान का संग्रहालय।।

मुद्रण करके ले आओ तुम और करलो पुनः अवलोकन।
कह रहे है मुख्यालय में, जब दिय गये अनुमोदन ।।
बड़ी मशक्कत अब है करना, है करना लेखों का मुद्रण।
एक-एक पन्ना पलट-पलट कर, करना है निरीक्षण।।

अंत में सब छप चुका है, राज्य वित्त और विनियोग लेखें।
लेके चलना है मुख्यालय, हस्ताक्षर कब होते हैं देखें।।
समाचार खुशियों भरी आयी, हो गये सी.ए.जी. महोदय के हस्ताक्षर।
लेखों की पहली प्रति समर्पित कर दो, माननीय राज्यपाल को जाकर।।

लेखे अब मंत्रियो तक पहुंची, होगी विधानसभा में इन पर चर्चा।
विपक्ष है अब जवाब मांग रहा, क्यों नहीं हुआ यहां पर खर्चा।।
यही कथा मेरी यही अंत है, हर वर्ष यही दोहराता हूं।
गर्व है मुझे इन बातों पर, कि राज्य के लेखे मैं बनाता हूं।।



मनोज कुमार देवांगन
लेखापाल

चंदा मामा अब टूर के...

14 जुलाई 2023 का दिन मेरे लिए कुछ खाश था और उस दिन भारत से इसरो द्वारा चंद्रयान-3 को प्रक्षेपित किए जाने की घटना ने मेरे जन्मदिवस पर 'चार चाँद' लगा दिया। भारत के अनेक लोगों में आशा और उमंग सोसल मिडिया के माध्यम से साफ देखा जा सकता था। चंद्रमा की यात्रा पृथ्वीवासियों के लिए एक आकर्षक सपना है। हम अक्सर चंद्रमा को देखते हैं, उसकी सतह, गड्ढों और शून्य गुरुत्वाकर्षण की अनुभूति की कल्पना करते हैं। चंद्रमा की यात्रा की संभावना, जो कभी विज्ञान कथा के दायरे में थी, 21वीं सदी में एक वास्तविकता बन गई। यह एक साहसिक कार्य नहीं बल्कि एक वैज्ञानिक अभियान है।

चंद्रमा पर सर्वप्रथम सोवियत संघ, 1959 में लूना-2 अंतरिक्ष यान द्वारा मानव निर्मित यान उतारकर चंद्रमा पर पहुंचने वाला प्रथम देश बना। परंतु यह लैंडिंग प्रक्रिया सुरक्षित न होने के कारण लूना-2 चंद्र सतह पर उतरते ही नष्ट हो गया। अब उनके धूर विरोधी अमेरिका को यह उपलब्धि सहन नहीं हो रहा था। 'प्रतिस्पर्धा से संभावनाएं जन्म लेती है' इस कथन को चरितार्थ करते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1969 में अपोलो-11 की मदद से न केवल यान बल्कि अपने तीन यात्रियों को चंद्र सतह पर सकुशल उतारकर अंतरिक्ष विज्ञान में अपना पताका फहराया। चीन ने भी 2013 में चांग ई-3 अंतरिक्ष यान चांद पर सफलता पूर्वक लैंड कराकर इस चंद्र कड़ी में तीसरे देश के रुप में स्थापित हुआ।

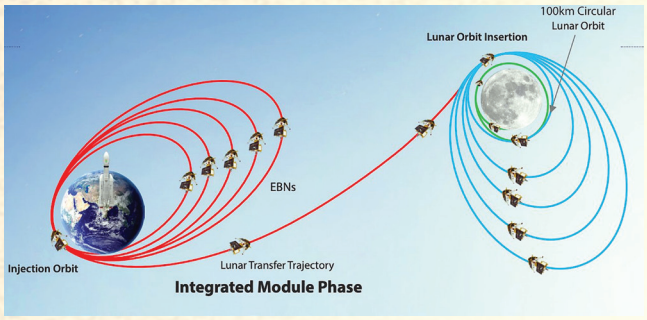
भारत प्रतिस्पर्धा की भावना के परे नवंबर 2008 को चंद्र सतह पर चंद्रयान-1 उतारा, जिससे भारत चंद्रमा पर अपना झंडा लगाने वाला चौथा देश बन गया। मिशन से जुड़े वैज्ञानिकों में मौसम को लेकर थोड़ी चिंता थी, लेकिन सब ठीक-ठाक रहा। जब भावना और उद्देश्य जन कल्याण की हो तो रास्ते के शूल 'फूल' बन जाते है। आसमान में कुछ बादल जरूर थे, इससे चंद्रयान के प्रक्षेपण में कोई दिक्कत नहीं आयी। इस अभियान का नेतृत्व इसरो प्रमुख जी. माधवन नायर ने की। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन [इसरो] ने दावा किया कि चांद पर पानी भारत की खोज है। चंद्रमा पर पानी की मौजूदगी का पता चंद्रयान-1 ने लगाया, जो इस सदी की महत्वपूर्ण खोज बनी। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने भी चांद पर पानी होने की पुष्टि की है। इसरो के अनुसार चांद पर पानी समुद्र, झरने, तालाब या बूंदों के रूप में नहीं बल्कि खनिज और चट्टानों के रूप में मौजूद है।

जुलाई 2019 में प्रक्षेपित चंद्रयान-2 इसरो की चंद्रमा की दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने के लिए पहली उड़ान थी। वैसे तो चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर यान उतारना सभी देशों के लिए चुनौतीपूर्ण था, पर भारत ने इस बार "लोहा लेने की ठानी"। प्रक्षेपण से लेकर पृथ्वी की कक्षा में



परिक्रमा, फिर कक्षा से बाहर निकलना, चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश और चंद्र सतह पर आगे बढ़ने तक के सभी चरण तय कार्यक्रम के अनुसार संचालित हो रहे थे। सॉफ्ट लैंडिग के तीन चरण में से पहले चरण में तय अनुसार गति धीमी हुई पर अगले दोनो चरणों में इंजन के थ्रस्ट ने साथ नहीं दिया और इसरो के साथ करोड़ो भारतीयों का उम्मीद चंद्रयान-2 की तरह क्रैश हो गया। इस मिशन के प्रमुख डॉ. के. सिवन के नम आँखों ने करोड़ो देशवासियों को भावुक कर दिया था। मगर कहते है न कि असफलता में सफलता छुपी होती है, चंद्रयान -2 की टेलीमेट्री आंकड़ा का विश्लेषण कर सुधार किया गया। इसने सफलता की संभावना बढ़ा दी।

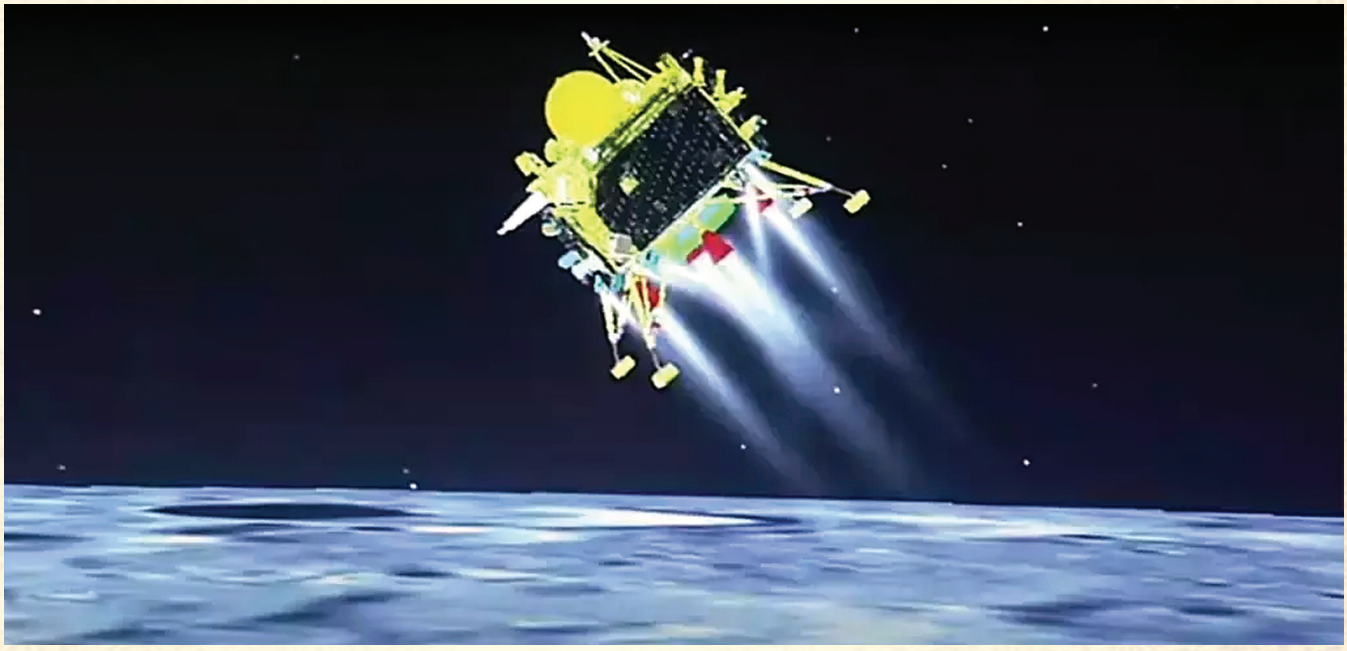
चंद्रयान-2 के असफलता के बाद महज 4 साल के अंदर भारत के वीर वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 तैयार कर साबित कर दिया कि "असफलता केवल स्वीकार करने में है।"



एक बार फिर सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र, श्रीहरिकोटा, आंध्रप्रदेश की पाक भूमि से चंद्रयान-3 ने करोड़ों भारतवासियों की आशाओं को लेकर उड़ान भरी। प्रक्षेपण के समय जोश, उत्साह और विश्वास ने इस मिशन में नई जान भर दी। मिशन के प्रणेता डॉ. एस. सोमनाथ और उसके विशेषज्ञों की टीम के तीक्ष्ण बुध्दि एवं सूक्ष्म विश्लेषण ने चंद्रयान-3 का बाधारहित मार्ग प्रशस्त किया। 40 दिनों की अपने दुर्गम सफर में चंद्रयान-3 ने 21 बार पृथ्वी और 120 बार चाँद की परिक्रमा की। शायद यह घटना सोवियत संघ के 'आँख में खटक' रहा था कि कोई देश उससे पहले चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर लैंड करने का खिताब पा लेगा। 10 अगस्त 2023 को आनन-फानन में उन्होने लूना-25 को तैयार किया और धकेल दिया चंद्रपथ पर जूझने के लिए। वही हुआ जो अक्सर होता है-'हड़बड़ी में गड़बड़ी', बेचारा लूना 19 अगस्त को दक्षिणी चंद्रधरा पर पहुंचने के पहले ही दम तोड़ दिया।

23 अगस्त 2023 की सायं 6 बजे का समय था, पूरे विश्व में इसरो द्वारा प्रचारित लाईव प्रसारण की लिंक से जुड़कर स्कूल, कार्यालयों, दुकानों, रेलवे स्टेशनों से लेकर रोड तक करोड़ों लोगों की धड़कने इसरो टीम के साथ लिंक हो गया था। जैसे-जैसे चंद्रयान-3 अपने निर्धारित पथ पर स्वनियंत्रित होकर आगे बढ़ रहा था, मन रोमांचित और उत्साहित होकर भारत देश के लिए गौरवान्वित महसूस कर रहा था। यह अब तक के सबसे ज्यादा (150 लाख) दर्शकों द्वारा लाईव देखे जाना वाला प्रथम चैनल बन गया। अंततः बहुप्रतिक्षित क्षण अपेक्षानुकूल घटित होने की पुष्टि हुई जब इसरो के विज्ञानवीरों ने उत्साहित करतल ध्वनि के साथ चंद्रधरा पर विक्रम लैंडर के सकुशल लैंडिंग होने की घोषणा की। अब जब तक चंद्रमा पर दिन रहेंगे अर्थात 14 दिनों तक प्रज्ञान रोवर चंद्रतल पर भ्रमण करते हुए वांछित सूचनाएं उपलब्ध कराएगा।

भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री के उन्नत दृष्टिकोण, मिशन के मुखिया डॉ. एस. सोमनाथ के कुशल नेतृत्व तथा पूरी इसरो टीम की जीवटता ने अंतरिक्ष विज्ञान में भारत के नाम एक नया अध्याय रच दिया है।





यशवंत वर्मा
हिन्दी अधिकारी

मेरी रसोई

मेरी रसोई में है एक छोटी सी खिड़की ,
एक छोटी सी खिड़की जो पूरे रसोई को रौशन करती।
उस छोटी सी खिड़की पर अक्सर नज़रे टिकती ,
उस छोटी सी खिड़की से बाहर की दुनिया दिखती ।
खिड़की के पास में है खाने का चूल्हा ,
जिस पर रखी हैं दुल्हन सी कढ़ाई और भगोना बना दूल्हा ।
वहीं खिड़की के पास में ही डब्बे हैं मसालों के ,
कुछ बड़े और पुराने बर्तन भी जमे बैठे हैं सालों से ।
खिड़की के ऊपर पट्टी पर रखे हैं बर्नी आचारों के ,
आम नींबू लहसुन मिर्च का स्वाद हैं दोनों माँओं के हाथों के।
वही पास के एक बर्नी में है आवले का मुरब्बा ,
उसके पास हैं अलग अलग प्रकार के पापड़ों का डब्बा।
हर सुबह एक नन्ही चिड़िया उस खिड़की पर है आती ,
चावल के कुछ दानों को चुगती और कुछ ले कर उड़ जाती।
उस खिड़की से झाँकता है, गमले में उगे फूलो का पौधा ,
अपनी खूशबू बिखेरता और करता रसोई को सौंधा।
उस खिड़की से दिखते हैं बैठक में आए मेहमान ,
खिड़की से झाँक के पूछते क्या बना पकवान ।
वो छोटी सी खिड़की खाने के स्वाद को घर में बिखेरती ,
वो छोटी सी खिड़की मानो पूरे घर को समेटती ।





अपूर्वा श्री
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कामयाबी

कामयाबी को आपके लक्ष्यों को प्राप्त करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। सभी के लिए कामयाबी के अपने मायने होते है। जीवन में विकास करना ही कामयाबी है। हर कोई जीवन में उच्च मुकाम पाना चाहता है। भला कामयाबी की सीढ़ियाँ किन्हें न भाती? कामयाबी मिलने पर व्यक्ति के जीवन में एक नये जीवन का संचार हो जाता है। यह शक्ति, धन या प्रसिद्धि से कहीं अधिक हैं। कामयाबी को संतुष्टि और खुशी की भावना के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जो एक व्यक्ति जीवन के एक विशेष तरीके का नेतृत्व करके प्राप्त करता है। कड़ी मेहनत, थोड़े से अवसर व दृढ़ संकल्प कामयाबी की ओर ले जाता है और कामयाबी की राह में महत्वपूर्ण घटक माने जाते है। यदि सफल होना है, तो कभी भी हार न मानने वाला रवैया रखना चाहिए जब तक कि अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते। यदि मुश्किलों तथा कठिन रास्तों से मुकाम हासिल हो तो फिर उसका आनन्द कुछ और ही होता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए, दूसरों के नक्शेकदम पर चलने के बजाय अपनी कामयाबी के मार्ग को परिभाषित करना महत्वपूर्ण है।

जीवन में कामयाबी अर्जित करने के रहस्य भी बड़े गजब के होते हैं, जो हर किसी को पता भी नहीं होते हैं। रातों-रात कामयाब होना असंभव है। दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत से ही इसे हासिल किया जा सकता है। इसके अलावा, यह पूरी तरह से हमारे हाथ में है कि हम अपने जीवन में कैसे कामयाब हो सकते हैं। कामयाबी हमें संपन्न, प्रसन्न और नई ऊर्जा प्रदान करता है। हम एक बहते हुए नदी की तरह बन जाते हैं जो सदा स्वतंत्र रूप से बहती रहती है। संघर्ष हमारे जीवन की कामयाबी को सार्थक बनाते हैं। कामयाबी प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में दूरदृष्टि होनी चाहिए। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उचित योजना और विचारशील प्रबंधन महत्वपूर्ण है। इस बात से हर कोई सहमत होगा कि यदि किसी क्षेत्र में सफल होना है या कुछ बड़ा करना है तो कड़ी मेहनत और लगन उसके अपरिहार्य अंग है। प्रतिस्पर्धा से भरी इस दुनिया में लोग अपने लक्ष्यों को अगर प्राप्त भी कर लेते हैं, तो दुर्भाग्य से वे सामाजिक, मानसिक और शारीरिक कामयाबी हासिल करने में असफल हो जाते हैं और यह सोचकर तनाव बना रहता है कि कुछ क्षेत्रों में उनकी कमी है। हमें अपने सपने साकार करने के लिए कड़ी मेहनत और अपने समय का सही उपयोग करने की जरूरत है। असफलता भी कामयाबी का ही एक हिस्सा है। हमें अपनी असफलता से निराश होने की नहीं, बल्कि उससे सीखने की जरुरत है। हमें बिना किसी विकर्षण के अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने और प्रतिबद्ध होने की जरूरत है।

कामयाबी के लिए जितना जरुरी लक्ष्य और मेहनत है उतनी ही आवश्यकता धैर्य की भी होती है। रहीम का दोहा सभी ने सुना



है- धीरे-धीरे मना रे धीरे सब कुछ होय। इसका आशय यह नहीं है कि समय पर काम नहीं करना चाहिए, बल्कि काम करते जाए तो सही समय पर आपको उसका फल अवश्य मिलेगा। केवल अपने कार्यक्रम पर काम न करें, अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाएं, अन्य चीजों का प्रभार लें, अपने कौशल में सुधार करें और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सीखते रहें। इसके अलावा, सकारात्मक लोगों के साथ रहें, सकारात्मक आदतें विकसित करें और शरीर और दिमाग के लिए व्यायाम करें। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि कामयाबी के लिए जीवन के सभी तत्वों के संतुलित अनुपात की आवश्यकता होती है। जीवन में कामयाबी का मूल मंत्र परिश्रम, लक्ष्य, धैर्य, आत्मविश्वास से मिलकर बनता है। कामयाबी पाने के लिए यह जरुरी नहीं कि आप सभी विषयों के विशेषज्ञ हो। चरित्र, समय के प्रति पाबंदी, अनुशासित जीवन, मृदु व्यवहार, निरन्तरता आदि व्यक्ति को कामयाबी के अधिक पास लाती है। ये एक मनुष्य जीवन के अस्तित्व के लिए बहुत ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है। यह हमारे लिए विभिन्न अवसरों के द्वार खोलता है।

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि कामयाबी के लिए जीवन के सभी तत्वों के संतुलित अनुपात की आवश्यकता होती है। जीवन में कामयाबी का मूल मंत्र परिश्रम, लक्ष्य, धैर्य, आत्मविश्वास से मिलकर बनता है। कामयाबी ही हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। हम अपने जीवन में कभी भी प्रेरणा या प्रोत्साहन के बिना नहीं जी सकते है। कामयाबी एक ऐसी चीज है जो हमारे जीवन को सार्थक और हमें आशावादी बनाती है, हमारे जीवन को सही राह दिखाती है और उस पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।



सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक

ज्ञान हमेशा झुक कर हासिल किया जाता है

एक शिष्य गुरु के पास आया। शिष्य पंडित था और मशहूर भी। गुरु से भी ज्यादा। सारे शास्त्र उसे कंठस्थ थे। समस्या यह थी कि सभी शास्त्र कंठस्थ होने के बाद भी वह सत्य की खोज नहीं कर सका था। ऐसे में जीवन के अंतिम क्षणों में उसने गुरु की तलाश की। संयोग से गुरु मिल गए। वह उनकी शरण में पहुंचा। गुरु ने पंडित की तरफ देखा और कहा तुम लिख लाओ कि तुम क्या-क्या जानते हो। तुम जो जानते हो फिर उसकी क्या बात करनी है। तुम जो नहीं जानते हो वह तुम्हें बता दूंगा। शिष्य को वापस आने में साल भर लग गया। क्योंकि उसे तो बहुत शास्त्र याद थे। वह सब लिखता ही रहा लिखता ही रहा। कई हजार पृष्ठ भर गए। पोथी लेकर आया। गुरु ने फिर कहा यह बहुत ज्यादा है मैं बूढ़ा हो गया हूं। मेरी मृत्यु करीब है। इतना ना पढ़ सकूंगा तुम इसे संक्षिप्त कर लाओ। सार लिख लाओ। पंडित फिर चला गया। 3 महीने लग गए। अब केवल 100 पृष्ठ हैं गुरु ने कहा, यह भी ज्यादा है इसे और संक्षिप्त कर लाओ। कुछ समय बाद शिष्य लौटा। एक ही पन्ने पर सारा सूत्र लिख लाया था, लेकिन गुरु बिल्कुल मरने के करीब थे। कहा.. तुम्हारे लिए ही रुका हूं तुम्हें समझ कब आएगी? और संक्षिप्त



कर लाओ। शिष्य को होश आया भागा दूसरे कमरे से खाली कागज ले आया, गुरु के हाथ में खाली कागज दिया। गुरु ने कहा अब तुम शिष्य हुए। मुझसे तुम्हारा संबंध बना रहेगा। कोरा कागज लाने का अर्थ हुआ, मुझे कुछ भी पता नहीं, मैं अज्ञानी हूं जो ऐसे भाव रख सके गुरु के पास, वही शिष्य है। गुरु तो ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख स्रोत है उसे अज्ञानी बनकर हासिल किया जा सकता है पंडित बनने से गुरु नहीं मिलते हैं।

अपनी गृहस्थी को कुछ इस तरह बचा लिया करो

अपनी गृहस्थी को कुछ इस तरह बचा लिया करो...!
कभी आंखें दिखा दी.. कभी सर झुका लिया करो...!
आपसी नाराजगी को लंबा चलने ही ना दिया करो...!
वो ना भी हंसे तो... तुम मुस्कुरा दिया करो !
रूठ कर बैठे रहने से घर भला कहां चलते हैं ?..
कभी उन्होंने गुदगुदा दिया....
कभी तुम मना लिया करो ...!
खाने पीने पे विवाद कभी होने ही ना दिया करो...
कभी गर्म खा ली.. कभी बासी से काम चला लिया करो...!
मियां हो या बीबी... महत्त्व में कोई भी कम नहीं I
कभी खुद डॉन बन गए....
तो कभी उन्हें बॉस बना दिया करो ...!
अपनी गृहस्थी को कुछ इस तरह बचा लिया करो।



मोहम्मद ज़फ़र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हम दो हमारे दो, जियो और जीने दो

मेरे पड़ोस में दो भाई रहते थे। बड़े का नाम अब्दुल और छोटे का नाम आदिल था। अब्दुल देह कद-काठी से मजबूत एवं समझदार था। आदिल दुबला-पतला एवं शैतान था। बचपन में माँ-बाप का साया उठने के बाद घर की सारी जिम्मेदारी अब्दुल पर आ गई थी। वह कमाकर अपने छोटे भाई आदिल को पढ़ाने लगा। लेकिन आदिल को पढ़ने में मन नहीं लगता था। वह दिन भर अपने दोस्तों के साथ घूमता रहता था। स्कूल नहीं जाने पर आदिल को अब्दुल से पिटाई भी खानी पड़ती थी। इसके बावजूद भी आदिल सुधरने का नाम नहीं लेता था। आस-पास के लोग आदिल को उसके खराब आचरण के कारण पसन्द नहीं करते थे। लेकिन उसे लगता था कि वह दुबला-पतला एवं कमजोर है, इसलिए उसे लोग पसन्द नहीं करते हैं।

आगे चलकर दोनो ने अपनी शादी कर ली। कुछ साल बाद अब्दुल को एक पुत्री हुई। उसका नाम उसने मनाली रखा। इसके चार साल बाद दूसरी भी पुत्री हुई। जिसका नाम उसने महनूर रखा। इसके बाद उसने नसबन्दी करवा ली। अब्दुल अपने दोनों पुत्रियों के स्वस्थ्य एवं हृष्ट-पुष्ट होने से बहुत खुश था। वहीं दूसरी ओर आदिल समझता था कि जितने ज्यादा लड़के होंगे उतना ज्यादा उसे कमा कर देंगे एवं उसकी सेवा करेंगे। जिससे वह सबसे ज्यादा धनवान एवं शक्तिशाली बन जाएगा। इसी मानसिकता के कारण उसने भ्रूण लिंग परीक्षण कर आठ लड़के पैदा किए। इसका परिणाम यह हुआ कि वह आठों लड़कों का ना ही अच्छी परवरिश कर पाया ना ही अच्छी शिक्षा दे पाया। आठों लड़के को पालने में आदिल की आर्थिक स्थिति बहुत ही जर्जर हो गई। लड़के खाने के लिए दिन-रात एक-दूसरे से लड़ते झगड़ते रहते थे। जिससे दोनों बहनों को पढ़ाई करने में दिक्कत होता था। मनाली एवं महनूर दोनों पढ़ने-लिखने में अच्छी थी। इनके गाँव एवं आस-पास के गाँव मे ना दवा की दुकान थी, ना ही कोई डॉक्टर था। इस कारण गाँव के लोगों को इलाज के लिए दूर शहर में भटकना पड़ता था। अतः दोनों बहनों ने इस परेशानी को दूर करने एवं गाँव के लोगों की ईलाज द्वारा सेवा करने की ठान ली। दूसरी ओर आदिल एवं उसके लड़के पढ़ने नहीं देते थे। आखिरकार आदिल एवं उसके लड़के से तंग होकर अब्दुल अपनी पुत्रियों के भविष्य एवं पढ़ाई के लिए शहर चला गया। हालांकि उसे गाँव में रहना बहुत पसन्द था।

शहर आने के बाद दोनों बहनों ने कड़ी लगन एवं मेहनत से पढ़ाई शुरू कर दी। मनाली ने फार्मेसी का कोर्स कर एक दवा दुकान में काम करना शुरू कर दिया। जिससे अब्दुल पर महनूर को एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई पर लगने वाले खर्च का भार कम हो गया। महनूर के एम.बी. बी.एस. कोर्स पूरा होने पर उन्होनें अपने गाँव जाकर एक क्लीनिक एवं दवा दुकान खोल कर लोगो का ईलाज करना शुरू कर दिया। गाँव में क्लीनिक एवं दवा दुकान खुलने से इनके गाँव के साथ-साथ आस-पास के गाँव के लोग भी बहुत खुश थे। गाँव के लोग प्यार से मनाली को संजीवनी दीदी और महनूर को वैद्य दीदी कहा करते थे।

कोरोना महामारी में दोनों बहनें गाँव के लोगों के लिए कवच जैसा काम किया। वे पहले गाँव के लोगों को कोरोना के प्रति जागरूक किया। इससे बचाव हेतु एहतियाती नियम जैसे- सामाजिक दूरी बनाना, मास्क लगाना, सैनिटाइजर का उपयोग, आयुर्वेद आदि के महत्व के बारे में गाँव के लोगों को बताया। ये सभी नियम कोरोना महामारी से लड़ने में मील का पत्थर साबित हुआ। दोनों बहनें नो प्रॉफिट नो लॉस के सिद्धांत पर दूर-दराज के गाँवों में कोरोना से ग्रसित लोगों का ईलाज करना शुरू कर दिए। उन्होनें अपने आस-पास के गाँव में किसी को भी कोरोना से मरने नहीं दिए।

इसी बीच उन्हें पता चला कि चाचा आदिल के पूरी परिवार को कोरोना हुआ है। यह सुनते ही दोनों बहनें आदिल के घर पहुँच गई। आदिल का हालत बहुत बुरा था, कोई देखने पूछने वाला नहीं था। उनके आठों लड़के खुद कोरोना से जूझ रहे थे। दोनों बहनों को देखकर आदिल की आँखों में पानी भर आई। मानों उन्हें जीने का एक सहारा मिल गया। दोनों बहनों ने ईलाज एवं अपनी सेवा से आदिल और उनके परिवार के सभी सदस्यों को जल्द ठीक कर दिए। आदिल को अपनी गलती का एहसास हो गया। वह अपने बड़े भाई अब्दुल के पास जाकर माफी मांगी।

हमें अब्दुल एवं आदिल के जीवन से सीख लेना चाहिए। दो बच्चें होते हैं, सबसे अच्छे, लड़का या लड़की होना मायने नहीं रखता है, मायने रखता है, अच्छी परवरिश एवं अच्छी शिक्षा। आदिल के आठ लड़के होने के बावजूद भी उसका जिंदगी नर्क जैसा था। लेकिन अब्दुल को दो पुत्री होने पर भी उसका जीवन सुकून, चैन एवं खुशियों से भरा था। अब हमारा देश विश्व में सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश बन गया है। इस परिस्थिति में हम अपने देश को "हम दो हमारे दो जियो और जीने दो" के मूल मंत्र से ही वर्ष 2047 तक विकसित देश बना पाएंगे।



विकास कुमार
लेखापाल

भारतीय महाकाव्य

जिन्होंने सदियों बाद भी अपनी महत्ता नहीं खोई

कहते हैं कालचक्र के अनुसार शब्दों का अर्थ और महत्त्व, दोनों बदल जाते हैं। पर यदि हम श्रीमद्भागवतगीता या महाभारत की बात करें, तो लगता है कि यह रचनाएँ सर्वकालिक सत्य बन गयी हैं। जहाँ गीता के उपदेश आज भी बहुमूल्य और जीवन में उतार लेने लायक हैं, वहीं एक लाख से अधिक संस्कृत पदों में विभक्त महाभारत इस बात का प्रतीक है कि हजारों साल पहले हमारी संस्कृति बहुत विकसित थी । भारत भूमि पर लिखी कुछ अविस्मरणीय महाकाव्यों का वर्णन इस लेख में किया गया है –

1. महाभारत
रचयिता – वेद व्यास, लेखन कार्य – श्री गणेश

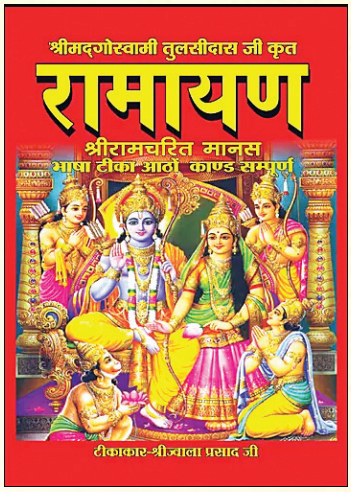


महाभारत महाकाव्य के वर्तमान संस्करण में 18 पर्व और एक लाख से अधिक श्लोक लिखित हैं। आज तक लिखी गयी रचनाओं में यह सबसे बड़ा काव्य है। कौरवों और पांडवों के बीच हुए युद्ध की गाथा कहता यह संस्कृत पद्यसंग्रह 'इतिहास' की श्रेणी में आता है। महाभारत के भीष्म पर्व के 700 श्लोक श्रीमद्भगवतगीता के रूप में पढ़े जाते हैं।

संस्कृत में लिखित इस महाकाव्य का लगभग हर भारतीय भाषा में अनुवाद किया जा चुका है। इसके अलावा, महाभारत को अंग्रेज़ी और कई अन्य विदेशी भाषाओं में भी अनुवादित किया गया है। भारत में आज भी इस ग्रन्थ से ली गयी अनेकों कथाएँ कहानियों के रूप में सुनाई जाती है। विदित रहे, धरम ग्रंथों को पढ़ने के शौकीन मुग़ल शासक अकबर ने पर्शियन में इसका अनुवाद कराया था।

2. रामायण
रचयिता – वाल्मीकि

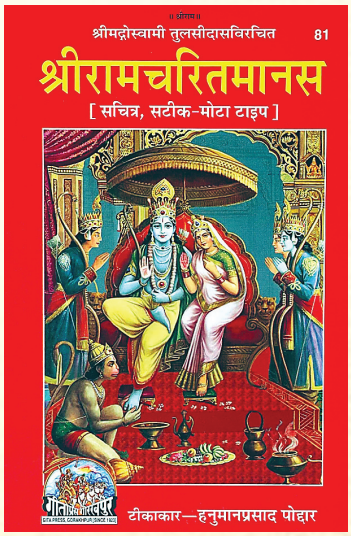
रामायण का अर्थ है 'राम की कथा'। अपने नाम के अनुसार, रामायण अयोध्या नरेश श्री राम की पूरी जीवन कथा और श्रीलंका नरेश रावण के साथ हुई उनकी लड़ाई का बहुत विस्तार में वर्णन करती है । इसमें 24 हजार चौपाई हैं जो कि 7 कांडों में विभक्त है । रामायण के सभी पात्र



भारत, श्रीलंका, कम्बोडिया, नेपाल, मलेशिया और आस-पास के देशों में आज तक पूजे जाते हैं। श्रीराम सेतु के असली में होने की पुष्टि से रामायण के सत्य कथा पर आधारित होने के संकेत मिलते हैं। काव्य में वर्णित नियमों और मानव जीवन के मूल्यों का महत्व सर्वकालिक है ।

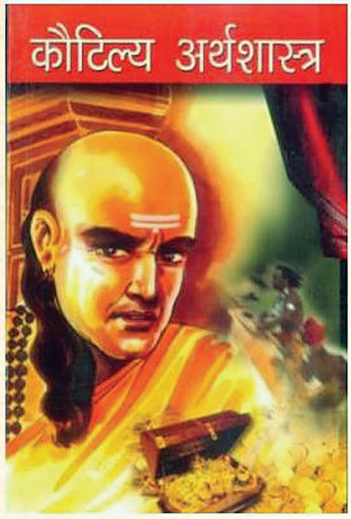
ऐसा माना जाता है कि रामायण के तीन सौ से अधिक संस्करण मौजूद हैं। वाल्मीकि रामायण, जो कि इस महाकाव्य का मूलभूल संस्कृत संस्करण है, के अलावा इसके संस्कृत, तमिल, तेलुगु, अवधी, मराठी, उड़िया, गुजराती, कश्मीरी, कन्नड़, इत्यादि संस्करण आसानी से देखे जा सकते हैं। जावा, थाई, बर्मा, श्रीलंका, जापान, कम्बोडिया, मलेशिया आदि देशों में भी इसके अनुवाद लोगों द्वारा पढ़े जाते हैं।

3. श्री रामचरितमानस
रचयिता – तुलसीदास



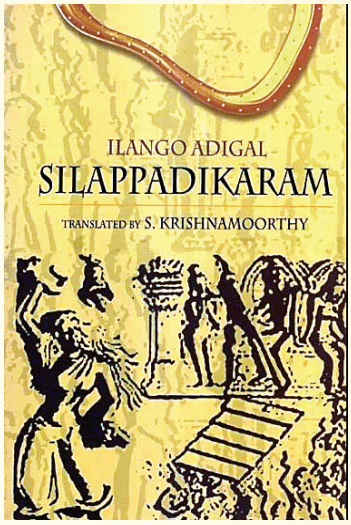
तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस का भारतीय धार्मिक ग्रंथों में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने इस रामायण को जनभाषा अवधी में लिखकर इसे अमर काव्य बना दिया। अवधी भाषा हिंदी से काफी मिलती-जुलती है । 15वीं सदी की यह रचना छंदों और चौपाइयों के रूप में लिखी गई है । इसे वाल्मीकि -लिखित रामायण का सरल और गीतमय अनुवाद भी मान सकते हैं। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने वेद, पुराण सम्मत सारे धर्म ग्रन्थों का सार डाल दिया है। इसकी चौपाइयाँ आज भी जस-की-तस गाई जाती है। हालाँकि, इसके हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद भी है।

4. कौटिल्य का अर्थशास्त्र
रचयिता – आचार्य चाणक्य

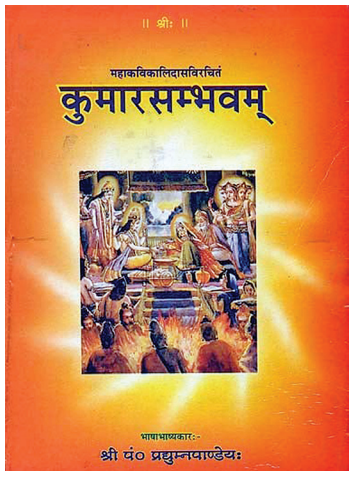


आचार्य चाणक्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' में राजनीति, सरकारों का गठन, शासन के नियम, समाजशास्त्र, नागरिक शास्त्र, युद्ध, अर्थशास्त्र, कृषि, खुदाई, पशुपालन, चिकित्सा और ऐसे ही अनेक ज़रूरी विषयों पर गूढ़ जानकारी दी गयी है। चाणक्य द्वारा लगभग 300 ईसा पूर्व (2300 वर्ष पहले) लिखे गए इस संस्कृत ग्रन्थ को आज भी राजनीतिक लिहाज से महत्वपूर्ण माना जाता है और अर्थशास्त्री विद्वान् अभी भी इसे पढ़ते हैं। इसके कई हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद भी मौजूद हैं।

5. शिलप्पादिकारम
रचयिता – इलांगो अडिगल



शिलप्पादिकारम तमिल में लिखे गए 5 महाकाव्यों में से एक है। यह संगम साहित्य का हिस्सा है। 'शिलप्पादिकारम' का अर्थ होता है 'एक पायल की कथा'। काव्य तीन अध्यायों और 5270 गीतबद्ध पंक्तियों में लिखा गया है । इसमें मातृसत्तात्मक समाज के साक्ष्य हैं, जो बाद में धीरे-धीरे पितृसत्तात्मक समाज में परिवर्तित हुआ होगा। कण्णगी इस काव्य का मुख्य पात्र है, जो अपने राज्य की गलती से हुई अपने पति की मृत्यु के लिए प्रतिशोध का मार्ग चुनती है। तमिल राज्यों में आज भी इस ग्रन्थ का ख़ास स्थान है।



6. कुमारसम्भवम्
रचयिता – कालिदास

यह कवि कालिदास द्वारा संस्कृत में लिखा गया महाकाव्य है, जो शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिकेय के जन्म के बारे में है । कुमारसम्भवम् में कुल 17 सर्ग हैं । कुल मिलाकर, यह पार्वती के अनन्य रूपों का चित्रण, ब्रह्मचारी शिव का वर्णन, शिव-पार्वती विवाह आदि की सुन्दर गाथा है। कालिदास के जन्म के समय पर कोई निश्चित मत नहीं होने के कारण इस कृति के लिखे जाने का सही समय पता करना भी कठिन है। इसका हिंदी, अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया है किंतु इसका तमिल संस्करण अत्यंत प्रभावशाली है।



वाय.जवाहर
पर्यवेक्षक

भारत @75

स्वतंत्रता के 75 साल बाद भारत ने अपने 75वें स्वतंत्रता दिवस को भारत @75 अभियान के रूप में ध्वजारोहण किया। यह एक सफलता और विकास की यात्रा थी, जिसमें देश ने अनेक चुनौतियों का सामना किया और अनेक मुद्दों का समाधान किया।

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भारत अभियान ने नए भारत के नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। इस अभियान के तहत शौचालय निर्माण, गंदगी मुक्त वातावरण, जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के लिए कई योजनाएं शुरू की गई। यह अभियान स्वच्छ भारत की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम रहा है और भविष्य की पीढ़ियों को एक स्वच्छ और हरित भारत का सपना देखने का मौका दिया।

आर्थिक विकास और योजनाएं

भारत @75 अभियान के तहत वित्तीय समृद्धि और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में योजनाएं शुरू की गईं जो देश के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद कर रही हैं। उद्यमिता को प्रोत्साहित करने, स्टार्टअप्स को समर्थन करने, बैंकिंग सेवाओं को अधिक सुलभ बनाने और सरल कर विधि के माध्यम से कर समर्थन बढ़ाने के लिए विभिन्न कदम उठाए गए हैं।

शिक्षा और उच्च शिक्षा

भारत @75 अभियान ने शिक्षा और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकास को प्रोत्साहित किया। शिक्षा में समानता और गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की गई। सरकार ने अनुसंधान और अध्ययन को भी महत्व दिया और विभिन्न शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों का समर्थन किया।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य अभियान

भारत @75 अभियान के तहत राष्ट्रीय स्वास्थ्य अभियान शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य देश में स्वास्थ्य सेवाओं के पहुंच को बेहतर बनाना था। इस अभियान के माध्यम से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया गया, स्वास्थ्य बीमा योजनाओं का समर्थन किया गया और जन-साधारण को जागरूक किया गया।

नागरिक संरक्षण और सुरक्षा

भारत @75 अभियान के तहत नागरिक संरक्षण और सुरक्षा के क्षेत्र में विकास किया गया। पुलिस और सुरक्षा बलों को तकनीकी साधनों के माध्यम से सुसज्जित किया गया और अपराध रोकथाम के लिए नई योजनाएं शुरू की गई। भारत आतंकवाद, नक्सलवाद और अन्य सुरक्षा समस्याओं के साथ लड़ने के लिए तैयार हुआ।

पर्यावरण और जल संरक्षण

भारत @75 अभियान ने पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण को प्राथमिकता दी। इसके तहत जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की गईं, पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित किया गया और जलवायु परिवर्तन के साथ निपटने के लिए कदम उठाए गए।

भाषा और संस्कृति

भारत @75 अभियान ने भारतीय संस्कृति, भाषा और राजभाषा के प्रोत्साहन को बढ़ावा दिया। विभिन्न संस्कृतियों के प्रति जागरूकता को बढ़ाया गया, राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया गया और भारतीय भाषाओं को समर्थित किया गया।

महिला उत्थान और समानता

भारत @75 अभियान ने महिला उत्थान और समानता के प्रति भारतीय समाज को जागरूक किया। महिलाओं के शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और समान अधिकारों को प्रोत्साहित किया गया और उन्हें समाज में सम्मानपूर्वक जीने का मौका दिया गया।

इंफ्रास्ट्रक्चर और टेक्नोलॉजी

भारत @75 अभियान ने इंफ्रास्ट्रक्चर और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भारत को मजबूत बनाया। बेहतर सड़क, रेलवे, हवाई जहाज और डिजिटल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए कई योजनाएं शुरू की गई।

संबंध-बन्धन

भारत @75 अभियान ने देश के संबंध-बन्धन को मजबूत किया। भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ मित्रता और सहयोग को बढ़ावा दिया, विदेशी निवेशकों को समर्थन दिया और विदेशी संबंधों को मजबूत बनाया।

सामाजिक न्याय

भारत @75 अभियान ने सामाजिक न्याय और समाज में समानता को बढ़ावा दिया। गरीबी के खिलाफ लड़ाई में भागीदारी को बढ़ावा दिया गया, न्यूनतम आय वाले लोगों को समर्थन दिया गया और समाज के वंचित वर्गों को समर्थन और मदद मिली।

निष्कर्ष

भारत @75 अभियान एक सफल पहल थी जो भारत को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए देश के सभी क्षेत्रों में कदम उठाते रहे। इस अभियान ने स्वच्छता, आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, समाजिक न्याय, भाषा और संस्कृति को समृद्धि देने के लिए कई उपाय उपलब्ध कराए। इस नए युग में भारत एक मजबूत, सशक्त और समृद्ध राष्ट्र के रूप में विकसित हो रहा है जिसकी सपनों में बसे हर नागरिक को गर्व होता है। भारत @75 अभियान की सफलता से हमें आगे बढ़कर भारत के विकास और समृद्धि के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता है ताकि हम देश को एक विकसित और प्रगतिशील दिशा में आगे बढ़ा सकें।



उज्जवल कुमार
लेखापरीक्षक

खामोश टेबल



टेबल किस तरह एक कहानी का प्रसंग बन जाता है,
आते ही चाय और बिस्कुट टेबल पर रख दिया जाता है ।
वैसे टेबल, रखा तो बीचों-बीच जाता है,
पर फिर भी कम्बख्त, बिना चाय बिस्कुट नजर ही नहीं आता है ।
गर आ जाए कोई मेहमान घर पर, उफ़, तो ये टेबल कितना काम आता है
बेचारा चाय बिस्किट ही नहीं गरमा-गरम नाश्ता भी अपने ऊपर रखवाता है।
स्वादिष्ट पकवान तो सिर्फ मेहमान ही चख पता है,
बेचारा टेबल, सिर्फ खुशबू से ही काम चलाता है।
बारी-बारी से पकवान टेबल पर लगाया जाता है,
जगह ना मिलने पर फिर टेबल को ही सुनाया जाता है।
भीड़ में तो तारीफ सिर्फ पकवानों की ही होती है,
और टेबल बेचारा खामोश ही रह जाता है।
पापा की चाय अखबार, माँ की डांट फटकार का ये गवाह बन जाता है,
बच्चों के खिलौने रख कर मन ही मन खुश हो जाता है।
उफ्फ, ना पटको गिलास, मत रखो पांव कहना तो वो यही चाहता है,
पर सब लाते ही इसे इसलिए हैं क्योंकि यह खामोशी से सब सह जाता है।

बेटियाँ



बेटियाँ, जो एक अनमोल धरोहर सी कहलाती,
आज यही धरोहर दिल को नहीं है भाती ।
कैसा भाग्य हैं वो अपनी लाती,
ना मायका कहता अपना उसे, ना ससुराल ही अपनाती ।
कहने को बेटियाँ, संसार हैं बसाती,
पर जीवन भर खुद का बसेरा न ढूंढ पाती ।
कोई कहता लक्ष्मी है, कोई कहता जननी है,
पर हक, हक ये दुनिया बराबरी का भी नहीं दे पाती ।
ख्वाहिशों से ख़ूबसूरत होती है बेटियां,
आज बेटी नहीं, ख्वाहिशें सी दफ़न नजर है आती ।

अनिता वर्मा
पत्नी- श्री रवि प्रकाश वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

'हम बदलेंगे, युग बदलेगा'

व्यक्तित्व निर्माण सतत् प्रक्रिया है। आप जीवन के किसी भी दौर में हों अपने को कभी संपूर्ण नहीं पाते। इसके लिए हमारे अपने संस्कार और परवरिश जिम्मेदार है। अच्छी परवरिश से अच्छे संस्कार मिलते हैं। वही संस्कार हम सब को हर पल हमारी कमियों, गलतियों और अधूरी ख्वाहिशों के प्रति आगाह करते हैं। अपने आप के प्रति संतुष्ट नहीं होने देते। क्योंकि संतुष्ट होने का मतलब है ठहराव। संतुष्ट होते ही अपने परिष्करण की मुहिम आप तत्काल रोक देंगे। ठहराव एक मायने में मृत्यु का भी सूचक है। पुरानी कहावत है ठहरा पानी सड़ जाता है। ठहराव भले ही मन में आये या तन में जिसका क्षय होना अवश्यंभावी है। इसलिए जीवन में ठिठक जाने से बचे। लगातार कुछ नया सोचते और करते रहें। कवि, गीतकार, कलाकार, पत्रकार इसीलिए हमेशा नये विचारों से लबरेज रहते हैं क्योंकि वह ठहरते नहीं। जीवन में लगातार अपने कर्म का पालन करना, रचना धर्मिता से बंधना ही व्यक्तित्व निर्माण है। इसकी तुलना कृषक द्वारा की जाने वाली खेती से की जा सकती है। किसान को जुताई, बुआई, सिंचाई और विक्रय की चतुर्विधि प्रक्रिया सम्पन्न करने के बाद अपने परिश्रम का लाभ मिलता है। उसी तरह व्यक्तित्व निर्माण को भी इस प्रकार जीवन साधना की चतुर्विधि प्रक्रिया सम्पन्न करनी पड़ती है। यह है आत्म-चिंतन, आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास। मनन और चिंतन को इन चारों चरणों का अविच्छिन्न अंग माना गया है। इन चतुर्विधि साधनों को एक-एक करके नहीं समन्वित रूप में ही अपनाया जा सकता है। आत्म-निर्माण यानी जो सत्प्रवृत्तियां अभी अपने स्वभाव में नहीं है जिनका योजनाबद्ध विकास करना, दुर्गुणों को निरस्त कर देना ठीक है। लेकिन व्यक्त्वि को उज्जवल बनाने के लिए, आत्म-विकास की अगली सीढ़ी चढ़ने के लिए सद्गुणों की सम्पदा एकत्रित करना भी अत्यंत आवश्यक है।

बर्तन का छेद बंद कर देना काफी नहीं है जिस उद्देश्य के लिए बर्तन खरीदा गया है वह पूरा करना चाहिए। खेत में कंटीली झांडियां, पुरानी फसल की जड़ें उखाड़ दी गई, पर इसी से खेत का उद्देश्य पूरा नहीं हो



गया। शेष आधी बात तब बनेगी जब उस भूमि को जोत-बो कर उस पर फसल लहलहाने का प्रयास किया जाये। व्यक्तित्व का विकास उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तव्य अपनाने पर निर्भर है। उस साधना में चंचल मन और अस्थिर बुद्धि से काम नहीं चलता, इसमें तो संकल्पनिष्ठा, धैर्यवान और सत्त प्रयत्नशील रहने वाले व्यक्ति ही सफल हो सकते हैं। अपना लक्ष्य यदि आदर्श मनुष्य बनना है तो इसके लिए व्यक्तित्व में आदर्श गुणों और उत्कृष्ट विशेषताओं का समावेश करना ही पड़ेगा। संसार के इतिहास में जिन महामानवों का उज्जवल चरित्र जगमगा रहा है, वे आत्मविश्वास के इसी मार्ग को अपनाकर महानता के उच्च शिखर तक पहुंचे हैं। चारों दिशाओं की तरह आत्मिक उत्कर्ष के चार आधार यहीं हैं। इन्हें साधे बिना न तो व्यक्तित्व सुधरेगा और न ही हमारी मनोकामनाएं, महत्वकांछायें पूर्ण होगी। तब फिर हाथ क्या लगेगा? निराशा जाहिर है जीवन में और कुछ मिले न मिले मगर निराशा कोई नहीं पाना चाहता। इसलिए अपने आप को बदलने का संकल्प लें।

"हम बदलेंगे युग बदलेगा।"



कुंदन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

G20 सम्मेलन

समृद्ध भविष्य के लिए वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना



G20 सम्मेलन वैश्विक अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण देशों की वार्षिक सभा है, जो महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों का सामना करती है और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करती है। G20 में 19 देशों और यूरोपीय संघ की सदस्यता होती है और यह वैश्विक आर्थिक नीतियों को आकार देने, भौगोलिक चिंताओं का समाधान करने और स्थायी विकास को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

G20 सम्मेलन 1999 में एशियाई आर्थिक संकट का सामना करने के उत्तरदायी रूप में प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में, यह वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की एक अनौपचारिक बैठक थी। हालांकि, विस्तृत सहयोग की आवश्यकता को महसूस करते हुए, 2008 में G20 को राष्ट्रपति और सरकार के स्तर तक उच्चतम पहुंच दिया गया। तब से अब तक, इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास, वित्तीय स्थिरता और स्थायी विकास को प्रोत्साहित करना रहा है।

G20 सम्मेलन का एक मुख्य कार्य वैश्विक आर्थिक स्थिरता को सुधारना है। सदस्य देशों ने व्यापारिक असंतुलन, मुद्रा में परिवर्तन और वित्तीय विनियमन जैसे मुद्दों का सामना करने के लिए मिलकर काम किया है। G20 के माध्यम से देश समरूपी आर्थिक नीतियों को समन्वयित करने, वैश्विक वित्तीय प्रणाली को मजबूत करने और आर्थिक जोखिमों को कम करने के लिए सहयोग करते हैं। सम्मेलन का उद्देश्य समावेशी विकास, रोजगार का सृजन और गरीबी को कम करने के लिए रणनीतियों का विकास करना होता है। दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग को बढ़ाने के माध्यम से, G20 एक स्थिर और प्रतिरक्षाशील अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संरचना के निर्माण में योगदान देता है।

सम्मेलन विश्वव्यापी चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो राष्ट्रीय सीमाओं से परे होती हैं। जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद, प्रवासन और गरीबी इस तरह की जटिल समस्याएं हैं जिनके लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता होती है। सम्मेलन के माध्यम से, नेताओं ने सकारात्मक वार्ता किया, अच्छी प्रथाओं को साझा किया और इन चुनौतियों के लिए समन्वयित दृष्टिकोण विकसित किया है। उदाहरण के तौर पर, G20 ने ग्लोबल जलवायु एजेंडा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जबकि सदस्य देश पेरिस समझौते के क्रियान्वयन की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। इसके अलावा, G20 ने कोविड-19 महामारी के दौरान वैक्सीन वितरण और स्वास्थ्य संरचना विकास में सहयोग करके वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा को मजबूती दी है।

सुव्यवस्थित विकास G20 की प्राथमिकता है। आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन की महत्वपूर्णता को मान्यता देते हुए, सम्मेलन नीतियों और पहलों को प्रोत्साहित करता है जो इन तीन स्तंभों को संतुलित करते हैं। G20 सुविधा निवेश करने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और समावेशी और सुस्थित आर्थिक विकास को प्रमोट करने की महत्ता पर बल देता है। इसके अलावा, सम्मेलन महिला समानता, मानवाधिकार और समावेशी सामाजिक नीतियों की महत्ता को संजोना है। संयुक्त राष्ट्र के स्थायी विकास लक्ष्यों के प्रति G20 का सक्रिय योगदान होता है, जिसमें गरीबी को समाप्त करना, सामान्य शिक्षा सुनिश्चित करना, स्वच्छ ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना और जलवायु परिवर्तन का सामना करना शामिल है।



G20 सम्मेलन वैश्विक सहयोग को प्रोत्साहित करने और अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों का सामना करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है। अपनी विविध सदस्यता और समावेशी दृष्टिकोण के साथ, G20 दुनियाभर में आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आर्थिक स्थिरता को प्रोत्साहित करके, वैश्विक चुनौतियों का सामना करके और सुव्यवस्थित विकास को प्रोत्साहित करके, G20 सभी राष्ट्रों के लिए एक समृद्ध विश्व की नींव रखता है।



पंकज कुमार
लेखापरीक्षक

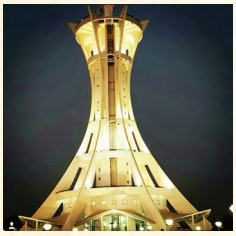
छत्तीसगढ़ के अपरिचित पर्यटन स्थल

छत्तीसगढ़ भारत का 10 वां सबसे बड़ा क्षेत्रफल वाला राज्य है, जो भारत के प्रमुख राज्यों में से एक है। जिसे भारत का 'हृदय स्थल' के नाम से भी जाना जाता है। 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश से अलग होकर जिसका निर्माण हुआ है। छत्तीसगढ़ का अर्थ है एक ऐसा महान कृषि प्रधान राज्य से है, जहाँ बहुत ही भोले भाले व मेहनती लोग निवास करते हैं ।

धान की अधिक पैदावार होने के कारण इस राज्य को "धान का कटोरा" कहा जाता है, जिसका प्राचीन नाम दक्षिण कौसल है। जहाँ आधा से ज्यादा आबादी आदिवासी लोग निवास करते है। यह प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है, साथ ही एक विशाल काय घने जंगलों वाला राज्य है, जो चारों ओर से ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है।

छत्तीसगढ़ के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थलों का वर्णन निम्नानुसार है :-

गिरौदपुरी



गिरौदपुरी सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरुघासीदासजी की जन्म स्थली है जो बलौदाबाजार जिले में स्थित है। छत्तीसगढ़ में सतनाम पंथियों के लिये यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है, जहाँ कुतुबमीनार से भी ऊँचे जैतखाम का निर्माण किया गया है। यहां पर फाल्गुन पंचमी के दिवस विशाल मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें देश-विदेश के लोग भी सम्मिलित होते हैं।

चिरमिरी



चिरमिरी छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले का एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। चिरिमिरी या चिरमिरी को 'छत्तीसगढ़ का जन्नत/स्वर्ग' कहा जाता है। हरे-भरे हरियाली, पहाड़ और नदियाँ इसे किसी को भी सुकून देने के लिए एक आदर्श स्थल बनाते हैं। चिरमिरी समुद्र तल से 579 मीटर की ऊँचाई पर हसदेव नदी के किनारे पर स्थित है।

राजिम

छत्तीसगढ़ की प्रयाग नगरी के नाम से प्रसिद्ध राजिम नगरी महानदी, पैरी नदी और सोंढूर नदी के त्रिवेणी संगम पर गरियाबंद जिले में स्थित



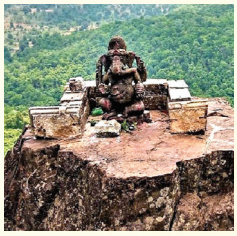
है। यह छत्तीसगढ़ में सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। यह पावन नगरी भारत के पांचवें धाम के रूप में प्रसिद्ध है। यहां पर माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक भव्य मेले का आयोजन होता है जिसे छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा पांचवें कुंभ मेले का दर्जा दिया गया है।

मल्हार



छत्तीसगढ़ की सबसे पुरानी बस्ती मल्हार (बिलासपुर) एक प्रमुख पुरातात्विक स्थल है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की "राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल और अवशेष" की सूची में यह शहर अपनी शानदार मूर्तियों और ऐतिहासिक सुंदरता के कारण शामिल है। मल्हार में खोजी गई हड्डियों में से केवल कुछ ही कल्चुरी युग की और 1000वीं शताब्दी ईसा पूर्व की बताई जा सकती हैं।

ढोलकल गणेश



ढोलकल गणेश छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में है। यह दंतेवाड़ा से 18 किमी दूर, फरसपाल गाँव के पास बैलाडिला पहाड़ी में लगभग 3000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है । यह छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल में से एक है, जिसे रहस्यमय पर्यटन स्थल माना जाता है क्योंकि इतने ऊँचे पहाड़ी पर किसने इस गणेश की मूर्ति को रखा और क्यों रखा अभी तक किसी को पता नहीं है। विशेषज्ञों का मानना है कि भगवान गणेश की यह मूर्ति लगभग 1000 साल पुरानी है और इस मूर्ति को 9 वीं और 11 वीं शताब्दी के बीच नागवंशी शासकों के शासनकाल के दौरान बनाई गई थी।

डोंगरगढ़



डोंगरगढ़ को छत्तीसगढ़ का शीर्ष तीर्थस्थल माना जाता है और यह एक शीर्ष पर्यटक आकर्षण भी है। माँ बम्लेश्वरी के नाम से यहाँ एक प्रसिद्ध मंदिर है जो लगभग 1,600 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। दशहरा के

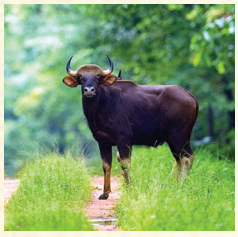
दौरान और चैत्र (रामनवमी के दौरान) नवरात्रि के समय मंदिर में हजारों भक्तों की भीड़ यहां आती है।

भूतेश्वर शिवलिंग



छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के मरौदा गांव में एक मनमोहक नजारा देखने को मिल सकता है। इस गांव का विशाल शिवलिंग, जिसके बारे में कुछ लोग दुनिया में सबसे बड़ा होने का दावा करते हैं । इससे भी अधिक दिलचस्प तथ्य यह है कि शिवलिंग प्रति वर्ष 6 से 8 इंच तक फैलता है। 18 फीट लंबा और 20 फीट चौड़ा, इसका सामना करना एक शानदार दृश्य है। श्रावण के पवित्र महीने के दौरान, देश भर से कई तीर्थयात्री इस स्थान पर आते हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि स्थानीय शिवलिंग पर केवल एक लोटा जल चढ़ाने से ही सभी समस्याओं से मुक्ति मिल जाती है।

बारनवापारा वन्यजीव अभ्यारण्य



छत्तीसगढ़ में घूमने और छुट्टियों का आनंद लेने के लिए कई बेहतरीन जगहें हैं, लेकिन बारनवापारा वन्यजीव अभ्यारण्य एक रोमांचक प्राकृतिक स्थल है । 1976 में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत इस वन्यजीव अभयारण्य का निर्माण या स्थापना की गई और तब से लेकर आज तक इस स्थान को काफी लोकप्रियता मिली है। यह वन्यजीव अभयारण्य दूर-दूर तक फैला हुआ है और लगभग 245 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में स्थित है। महानदी की सहायक नदियों में से एक, जोंक नदी भी इस अभयारण्य से होकर बहती है। यह रायपुर शहर से 100 किमी दूर महासमुंद जिले में स्थित है ।

लक्ष्मण मंदिर सिरपुर



लक्ष्मण मंदिर प्राचीन स्मारक है जो 'गहरे प्रेम' का एक अनूठा उदाहरण है। यह पति के प्रति प्यार का प्रतीक है, नागर शैली का यह मंदिर रानी वासाटा देवी के द्वारा राजा हर्षगुप्त की स्मृति में महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासनकाल के दौरान 735-40 ईस्वी में बनवाया गया था। प्यार का यह अनोखा स्मारक ताजमहल से भी पुराना है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, लेकिन मंदिर के अंदर शेषनाग में लक्ष्मणजी की मूर्ति है, इसीलिए इसे लक्ष्मण मंदिर कहा जाता है।

कुनकुरी जशपुर



कुनकुरी जशपुर जिले में स्थित ईसाइयों का सबसे बड़ा धार्मिक स्थल है। जहां पर स्थित चर्च को एशिया का दूसरा सबसे बड़ा कैथोलिक चर्च होने का गौरव प्राप्त है। प्रति वर्ष क्रिसमस के समय यहां पर भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। कुनकुरी के इस चर्च में करीब 10 हजार लोग एक साथ प्रार्थना कर सकते हैं। चर्च में 7 छतें हैं, जो एक ही बिम पर टिकी हुई है, जिसमें भगवान का संदेश उल्लेखित है।

जंगल सफारी



जंगल सफारी नया रायपुर क्षेत्र के माण्डवा ग्राम में स्थित है जो लगभग 203 हेक्टेयर पर विस्तृत एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा मानव निर्मित जंगल सफारी है। यहां पर जंगली जानवरों के संरक्षण, संवर्धन एवं पर्यावरणीय विविधता के संरक्षण हेतु आवश्यक उपाय किये गये हैं। जो वन्य प्राणियों के प्रति आम जनता में और विशेष रूप से नई पीढ़ी में आकर्षण और जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

दंतेश्वरी मंदिर



दंतेश्वरी मंदिर धार्मिक विश्वास एवं श्रद्धा की प्रतीक दंतेश्वरी देवी का मंदिर, शंकिनी एवं डंकिनी नदी के संगम बिन्दु पर दंतेवाड़ा जिले में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 14वीं सदी के प्रथमार्द्ध में काकतीयवंशीय शासक अन्नमदेव के द्वारा करवाया गया था। देवी के नाम पर ही ग्राम का नाम दंतेवाड़ा रखा गया। इस मंदिर के गर्भगृह में मां दंतेश्वरी देवी की प्रतिमा है यह मंदिर काष्ट (लकड़ी) से निर्मित है। यहां पर प्रतिवर्ष नवरात्रि के समय भव्य मेले का आयोजन किया जाता है।

खैरागढ़ इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय



खैरागढ़ इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में स्थित है। इसे छत्तीसगढ़ के प्रथम एवं एकमात्र संगीत विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है। इसकी स्थापना राजा बिरेन्द्र बहादुर सिंह तथा रानी पद्मावती द्वारा अपनी पुत्री इंदिरा के नाम पर 14 अक्टूबर 1956 को की गई थी। यह विश्वविद्यालय ललितकला के क्षेत्र में स्थापित किया गया अद्वितीय च सर्वोत्तम प्रयास है। विदेशी सैलानी यहाँ संगीत सीखने के लिए आते हैं जो इसकी प्रसिद्धी का द्योतक है।

कुटुम्बसर गुफा



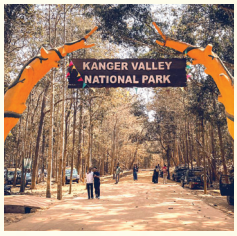
यह गुफा कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्र (बस्तर) में स्थित है। इस गुफा के खोजकर्ता कन्दराशास्त्री एवं भूगोलविद डॉ. शंकर तिवारी जी हैं जिन्होंने 3 दशक पूर्व इस स्थल को खोजकर कई रहस्यों को उजागर किया था। यह गुफा वर्षा काल के दौरान बंद रहती है तथा भ्रमण हेतु नवम्बर से लेकर मई तक खुली रहती है।

पुरखौती मुक्तांगन



यह लगभग 200 एकड़ जमीन पर फैली एक विशाल उद्यान है जो रायपुर शहर से करीब 20 किमी की दूरी परग्राम-उपरवारा नया रायपुर में स्थित है। जिसकी उद्घाटन नवंबर 2006 को भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा किया गया यह आनंदित उद्यान छत्तीसगढ़ की समृद्ध संस्कृति की एक झलक देता है।

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान



छत्तीसगढ़ के सबसे घने राष्ट्रीय उद्यानों में से एक के रूप में जाना जाने वाला, यहाँ कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान एक समृद्ध जैव विविधता, प्राकृतिक झरने, ऊँचे पहाड़ , गहरी घाटियाँ, विशाल पेड़ और मौसमी जंगली फूलों एवं वन्यजीवन के लिए मशहूर है। यह छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के जगदलपुर में स्थित है।



चैतुरगढ़

कोरबा शहर से करीब 70 किलोमीटर दूर स्थित चैतुरगढ़ पाली से 25 किलोमीटर पहाड़ी पर स्थित है, यह राजा पृथ्वीदेव प्रथम द्वारा बनाया गया था। पहाड़ी के शीर्ष पर 5 वर्ग मीटर का एक समतल क्षेत्र है, जहां पांच तालाब हैं इनमें से तीन तालाब में पानी भरा है।यहां प्रसिद्ध महिषासुर मर्दिनी मंदिर स्थित है। मंदिर से 3 किमी दूर शंकर की गुफा स्थित है। यह गुफा जो एक सुरंग की तरह है, 25 फीट लंबा है। चैतुरगढ़ की पहाड़ी अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं और यह रोमांचक एहसाह का अनुभव प्रदान करती है। कई प्रकार के जंगली जानवर और पक्षी यहां पाए जाते हैं।



प्रेम प्रकाश यादव
डी. ई. ओ.

बहाना (एक सफेद झूठ)

जिन्दगी में अनेक पल ऐसे आते हैं, जब हमें काम चलाने के लिए अपनी अक्ल लगाकर उस समय को टालना पड़ता है। उस समय सत्य-असत्य, सच-झूठ इसका विचार करने का समय हमारे पास नहीं होता है। हमेशा सच बोलना है ! इस जिद के साथ हम जिन्दगी नहीं बिता सकते। प्याला भर दूध और दो रोटी में हम सारी जिन्दगी नहीं निकाल सकते हैं। मजबूरी वाले सत्य को हमने अपने सुविचारिक अक्ल लगा के सत्य बनाये हुए शब्द को 'बहाना' नाम देना ही उचित होगा।

जीवन में पहला बहाना साधारण "देर क्यों हुई .." इस बात से शुरू होता है। फिर स्कूल-कॉलेज बाद में कार्यालय में आने वाले प्रसंग से आदत होने पर बहाने बनाने में प्रवीणता हासिल हो जाती है। छोटे छोटे बहाने तक तो ठीक है, इसका किसी पे इतना प्रभाव नहीं पड़ता पर बात हद से बाहर हो जाएँ तो उसका फर्क तो पड़ता है। किसी को हमारी सच्ची बातें झूठ ना लगे इसके लिए "मां कसम", "भगवान कसम", "आप बिलीव नहीं करेंगे", "मैं कभी झूठ नहीं बोलता हूँ" ऐसे शब्दों का बार-बार हवाला दिया जाता है।

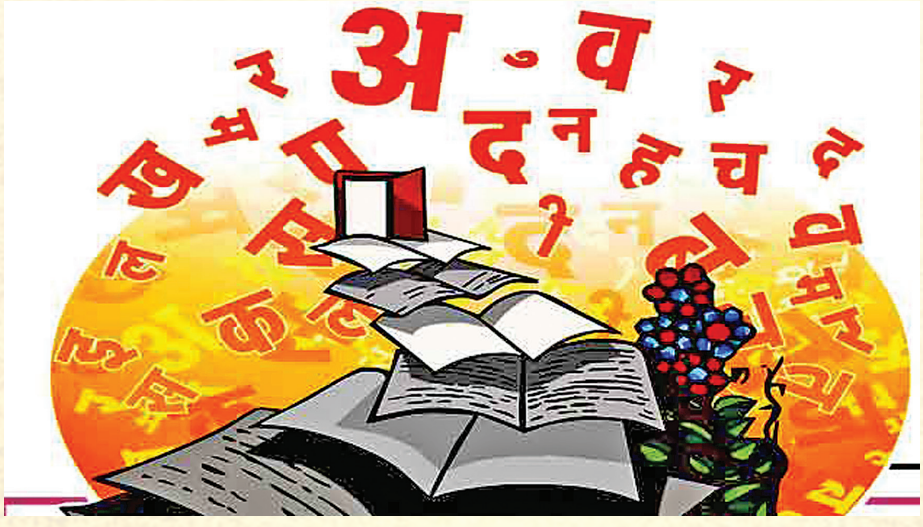
हास्य निर्मिती में अतिश्योक्ति ! यह गुण माप लिया जाए तो वह एक तरीके का सफेद झूठ ही है। उसके बगैर हास्य निर्मिती की कल्पना ही नहीं की जा सकती। बहाना बाद में झूठ में रूपांतरित हो जाता है और बाद में काल्पनिक, ऐतिहासिक और ऐसे ही सफर करते-करते ये कब पौराणिक हो जाता है, इसका पता ही नहीं चल पाता।

अक्षर...

जब लड़खड़ाते हैं हाथ,
कुछ भी लिखते लिखते....
आखें निहारने लगती है
उन्ही लिखे अक्षरों को.....
अक्षरों के मात्राओं की,
घुमावदार सी रेखाएं....
जैसे ह्रदय में विचरण
करती रेखाकृति भावनाएं....

अनजाने में लिखा गया,
किसी किसी का दुःख....
भावनाओं को जोड़ेगा,
छोटा सा रेखाकृति सुख
वे अक्षर थे ही नहीं,
वे तो बीती स्मृति थी....
अचानक ही सरकने वाली,
टेढ़ी मेढ़ी सी रेखाए थी....

इसलिये लिखते हुए
अचानक रुक जाते हैं हाथ....
ह्रदय की भावनाओं संग,
शब्द बनकर बढ़ते हैं हाथ....

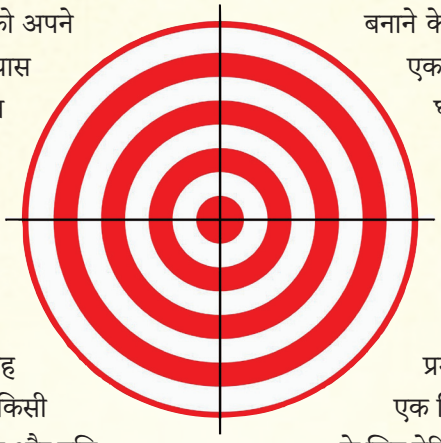




मेंडके मनोज रविन्द्र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अभ्यास का महत्व

प्रत्येक मनुष्य की जीवनशैली संचालन एवं उसके उत्कृष्टता तथा सफलता के लिए अभ्यास का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। जीवन के किसी भी आयाम में अभ्यास के माध्यम से व्यक्ति नई चीजें सीखता है तथा इसी क्रम में मनुष्यों को नैतिक मूल्यों को समझने एवं अपने दक्षता को सुधारने में मदद मिलती है। विद्यार्थी हो, खिलाड़ी हो, या किसी भी क्षेत्र से सम्बंधित पेशेवर हो उन सभी को अपने कार्य क्षेत्र में उत्कृष्टता की प्राप्ति हेतु निरंतर अभ्यास करना होता है, तभी वे अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ बन पाते है और उन्हें सफलता की नित नयी ऊंचाइयों तक पहुंचने में मदद मिलती है।



अभ्यास के माध्यम से व्यक्ति नए ज्ञान, विधा, कला और कौशल का अध्ययन करता है। अभ्यास ही उन्हें समझदार बनाता है और उनके बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करता है। चाहे वह किसी भाषा, विज्ञान, गणित, कला, संस्कृति या किसी अन्य क्षेत्र का हो, अभ्यास से उनकी सृजनात्मकता और बुद्धि में समृद्धि होती है। विद्यार्थियों के लिए अभ्यास की महत्ता अत्यधिक है। पुराने ज़माने में जब शिक्षा पाने का केंद्र गुरुकुल होते थे और शिक्षा प्रणाली मौखिक हुआ करती थी, तब भी विद्यार्थी अभ्यास से ही श्लोक और ग्रंथ याद कर लेते थे। आज भी बिना अभ्यास के किसी भी विद्यार्थी के उत्कृष्ट प्रदर्शन की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

अभ्यास व्यक्ति को उत्साही, धैर्यवान, संगठित और सकारात्मक बनाता है। यह उन्हें स्वयं के दृष्टिकोण को विकसित करने में मदद करता है एवं मानसिक रूप से तीक्ष्ण भी बनाता है या यूं कहें तो यह स्वस्थ मानसिक विकास का साधन बनता है । एक अभ्यासी व्यक्ति ही किसी भी परिस्थिति के प्रति धैर्यता एवं संयमित व्यवहार से अपने को किसी भी नकारात्मकता से दूर रखने में सक्षम हो पाता है। अभ्यास से व्यक्ति की संवेदनशीलता विकसित होती है। वह दूसरों के साथ सहानुभूति करने की क्षमता बनाता है और समाज में सफलता के लिए सहयोगपूर्वक काम करने का मनोभाव देता है।

अभ्यास के दौरान विद्यार्थी या छात्र नैतिक मूल्यों को समझते हैं और सार्वजनिक और नैतिक अध्ययन से उनके विचार और आचरण का निर्माण करते हैं। यह उन्हें सच्चे मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित बनाता है और समाज के लिए उनके सामाजिक जिम्मेदारियों का अध्ययन कराता है। अभ्यास विद्यार्थी को धीरज और समर्थन प्रदान करता है जो उन्हें कठिनाइयों का सामना करने में मदद करता है। अभ्यास की महत्ता से मानव जाति ही नहीं पशु-पक्षी भी परिचित हैं। मधुमक्खियाँ निरंतर परिश्रम और अभ्यास से फूलों का पराग एकत्र करती हैं और अमृत तुल्य शहद बनाती हैं। नन्हीं चींटी अनाज का टुकड़ा लेकर बार-बार चलने का अभ्यास करती है और अंततः ऊँची चढ़ाई पर भी वह अनाज उठाए चलती जाती है। इस प्रक्रिया में कई बार अनाज उसके मुँह से गिरता है तो अनेक बार वह स्वयं गिरती है, परंतु वह हिम्मत हारे बिना लगी रहती है और अंततः सफल होती है। इसी तरह पक्षी अपना घोंसला बनाने के लिए जगह-जगह से घास-फूस और लकड़ियाँ एकत्र करते हैं, फिर अत्यंत परिश्रम और अभ्यास से घोंसला बनाने में सफल हो जाते हैं। हमें प्रकृति के इन जीवों से भी अभ्यास के महत्त्व को सीखने की आवश्यकता है, जो अभ्यास करकर के अपनी क्षमता से अधिकतम परिणाम की प्राप्ति में सफल होते हैं।

अभ्यास व्यक्ति को अपने लक्ष्य की दिशा में प्रगति करने में मदद करता है। वह अपने जीवन को एक निश्चित अभिलाषाओं और उद्दीपना के साथ जीने के लिए प्रेरित करता है । एक खिलाड़ी का जीवन इसका एक उचित उदाहरण हो सकता है, जब वह अपने खेल क्षेत्र में अभ्यास के दम पर एक विश्वस्तरीय खिलाड़ी बनने में सक्षम हो पाता है।

अभ्यास का महत्व एक समृद्ध और सफल जीवन के लिए अविवादित है। यह व्यक्ति को न केवल विद्या और ज्ञान से सम्पन्न बनाता है, बल्कि उसे आत्म-विश्वास, सफलता और समृद्धि की ओर प्रेरित भी करता है। "करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रसरी आवत जात ही, सील पर परत निशान" एक हिंदी कहावत है। इस कहावत के अनुसार, जिस व्यक्ति ने लगातार मेहनत की है और धैर्य बनाए रखा है, उसकी सफलता निश्चित है। सफलता मिलने में वक्त लग सकता है, लेकिन सही दिशा में प्रयास करने से सफलता मिलना अवश्यंभावी होता है। इसलिए, हर व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व तथा बौद्धिक क्षमताओं के विकास हेतु एवं अपने क्षेत्र के कला एवं ज्ञान-विज्ञान सीखने में निरंतर अभ्यास करते रहना चाहिए ताकि अपने जीवन को अधिक सकारात्मक, सफल और खुशहाल बनाने में सफल हो सके।



गौरव कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत की अखंडता का आधार
"विविधता में एकता"

"विविधता में एकता" की अवधारणा के लिये विश्व में सबसे बेहतर उदाहरण भारत है। विश्व में भारत सबसे पुरानी सभ्यताओं में भारतीय सभ्यता अपना प्रमुख स्थान रखती है। जहाँ वर्षों से कई प्रजातीय समूह एक साथ रहते हैं। भारत की एक धरती पर समरसता के साथ अलग-अलग धर्म, समुदाय, जाति, भाषा, संस्कृति, जीवन-शैली, परिधान पहनने का तरीका, भगवान में भरोसा, पूजा-पाठ के तौर-तरीके आदि के लोग एक-साथ रहते हैं। भारतीय संस्कृति के मूल में ही 'वसुधैव कुटुंबकम्' (विश्व एक परिवार) की अवधारणा है। ऋग्वेद में कहा गया है 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति' अर्थात सत्य एक ही है जिसे ज्ञानी लोग अलग-अलग रूपों में व्यक्त करते हैं।



भारत में रहने वाले लोग एक माँ के बच्चे की तरह हैं। इसलिए हम अपने देश को भारत माँ कह कर बुलाते हैं। भारत देश विश्व में प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ विभिन्न धर्म के मानने वाले जैसे हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, सिक्ख, जैन, ईसाई और पारसी आदि एक साथ रहते हैं और सभी धर्म के लोगों को अपने धर्म के अनुसार जीवन जीने की स्वतंत्रता है। यहाँ सभी धर्मों के अपने-अपने तीर्थस्थल हैं, जहाँ वे स्वेच्छा से अपने धार्मिक आस्था के अनुसार जा सकते हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में रहने वाले लोगों की भाषा, संस्कृति, परंपरा, परिधान, उत्सव, रुप आदि अलग-अलग हैं। किंतु वैदिक पद्धति से युक्त इनके रीति रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान एवं कर्मकांड के व्यवहार के कारण इनमें एकरूपता है।

भारत में लोग अपनी आध्यात्मिकता, कर्म और संस्कार को अत्यधिक महत्व देते हैं। भारतीयों में धार्मिक सहिष्णुता का अनोखा गुण है, जिसके कारण उन्हें अन्य धर्मावलंबियों की उपस्थिति में कठिनाई महसूस नहीं होती है। भारत में अधिकतर लोग हिन्दू धर्म के है जो अपनी धरती पर सभी दूसरी संस्कृतियों को अपनाने और स्वागत करने की क्षमता रखते हैं। यहाँ के लोग स्वभाव से आत्मा की शुद्धि, पुनर्जन्म, मोक्ष, स्वर्ग और नरक में भरोसा रखते हैं। बिना किसी को हानि पहुँचाये बेहद शांतिपूर्ण तरीके से लोग अपने त्योहारों होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस, गुड फ्राईडे, महावीर जयंती, बुद्ध जयंती आदि को मनाते हैं। भारतीय लोगों की इस तरह की विशेषताएँ यहाँ पर "विविधता में एकता" को प्रसिद्ध करती है।

भारत में सैकड़ों भाषाएं एवं बोलियाँ हैं। भारतीय भाषाएं ध्वन्यात्मक होने के कारण इनमें भाषाई एकरूपता भी है। इसका कारण अधिकांश भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। भारतीय भाषाओं के लिए कम्प्यूटर में एक समान की-बोर्ड विन्यास (लेआउट) का डिजाइन भी संभव होने के पीछे इन भाषाओं का मूल एक होना है और यह इनकी विशेषता है।

भारत अपनी विशेषताओं के साथ ही स्वार्थी लोगों के कारण अनेक प्रकार के भ्रष्टाचार, जातिवादी और धार्मिक कट्टरता से ग्रस्त हो रहा है। किंतु आम भारतीय मानवीय मूल्यों एवं सहिष्णुता, राष्ट्रवादी विचारों को महत्व देते हैं। इसलिए तमाम विकृतियों को अपनी खूबियों से ढंकने में भारतीयों का हुनर है, जिसके कारण भी भारत मजबूती के साथ समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

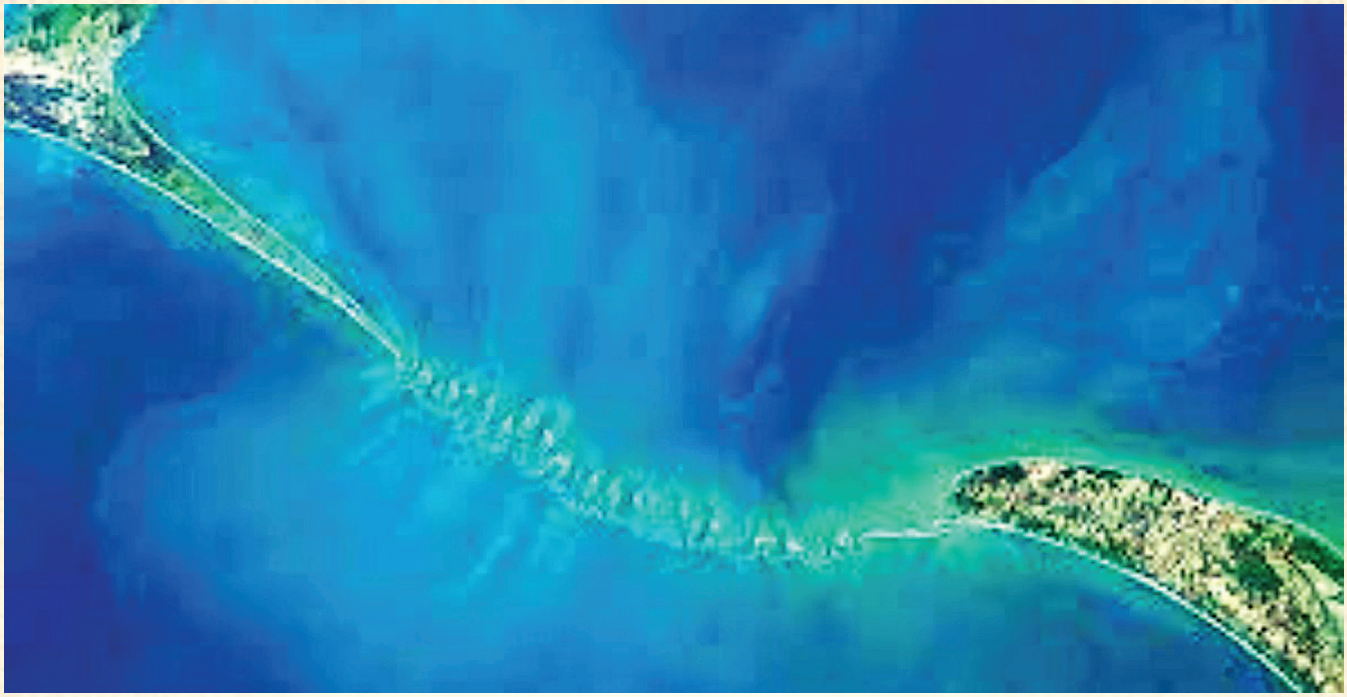
भारत एक अधिक जनसंख्या वाला देश होने के बावजूद पूरे विश्व में प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ "विविधता में एकता" का चरित्र देखा जाता है। "विविधता में एकता" भारत की शक्ति और मजबूती है जो आज एक महत्वपूर्ण गुण के रुप में भारत की पहचान करता है।



प्रभात शेखर बारिक
लेखापाल

राम सेतु (एडम्स ब्रिज)

वैज्ञानिक तथ्य, इतिहास और धार्मिक महत्व



दुनिया भर में कुछ ही ऐसी ऐतिहासिक संरचनाएं हैं जो धार्मिक और ऐतिहासिक सिद्धांतों को जोड़ती हैं। ऐसा ही एक निर्माण राम सेतु है, जिसे एडम्स ब्रिज के नाम से भी जाना जाता है। हाल ही में, केंद्र सरकार ने राम सेतु की संरचना का अध्ययन करने और राम सेतु की आयु और इसके बनने की प्रक्रिया जानने के लिए पानी के अंदर खोज और शोध करने की मंजूरी दी है। यह अध्ययन यह समझने में भी मदद करेगा कि क्या यह संरचना रामायण काल जितनी पुरानी है। साथ ही, राम सेतु को राष्ट्रीय स्मारक बनाने की मांग की जा रही है, हालांकि यह मामला विचाराधीन है। इसके साथ ही यह जानना और दिलचस्प हो जाता है कि क्या भारतीय पौराणिक कथाओं को आधुनिक समय की संरचनाओं से जोड़ने की संभावनाएं हैं।

राम सेतु भारत के तमिलनाडु में पंबन द्वीप या रामेश्वरम द्वीप और श्रीलंका में मन्नार द्वीप के बीच प्राकृतिक खनिज (मिनरल) शोलों की एक श्रृंखला है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार पुल का बहुत महत्व है और रामायण में इसका उल्लेख है। राम सेतु वैज्ञानिकों को भी हैरान कर देता है और इसकी आयु पता करने के लिए अध्ययन किए जा रहे हैं।

इस पुल की कुल लंबाई करीब 50 किलोमीटर है। राम सेतु मन्नार की खाड़ी को पाक स्ट्रेट से अलग भी करता है। रेत के कुछ तट सूखे हैं। इस संरचना के चारों ओर का समुद्र बहुत उथला है, जिसकी गहराई तीन फीट से लेकर 30 फीट तक है।

कई वैज्ञानिक रिपोर्टों के अनुसार, राम सेतु 1480 तक पूरी तरह से समुद्र तल से ऊपर था, लेकिन यहाँ एक चक्रवात आने से यह क्षतिग्रस्त हो गया था। 15वीं शताब्दी तक जब ये गहरा नहीं हुआ था, इसे पैदल ही पार किया जा सकता था। भूगर्भीय प्रमाण से यह साबित होता है कि राम सेतु भूतकाल में भारत और श्रीलंका के बीच एक भूमि आधारित कड़ी थी। राम सेतु चूना पत्थर (लाइमस्टोन) के शोलों से बना है और कोरल रीफ की एक लम्बी श्रृंखला है। इस बात के भी प्रमाण हैं कि यह रामेश्वरम में तैरते पत्थरों से बना है और ऐसे सिद्धांत हैं जो मानते हैं कि ज्वालामुखी के पत्थर पानी पर तैरते हैं। चूंकि कोरल रीफ के पास समुद्र का पानी बहुत उथला है, इसलिए जहाजों का आवागमन असंभव है, जिसके कारण जहाजों को श्रीलंका तक पहुंचने के लिए गोल चक्कर वाले रास्ते अपनाने पड़ते हैं।

श्रीलंका में पम्बन द्वीप से मन्नार द्वीप तक एक छोटा रास्ता बनाने के लिए सेतुसमुद्रम परियोजना प्रस्तावित की गई थी। हालांकि, पर्यावरणविदों का कहना है कि सेतुसमुद्रम परियोजना से हजारों साल पुराने प्राकृतिक चट्टान नष्ट हो सकते हैं। सेतुसमुद्रम परियोजना को पंबन पास को गहरा करके क्रियान्वित करने की योजना थी, ताकि रामसेतु को भी संरक्षित किया जा सके। लेकिन यह परियोजना अभी भी ठप पड़ी है।

राम सेतु: धार्मिक महत्व

वाल्मीकि के महाकाव्य रामायण में राम सेतु का पहली बार उल्लेख किया गया था। माना जाता है कि राम सेतु का निर्माण भगवान श्री राम की वानर सेना ने नल की देखरेख में किया था। राम सेतु का निर्माण इसलिए किया गया था ताकि भगवान श्री राम अपनी पत्नी सीता को बचाने के लिए लंका

पहुंच सकें। कथा के अनुसार, पुल को तैरते हुए पत्थरों का इस्तेमाल करके बनाया गया था, जिस पर भगवान राम का नाम खुदा हुआ था, जिसकी वजह से यह डूबता नहीं था। भगवान राम ने भारत से लंका तक रास्ते के लिए समुद्र से प्रार्थना की थी, ताकि वे वहां जा सकें और सीता को लंका के राजा रावण के कब्जे से छुड़ा सकें।

राम सेतु, जिसे एडम्स ब्रिज, नल सेतु और सेतु बांदा भी कहा जाता है, रामायण का एकमात्र पुरातात्विक और ऐतिहासिक प्रमाण है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, राम सेतु एक पवित्र स्थल है। इसलिए इस पर कोई पुल नहीं बनाया जाना चाहिए।

राम सेतु के बारे में रहस्यमयी तथ्य

राम सेतु मानव निर्मित पुल है या नहीं, इस पर बहस कई दशकों से चल रही है। राम सेतु को एडम्स ब्रिज या नल सेतु भी कहा जाता है। एडम्स ब्रिज नाम की उत्पत्ति एक इस्लामी ग्रंथ से हुई है जिसमें श्रीलंका में एडम्स पीक होने का जिक्र है। इसे नल सेतु भी कहा जाता है क्योंकि वानर सेना ने नल की देखरेख में पुल को बनाया था। समुद्र तटों की कार्बन डेटिंग और समुद्र संबंधी अध्ययनों से एक निर्धारित समयसीमा (टाइमफ्रेम) का पता चलता है जो रामायण काल से मेल खाता है।

क्या सच में राम सेतु मानव निर्मित है?

हाल ही में, वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट में जीआईएस और रिमोट सेंसिंग विश्लेषक के रूप में काम करने वाले राज भगत पलानीचामी ने भारत और श्रीलंका के बीच संरचनाओं को समझाते हुए सैटेलाइट एनिमेशन को ट्वीट किया।

राम सेतु को एडम्स ब्रिज क्यों कहा जाता है?

राम सेतु का पहली बार उल्लेख इब्न खोरदाद्बेह की 'बुक ऑफ रोड्स एंड किंगडम्स' (सी 850) में हुआ था, जिसमें इसे 'सेट बांधई' या 'समुद्र का पुल' कहा गया है। अन्य स्रोत एडम के संदर्भ में इस पुल का वर्णन करते हैं, जो कि ईडन गार्डन से अपने निष्कासन के बाद इस पुल के द्वारा श्रीलंका से भारत आए। इस वजह से इस पुल को एडम्स ब्रिज के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा एक ब्रिटिश कार्टोग्राफर ने वर्ष 1804 में सबसे पहला नक्शा तैयार किया था जिसमें इस क्षेत्र को एडम्स ब्रिज के नाम से बोला गया है।

राम सेतु अभियान

रामेश्वरम और श्रीलंका को जोड़ने वाली चूना पत्थर की शोल श्रृंखला का पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों और पुरातत्वविदों द्वारा मार्च 2021 में राम सेतु अभियान चलाया गया था। अभियान का उद्देश्य चूना पत्थर की चट्टानों की विशेषताओं, इसके भूगर्भीय परिवर्तन और आठ किलोमीटर के इस पुल की विभिन्न अन्य विशेषताओं को समझना है।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद को कई प्रस्ताव भेजे गए थे। हालाँकि, यह पहली बार है कि प्रस्ताव को स्वीकार किया गया है और अभियान को बोर्ड से पर्याप्त फंड मिली है। परियोजना का उद्देश्य यह पता लगाना है कि राम सेतु मानव निर्मित है या नहीं जिससे लंबे समय से चली आ रही पौराणिक बहस हल हो जाएगी।

एएसआई ने राम सेतु पर आगे की शोध को हरी झंडी दी

2007 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने कहा था कि राम सेतु सिर्फ एक प्राकृतिक निर्माण था। भारत सरकार ने एएसआई के हवाले से सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा दायर किया था जिसमें कहा गया था कि भगवान राम द्वारा बनाए गए ढांचे का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

2021 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अंतर्गत आने वाली सरकारी संस्था पुरातत्व के लिए केंद्रीय सलाहकार बोर्ड ने राम सेतु कैसे और कब बनाया गया था, यह पता लगाने के लिए एक शोध परियोजना के प्रस्ताव को मंजूरी दी।

समुद्र तल से 35-40 मीटर की गहराई पर पड़े सेडीमेंट के नमूने एकत्र करने के लिए अध्ययन में जहाजों का इस्तेमाल किया जा रहा है। रेडियोमीट्रिक तकनीक का उपयोग उस रचना की आयु निर्धारित करने के लिए किया जा रहा है जिसमें कोरल या प्यूमिक स्टोन शामिल होने की रिपोर्ट है। कोरल में कैल्शियम कार्बोनेट जैसे खनिज (मिनरल) होते हैं जो इन संरचनाओं की आयु का पता लगाने में मदद करेंगे।

क्या हम अब राम सेतु देख सकते हैं?

राम सेतु 1964 तक दिखाई देता था। हालांकि, राम सेतु अब पानी के नीचे है। नासा के सैटेलाइट द्वारा ली गई तस्वीर में उथले पानी वाले इलाकों में सैंडबार पर पत्थर दिखाई देते हैं।



अपूर्वा श्री
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

'सकारात्मक सोच की शक्ति'

जीवन में हम अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं और उन चुनौतियों से जूझते हुए हम अपनी जिंदगी का एक-एक पल बिताते चले जाते हैं। लेकिन जीवन में कई बार चुनौतियों का सामना करते वक्त अनेक प्रकार के विचार एवं विकार जन्म लेते हैं। उन विचारों का मापदंड हमारी सोचने की शक्ति से आंका जाता है। विचार हमारे सोचने की शक्ति का आईना होते हैं। मुश्किल से मुश्किल परिस्थिति में भी आत्म-विश्वास को बनाये रखने में ही समझदारी है क्योंकि मानव की असली परीक्षा मुश्किल दौर में ही होती है। मशहूर सलाहकार शिव खेड़ा ने भी कहा है कि जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते वरन उनके काम करने का तरीका अलग होता है। हालात का सामना करने के लिए मजबूत शरीर ही नहीं बल्कि मजबूत इरादे का होना भी बहुत जरूरी है क्योंकि हालात तूफान का वो झोंका होते हैं, जो कमजोर इरादे वाले लोगों को उड़ा कर न जाने किस खाड़ी में फेंक देते हैं। वहीं जिसके इरादे चट्टान की तरह मजबूत हैं वो किसी भी प्रकार के चुनौतियों का सामना करने से नहीं घबराते। अपने विचारों को मजबूत रखना ही सफलता पाने की पहली सीढ़ी है।

सुबह उठने के साथ ही हमारी रोज की दिनचर्या शुरू हो जाती है। हमारे जागते हुये दिमाग में विचारों का मेला लग जाता है। दिनभर में हम तमाम तरह के लोगों से मिलते है, बातें करते हैं। विचारों के इस आदान-प्रदान से हम बहुत सी बातों को सीखते हैं और ग्रहण करते हैं। कभी-कभी हमें ऐसी बातें भी सुनने को मिल जाती है जो हमारे आत्म-विश्वास को हिलाने की कोशिश करती है और ऐसी बातें, ऐसे विचार हमें हमारे लक्ष्य से भटकाने का प्रयास करते हैं। ऐसे विचार हमारे अंदर रोग उत्पन्न कर देते हैं। जीवन में अगर कठिनाई न हो तो वे हमारे व्यक्तित्व में होने वाले विकास को रोक लेती है। जिस प्रकार रूका हुआ पानी सड़ जाता है, उसी प्रकार रूका हुआ जीवन नरक के समान बन जाता है। सकारात्मक सोच और विश्वास हमारे जीवन को सार्थक बनाता है।

शंकालु, कपटी, अविश्वासी और अनुमानी लोगों से आप दूर भागना चाहते हैं, इसलिए अपने आप से पूछें की लोग आपके साथ रहना पसंद करते हैं या नहीं ? यदि नहीं तो आज से ही अपने विचार बदले। आपके



विचार ही आपके विश्वास की खबर देते हैं। आज से ही अपने विचार में आत्म-विश्वास की महक डालना शुरू करें। किसी भी घटना चाहे वह नकारात्मक ही क्यों न हो, अपने विचारों को सकारात्मक ही रखें। अपने आप पर विश्वास रखें कि आप वे सब काम कर सकते हैं, जिन्हें करने के विचार आपके अंदर उठते हैं। इसलिए यदि सचमुच अपने व्यक्तित्व को प्रफुल्लित बनाना है तो हमेशा अपने सोच की दिशा को सकारात्मक रखिए। किसी भी घटना, किसी भी विषय और किसी भी व्यक्ति के प्रति अच्छा सोचें, उसके विपरित न सोचें। दूसरे के प्रति अच्छा सोचेंगे तो आप स्वयं के प्रति भी अच्छा करेंगे। कटुता से कटुता बढ़ती है। मिलता से मिलता का जन्म होता है। आग ही आग लगाती है और बर्फ ही ठडंक पहुंचाती है। सकारात्मक सोच बर्फ की डली है जो दूसरे से अधिक खुद को ठंडक पहुंचाती है। यदि आप इस मंत्र का प्रयोग कुछ महिनों तक कर सके तब आप देखेंगे कि आपके अंदर कितना क्रांतिकारी परिवर्तन हो गया है। जो काम सैकड़ों ग्रंथों का अध्ययन नहीं कर सकता, सैकड़ों सत्संग नहीं कर सकते, सैकड़ों मंदिर की पूजा और तीर्थों की यात्राएं नहीं कर सकती, वह काम सकारात्मक संबंधी यह मंत्र कर जाएगा। आपका व्यक्तित्व चहचहा उठेगा।



श्री कुंदन कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सर्वोत्तम उपहार

श्रीमती शर्मा- "अरे कितनी बार कहा कि कपड़े निकालकर बेड पर यू हीं फेंका न करो, जूता भी इधर-उधर फेंक देते हो, पोंछने के बाद टावल सुखाते भी नहीं, सामान तो छोड़ो बच्चों तक की परवाह नहीं।"

श्री शर्मा- "इतनी जुबान चलाने से बेहतर होता हाथ चला लेती इतनी देर में काम निकल जाता।"

श्रीमान एवं श्रीमती शर्मा यूं हीं आए दिन छोटे-छोटे बात पर उलझ जाया करते थे। वो एक दुसरे के नाकामी और गैर जिम्मेदाराना व्यवहार को अपने नोंक-झोंक की मुख्य वजह मानते थे। बच्चों तक इस सुनामी का कहर पहुंचना स्वाभाविक बात थी।

एक दिन श्री शर्मा घर पहुंचे दरवाजा खोलते ही अपनी पत्नी के श्रृंगार और वेश-भूषा को देखकर अचरज में पड़ गये। थोड़ा याददास्त को जोर देने पर पता चला कि आज उनकी अर्धांगिनी का जन्मदिन है। परंतु उन्होने अभी तक कोई शुभकामना नहीं दी थी। जबकि श्री शर्मा अपने हर एक दोस्त को उनके जन्मदिन पर बधाई संदेश के साथ उपहार तो जरूर देते हैं।

श्री शर्मा जीवन मूल्यों एवं रिश्तों की महत्ता को समझते थे। वे भली-भांति जानते थे कि रिश्तों की डोर को दोनों तरफ से खिंचने पर टूट जाती है, रिश्ता को बचाने के लिए किसी एक छोर को ढीला छोड़ना जरुरी है। करीब आधा घंटा बाद वे सभ्य परिधान में अपने कमरे से बाहर निकले। पत्नी को एक छोटा बाक्स देते हुए कहाः "जन्मदिवस की बधाई। व्यस्तता के कारण याद नहीं रहा, ये तुम्हारे लिए।"

श्रीमती शर्मा उत्साह के साथ शीघ्र बक्सा को खोल डाली, पर ये क्या बक्सा में कुछ भी नहीं था सिवाय एक पर्ची के। अनमने ढंग से पर्ची खोली और पढ़ने लगी। जैसे ही वो आगे पढ़ती जा रही थी उनके भीगी पलकों से अश्रु की धारा उसी वेग सी निचे लुढ़कती जा रही थी।

उस दिन के बाद उन दोनों में एक दूसरे की प्रति कड़वाहट मिट गयी और नये रिश्तों के साथ एक नयी जिंदगी की शुरुआत हुई।

श्री शर्मा का खत

"प्रिय,

संगीता मुझे माफ करना, मैंने आज तक तुम्हारें परिश्रम और त्याग को नहीं समझा और न हीं समझना चाहा। घर के हर मामलों में निर्णय लेने का हकदार मैं खुद को समझता रहा। आज तुम्हारे जन्मदिवस पर मैनें कोई उपहार तो नहीं लाया पर ऐसा उपहार देना चाहता हूं जो तुम्हारा विश्वास जीत लें, जिंदगी बदल दे। वो उपहार है 'वादा'। मैं वादा करता हूं कि आज के बाद तुम्हारे खाने की प्रशंसा जरुर करुंगा। घर वालों से बात करने पर तुम्हे टोकूंगा नहीं। अपने कपड़ों और जूतों को अब से हमेशा सजाकर रखूंगा। खाने में देर होने पर नाराज नहीं होऊंगा। छुट्टी के दिनों में घर और कपड़ों की सफाई खुद ही करुंगा। अकेले कहीं बाहर घुमने नहीं जाऊंगा अब से पूरा परिवार साथ घुमेंगे। तुम्हारे कमर में अक्सर दर्द रहता है न, इसके लिए किसी अच्छे डॉक्टर को अवश्य दिखाऊंगा।"





यशवंत वर्मा
हिन्दी अधिकारी

अंडमान
एक अभूतपूर्व सफरनामा

यह बात पिछले साल की है, जब मैंने अपनी धर्मपत्नी संग अंडमान निकोबार द्वीप समूह जाने की योजना बनाई थी। हम दोनों को ही अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की मोहक सौंदर्य को देखने की बहुत चाह थी। चुकिं यह हम दोनों की एक साथ पहली यात्रा थी इसीलिए मैं इसे एक यादगार यात्रा बनाना चाहता था। 8-दिवसीए यात्रा अनुसूची के साथ, हम दोनों एक ऐसी यात्रा पर निकले, जिसे हम हमेशा के लिए अपनी यादों में बसा लेना चाहते थे परंतु प्रकृति को कुछ और ही मंजूर था और कैसे हमारी यात्रा एक हफ्ते ना होकर दो हफ्तों की रोचक यात्रा में तब्दील हो गई, उसी के संक्षिप्त वर्णन की अनुमति चाहता हूँ!

पहले दिन, सायँ-काल में हम दोनों ने रायपुर से कोलकाता की उड़ान भरी और कोलकाता में रात बिताकर अगले दिन सुबह-सुबह ही पोर्ट ब्लेयर की उड़ान भरी। ट्रैवल एजेंट ने पूर्व में ही सभी रहने खाने की व्यवस्थाएं कर रखीं थीं और हमारे आगमन पर हीं हमें फूलों के गुलदस्ते और हार-माला से स्वागत किया गया, जो हम लोगों को वी.आई.पी. होने का एहसास करा रहें थे। ऐसे स्वागत के बाद हमारा उत्साह और भी बढ़ता जा रहा था तथा जब हम होटल पहुंचे तो बालकनी से समुद्र का नजारा मन को मोह लेने वाला था। थोड़ी देर के आराम के बाद, शाम को ड्राइवर ने हमें कोर्बिन कोव बीच का सैर करवाया, जहां हमने बीच की मोहक सुंदरता का आनंद के साथ-साथ बोटिंग और पैरासेलिंग जैसी रोमांचक गतिविधियों का भी आनंद लिया। पैरासेलिंग के दौरान ऊपर से असाध्य वातावरण में खड़े होकर जब हम दोनों ने सूर्यास्त की शानदार दृश्य देखा, तो हमें वाकई अविस्मरणीय अनुभव हुआ। उस ऊँचाई से जब समुद्र की बलखाती लहरों और दिव्य सौंदर्य से घिरे पोर्ट ब्लेयर द्वीप के प्रमुख हिस्सों को देखा, तो वे एक स्वर्ग के समान महसूस हो रहें थे जिसकी सुंदरता का बखान शब्दों में करना कठिन है।



तीसरे दिन हमने ऐतिहासिक सेल्युलर जेल का भ्रमण किया, जहां भारत के स्वतंत्रता संघर्ष से जुड़े भावुक किस्सों को सुनकर कुछ देर के लिए हम भी ऐतिहासिक सदी में चले गए। इसके बाद हमने पोर्ट ब्लेयर के मछली संग्रहालय को भी देखा, जिसमें



अनजाने कई विविध समुद्री जीवन को देखने का आनंद मिला।

हमारी यात्रा का अगला चरण हमें स्वर्ग रूपी हैवलॉक द्वीप की ओर ले गया। डेक नृत्य और संगीत से सुसज्जित 2 घंटे 30 मिनट की लंबी एवं सुखद जलमार्ग यात्रा निजी जेट फेरी से कब समाप्त हो गई पता ही नहीं चला। हैवलॉक पहुँचने पर ट्रैवल एजेंट की टीम ने फिर से हमारा स्वागत किया और हमें हमारे लिए बुक किए गए रिज़ॉर्ट में ले गए। वहां थोड़ी देर ठहरने के बाद, हमें एशिया के सबसे सुंदर बीच "राधा नगर बीच" ले जाया गया, जो अपने प्रतिष्ठित सुंदरता पर खरा उतरता है। तट चारों ओर से अपनी हरी भरी प्राकृतिक सुंदरता से सराबोर था, उन वादियों के खूबसूरत फूलों से आती आकर्षक खुशबू एवं शीशे के समान पारदर्शी पानी जो अनंत दूरी पर सफेद रेत की चादर से ऐसे मिल रहे थे जैसे बेताब समन्दर रेत की चादर को ओढ़ना चाहता है, मंत्रमुग्ध कर देने वाला मंजर था। इस मनमोहक तट के आनंद को बीच-बीच में फोटोग्राफर (ट्रैवल कंपनी द्वारा बुक किया गया था) सुचारु रूप से बाधित करने में लगे हुए थे।

अगला दिन हमारे दौरे का सबसे रोमांचक दिन था क्योंकि उस दिन हमें एलिफ़ेंटा बीच पर समुद्री के नीचे की दुनिया का पता लगाने का मौका मिला। स्कूबा डाइविंग से पहले हमें आधे घंटे के लिये पानी के अंदर सांस लेने का प्रशिक्षण दिया गया। स्कूबा डाइविंग के उपरांत हमने एलियंस जैसे सर के साथ समुद्र तल पर चलने का अनुभव भी किया जिसे 'ओशन वॉक' कहते है। इसके अलावा हमने कई अन्य जल क्रिड़ाएं भी की और समुद्र के अंदर की दुनिया के शानदार वातावरण का अनुभव भी किया। शाम तक पूरी तरह से थक जाने के बावजूद इस अनोखे अनुभव ने हमारे हृदय को खुशी से भर दिया।

अगली सुबह हमने सूर्योदय के वक़्त पूर्व निर्धारित समुद्र तट का भ्रमण करने में असमर्थ रहे क्योंकि हमने पिछले दिन ही दो दिनों के बराबर की ऊर्जा का कोटा पूर्ण कर लिया था। यद्यपि दिन में निजी

वाहन से द्वीप का सैर किया और शाम को लौटने तक रिज़ॉर्ट से लगे समुद्री तट के बगल में हमारा खूबसूरत 'कैन्डल लाइट डिनर' तैयार था। उस जगह की मोहकता एवं शालीनता ने हम दोनों को वशीभूत कर लिया था और हम दोनों उस जगह में खोए जा रहे थे लेकिन कैमरामैन भी कहाँ पीछे रहने वालों में से थे, वे इस रुमानी शाम को बाधित करने के लिये तटस्थ थे।

सातवें दिन हम नील द्वीप के लिए रवाना हो गए, इस बात से अनजान कि यह एक दिन की यात्रा एक से अधिक दिन की होने वाली है। जब हम जेट फेरी पर सवार हुए तो मौसम साफ था किन्तु आधी दूरी तय करने के बाद मौसम ने अपना रूख बदला और आसमान पर बादल मंडराने लगे और देखते ही देखते मूसलाधार बारिश शुरू हो गई (बिन बुलाए मेहमान की तरह अचानक से बारिश आ जाना भी अंडमान द्वीप समूह की विशेषताओं में से एक है)। अचानक से बदले हुए इस मौसम ने लहरों में भी गुदगुदी कर दी जिस कारण हमारी फेरी अब वन्डरलैन्ड की रोमांचक सवारी बन चुकी थी जो लहरों के साथ ऊपर नीचे हिचकोले खा रही थी। इन सब के बावजूद फेरी के अनुभवी नौका चालक ने हम सभी को सुरक्षित तट तक पहुंचा दिया। वहाँ से हमारे ड्राइवर ने हमें हमारे आकर्षक रिज़ॉर्ट तक पहुँचाया जिसे सिर्फ एक दिन के लिए बुक किया गया था। चुकी खराब मौसम की वजह से उस दिन का दौरा कार्यक्रम रद्द कर दिया गया था इसलिए हमने बारिश में ही रिज़ॉर्ट के पूल का आनंद उठाया और रात्री में द्वीप के प्रसिद्ध स्थानीय रेस्तरां में लजीज खाने का लुत्फ़ लिया। (नील एक छोटा द्वीप है और सामान्यतः नील द्वीप पर मोबाईल नेटवर्क/ इंटरनेट नहीं मिलता है और ऐसे मौसम में तो नेटवर्क बिल्कुल भी काम नहीं कर रहा था)

अगली सुबह हम नील द्वीप से लौटने की सोंच रहे थे क्योंकि नौवें दिन ही हमारी रायपुर वापसी की टिकट थी लेकिन रिज़ॉर्ट के कर्मचारियों ने हमें सूचित किया की खराब जलवायु के कारण नाव यात्रा स्थगित है। अतः हमें एक और दिन की बुकिंग बढ़ानी पड़ी। चुकि बारिश कम हो गई थी, इसीलिए दौरा कार्यक्रम के अनुसार भारत के सबसे बड़े कोरल रीफ़ में से एक, लक्ष्मनपुर बीच 1 और 2 पर गए। वहाँ हल्की बारिश के बीच ही हमने 'स्नोरकलिंग' किया जिसमें निमो मछली (जिसे अब तक हमने फिल्मों में ही देखा था) एवं कई अन्य अद्भुत एवं अनोखी समुद्री प्रजातियों को भी देखा।

नौवें दिन हम दोनों जल्दी से पोर्ट ब्लेयर पहुँच कर उड़ान पकड़ने की सोच रहे थे परंतु अंडमान हमें इतनी जल्दी जाने नहीं देना चाहता था। नौकायन की गतिविधि उस दिन भी बाधित रही और नेटवर्क कानेक्टिविटी न होने के कारण मैं टिकट भी कैन्सल नहीं कर पाया



जिस कारण थोड़ी मायूसी जरूर हुई परंतु हम वहाँ छुट्टियों का आनंद लेने गए थे इसीलिए सच्चाई को स्वीकारते हुए हमने उस द्वीप के सभी मुख्य तटों एवं प्राकृतिक पुल का भ्रमण भी किया। इस बार कैमरामैन ने भी बिना कोई बाधा पहुंचाए हमारी यात्रा की अच्छी तस्वीरें खींच कर उसे और यादगार बना दिया।

दसवें दिन हम दोनों आखिरकार अंडमान पहुंचे और फ्लाइट बुक किया वो भी हमें दो दिन बाद की मिली। इसी दौरान हमने रॉस द्वीप, नॉर्थ बे द्वीप एवं पुराने 20 रुपये के नोट में चित्रित दृश्य वाली जगह का भी सैर किया और साथ ही हिम्मत जुटाकर बड़ी संख्या में पाए जाने वाले सांपों के लिय कुख्यात वाइपर द्वीप का भी भ्रमण किया।

वापसी के दौरान हम दोनों अंडमान और निकोबार द्वीप से अविस्मरणीय, प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण एवं रोमांचकारी यात्रा की यादों को अपने साथ समेटे लिए आ रहे थे। हालांकि यह एक सप्ताह का दौरा था, प्रकृति ने हमें वहाँ एक और सप्ताह रहने का अवसर प्रदान किया और यकीन मानिए हमने अपनी सीमा तक इसका आनंद उठाया। सरल शब्दों में कहें तो, अंडमान शांति और सौंदर्य का एक अद्भुत संगम है, साथ ही कुछ अभूतपूर्व घटनाएं जिनसे हम आप अनिभिज्ञ है, जो आपको एक अलग दुनिया में ले जाती है और यही प्रकृति की वास्तविक सुंदरता है।



जितेन्द्र नयन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

समाज सेवा- हमारा कर्तव्य

समस्त जीवों में मानव श्रेष्ठ हैं। उसकी श्रेष्ठता का कारण मस्तिष्क हैं जो अन्य जीवधारियों के पास उतना विकसित नहीं होता है जिससे वे विचार कर सके अथवा कोई निर्णय कर पाए। अपनी समाज की कुरीतियों को कम करने तथा लाभदायक कार्य के लिए सभी को प्रेरित करना सबसे बड़ा समाज सेवा है, जो सभी के लिए कल्याणकारी साबित होता है। हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के विकास के शुरुआती दौर पर नजर डालें तो पता चलता है कि सेवा का भाव प्राचीन काल से ही मानव स्वभाव तथा आचरण का अभिन्न अंग रहा है। हालांकि विभिन्न कालों में हमारे पूर्वजों ने संघर्ष तथा जीवन के मध्य बेहतरीन सामंजस्य स्थापित करने तथा अपनी संस्कृति को बचाए रखने के अद्भुत प्रयास हमें उनकी सेवा भावना से अवगत करवाते हैं।

सामाजिक जीवन की नींव व्यक्तिगत जीवन के समन्वय और एकजुटता से स्थापित होती है। व्यक्ति का समाज से अटूट संबंध होता है। इसलिए समाज की भलाई के हित में व्यक्ति की जिम्मेदारी और कर्तव्य अनंत है। यह सेवा जरूरतमंद लोगों को सशक्त बनाना और एक अधिक निष्पक्ष और समान समाज के निर्माण की कुंजी है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में समाज सेवा एक शक्तिशाली साधन है। जिस समाज में मनुष्य जन्म लेता है, उस समाज की उन्नति करना, उसकी सेवा करना, उसका कर्तव्य है। इसीलिए महान पुरुषों ने समाज सेवा को ही उत्तम कर्तव्य और धर्म माना है।



समाज सेवा व्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध करवाती है। साथ ही साथ व्यक्ति को समाज के द्वारा जन्म से लेकर कामयाबी तक के सफर में जो अमूल्य तथा बेजोड़ सहयोग किया जाता है, उससे उऋण होने का मौका भी मिलता है। समाज सेवा एक पुण्य कार्य हैं, जिसके कारण उन्हे सदियों तक याद भी किया जाता है। बड़ी से बड़ी सामाजिक बुराई को समाज सेवा रुपी हथियार की मदद से दूर किया जा सकता है। सेवा मानसिकता से ही हर असमानता को दूर करना और समाज में समानता और मित्रता स्थापित करना संभव है। इसके अलावा, समाज में कई लोग हैं जो दुःख, पीड़ित और शारीरिक रूप से अक्षम हैं। उनकी विभिन्न जरूरतों को पूरा करना या समस्याओं को व्यक्तिगत रूप से हल करना संभव नहीं है। इसके लिए वे समाज में अन्य सक्षम लोगों की मदद और सहानुभूति की आशा करते हैं। बाढ़, तूफान, सूखा, भूकंप, लू और आग जैसी सभी प्राकृतिक आपदाओं ने समाज में कई लोगों के सामान्य जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। युद्ध के समय भी, साधारण जनता संकट में रहते हैं। उन्हें विभिन्न तरीकों से सहायता प्रदान करना समाज सेवा है। सबसे बढ़कर समाज से अंधविश्वास को दूर कर स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए समाज सेवा की आवश्यकता है।

समाज सेवा के लिए सबसे पहले हमारा संगठित होना आवश्यक है। एकता में ही ताकत है। उस ताकत से हम समाज के बहुत से कामों को आसानी से कर सकेंगे। समाज सेवा का अर्थ सिर्फ दान देना, मुफ्त भोजन खिलाना, वस्त्र दान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हर उस जरूरतमंद की सहायता करने से है जिन्हें वाकई उस हालातों में मदद की जरुरत है। दूसरे शब्दों में कहे तो, बिना किसी अपेक्षा के प्यार एवं दया भाव से जरुरतमंदों को, अपनी क्षमतानुसार हरसंभव सहायता करना ही समाज सेवा कहलाता है।

समाज सेवा के माध्यम से हम दूसरों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं और सभी के लिए एक बेहतर दुनिया बना सकते हैं। सेवा का दायरा बहुत विस्तृत है। यह परिवार और गांव या शहर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक विस्तार है। समाज के लिए मनुष्य कहीं भी जो निःस्वार्थ सेवा प्रदान करता है, उसे सही मायने में समाज सेवा माना जाता है। समाज से दुःख, शोक और उत्पीड़न को दूर कर एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए जो कुछ किया जा सकता है, वह समाज सेवा के दायरे में आता है। यह हमारे सामूहिक प्रयासों के माध्यम से है कि हम गरीबी और भुखमरी से लेकर असमानता और सामाजिक अन्याय तक हमारे समाज के सामने आने वाले कुछ सबसे अधिक दबाव वाले मुद्दों का समाधान कर सकते हैं। भूखों को भोजन देना, बीमारों को दवा दिलाना, अकाल या और किसी विपत्ति के समय धन, कपड़े, दवाएँ आदि इकट्ठा करके देना, अनाथों और विधवाओं की सहायता करना, अनपढ़ को पढ़ना-लिखना सिखाना, सांप्रदायिकता को दूर करना समाज में शांति बनाये रखना-ये सब समाज-सेवा के ही कई रूप हैं। पुस्तकालय और वाचनालय खोलना, प्रौढ़ों को शिक्षा देना, अछूतों की हालत सुधारना-ये सब समाज सेवा ही हैं। समाज के अंतिम तबके के लोगों तथा गरीब, असहाय व विकलांग व्यक्तियों के लिए की गई छोटी-छोटी सहायताएं डूबते को तिनके का सहारा का काम कर जाती है।

हमारे देश में 30% जनसंख्या आज भी निरक्षर है, जिसके चलते

ये लोग सरकारी योजनाओं तथा कार्यक्रमों का लाभ नहीं उठा पाते तथा तकनीकी दौर में दैनिक जीवन के डिजिटल कार्यों में अनेक परेशानियों का सामना करते हैं, ऐसे लोगों की छोटी-छोटी सहायताओं द्वारा उनको उनका हक दिलाया जा सकता है। सर्वशक्तिमान व्यक्ति भी यह दावा नहीं कर सकता कि उसने कभी किसी का सहयोग नहीं लिया अथवा भविष्य में नहीं लेगा। हमें जीवन निर्वाह के लिए प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से शेष समाज से सहयोग की जरूरत होती हैं। ऐसे में अपने हृदय में भी समाज सेवा के भाव रखकर उपेक्षित, वंचित या पीड़ित व्यक्ति की मदद जरुर करना चाहिए।

समाज सेवा के बारे में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा कि "मरा वह नहीं कि जो जिया न आपके लिए"- वही मनुष्य हैं जो मरे मनुष्य के लिए। मानव सेवा के कार्य में कष्ट जरुर झेलना पड़ता है पर इससे प्राप्त आत्म संतोष का सुख अलग ही प्रकार का होता है। गोस्वामी तुलसीदास ने बहुत ही सुंदर पंक्ति लिखी है- "परहित सरिस धर्म नहीं भाई", अर्थात दूसरों की भलाई से बढ़कर कोई भी धर्म नहीं हैं। हमें प्रकृति से परोपकार के गुणों को सीखकर अपनाना चाहिए। यदि समाज के एक तबके के पास सुख सुविधा हो और दूसरे लोग कष्ट से जीवन यापन कर रहे है तो वह समाज निश्चय ही दुर्गति को प्राप्त होगा।

दुःख की तासीर ही उतनी कष्टदायक होती है कि जो लोग भी सुख सम्पन्न है वे पीड़ितों को दुखी देखकर सुखी जीवन नहीं जी पाते। रोग, गरीबी या प्रताड़ना से युक्त सामाजिक वातावरण में कभी भी सुख समृद्धि का वास नहीं होता है। समाज की खुशहाली में इन बाधकों को तभी दूर किया जा सकता है जब सेवा के उत्कृष्ट रूपों के द्वारा समाज में नवीन क्रांति का आगाज हो सकता है। सेवा करने के लिए सबसे प्रमुख गुणों में सहनशीलता तथा धैर्य का होना परम आवश्यक है, साथ ही ईमानदारी, समर्पण, विनम्रता, आत्मविश्वास, करुणा, दया जैसे विलक्षण गुणों से युक्त व्यक्ति निस्वार्थ भाव से सेवा कर सकता है। निस्वार्थ भाव से की गई सेवा व्यक्ति को नई पहचान प्रदान करती है तथा समाज में समरसता व भाईचारे को बढ़ावा देती है। सेवा के लिए संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले समाज सुधारको में मदर टेरेसा, ज्योतिबा फुले ,स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, राजा राममोहन राय डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, महात्मा गांधी जैसे हजारों महापुरुषों ने अपना जीवन समाज कल्याण तथा उत्थान में लगा दिया।

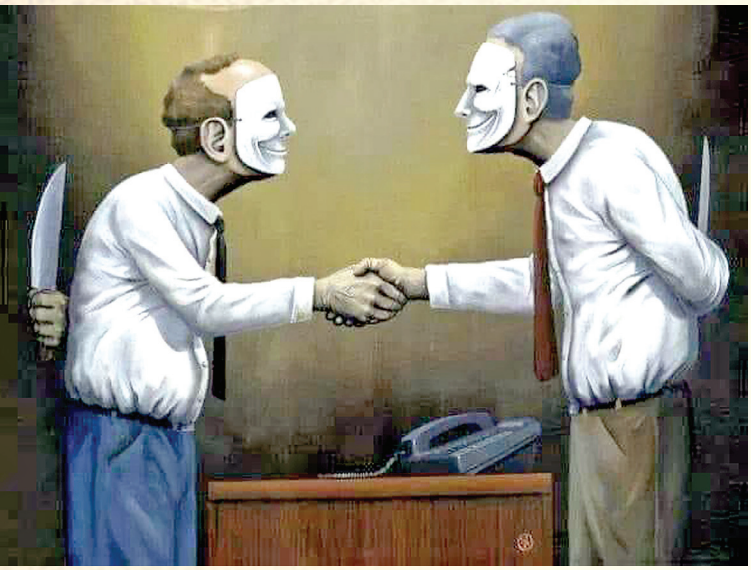
बहुत से लोग आज भी परोपकारी कार्यों के महत्व को नहीं समझते हैं और नकारात्मक नजरिया रखते है। इंसान के विकास में सबसे बड़ी बाधा रुढ़िवादी सोच है। जब तक मनुष्य इस कुंठित विचारधारा से स्वयं को बाहर नहीं निकालेगा, उसमें सार्थक बदलाव की उम्मीद नहीं कर सकते। शहरों से सुदूर इलाकों में अब भी कुछ न कुछ तरीके से इंसान-इंसान से भेदभाव करते नजर आते है, कभी जाति के आधार पर तो कभी रंग-रूप के आधार पर तो कभी कुछ और। एक सामाजिक नागरिक के रूप में हमारा यह दायित्व भी है कि हम समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों को खत्म करने की दिशा में काम करें और लोगों को भी प्रेरित करें। हम सभी को अपने दिल में समाज एवं देश के प्रति कुछ करने का जज्बा रखना चाहिए। जब भी सेवा का मौका मिले हमें आगे आकर उसे भुनाना चाहिए। व्यक्तिगत सुख और स्वतंत्रता को पीछे रख कर समाज सेवा करना एक सामाजिक कार्यकर्ता का आदर्श है। स्वार्थ का त्याग करके मदद करना ही वास्तविक समाज सेवा है। सेवा के बदले में कुछ उम्मीद करना अच्छा विचार नहीं है। समाज से दुःख, शोक, गरीबी, रोग, अन्याय, दमन, शोषण आदि को दूर कर अंधविश्वास और पूर्वाग्रह से मुक्त स्वस्थ समाज का निर्माण करना प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्ता का कर्तव्य है।

सेवाभावी मनुष्य को सम्मान की नजर से देखा जाता है। पर सेवा करते समय पात्र की जांच अवश्य की जानी चाहिए। जिस व्यक्ति की मदद कर रहे है वाकई में उसे मदद की आवश्यकता नहीं है तो उसे हम सेवा नहीं कह सकते हैं। सामूहिक कल्याण के भाव से दीन दुखियों, घायलों, अपंगो और अनाथों की हर सम्भव मदद करनी चाहिए। सामाजिक कार्यों से जुड़े रहने से कई सकारात्मक परिणाम निकलकर आते हैं, जिसका प्रभाव व्यक्तिगत स्तर के साथ-साथ और सामाजिक स्तर पर भी होता है। लोग अपने जीवन में अधिक आत्मीय संतुष्टि अनुभव करते हैं। लोगों में अपनेपन को बढ़ाकर समाज को एक सूत्र में बांधने का काम करता है। हालांकि सामाजिक सेवाकर्मी अक्सर समस्याओं के अल्पकालिक समाधान पर ही ध्यान केंद्रित कर पाते हैं क्योंकि दीर्घकालिक प्रभावों के लिए लंबे समय तक लोगों का विश्वास बनाये रखने में पैसों एवं संसाधनों का काफी जरुरत पड़ता है। समाज सेवा किसी भी सम्प्रदाय के संपन्नता के लिए नितांत आवश्यक है जिसमें दुनिया के सभी जरूरतमंद लोगों को न्यायपूर्ण और न्यायसंगत माहौल उपलब्ध कराकर अपना सहभागिता सुनिश्चित करते हैं। समाज सेवा कठिनाइयों से भरा एक महती कार्य है, पर यह हमेशा एक निस्वार्थ कार्य होना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा हैं "सेवा धरम कठिन जग जाना।"



सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक

दोस्त के लिबास में



कुछ इस तरह के लोगों को
मैंने अपने करीब पाया,
थे लिबास दोस्ती के
पर उनमें रकीब पाया।

जब भी मिला कोई मुझसे
बातों में उसकी रस घुला पाया,
वक्त के साथ दिए जख्म उसके
कभी भी भर न पाया।

संबंधों को कुचलकर सारे
ऐसा उसने क्या पाया,
ये कैसी दौड़ है इसका,
भेद कोई जान न पाया।

इस धरा पर जीवन हमने
एक निमित्त है पाया,
ये बात भूल गए हैं सारे
साँसे सभी ने सीमित है पाया।



संगीता साटकर
पर्यवेक्षक

समय का मौसम

कैसा समय आने लगे है,
समय समय को भूलने लगे है।
पानी का कानून कुछ और ही है,
फिर भी तालाब में आग का मेला है।
तरक्वानों से पैसे चलने लगे है,
शायद पेड़ के पत्तो ने छुट्टी ली है।
आजकल दिन के साथ रात की दोस्ती हुई है,
इसलिए उजालो ने फिक्र करना छोड़ दिया है।
वैसे बरसात भी किसी के याद में बेगाना है,
इसे देख कर खेत के फसल शरमा रहे है।
शहर के कारखानों ने हवाओं को बदनाम किया है,
सांसों ने अपनी पहचान इसीलिए खो रखी है।
किसी ने शहरो के मुस्कान को बेच दिया है,
हरियाली का जादू ने अकेले बैठना सीख लिया है।
रंगीन नजरों ने नदियों को अँधा बना दिया,
जैसे वफादारी ने वफादार को बेईमान बना दिया।
किस्मत के रास्तों में किसी ने ताजा काटें बिछा दिया,
भविष्य का समय प्रदुषण के आलस में डूब गया है।





प्रसेनजित दास
लेखालिपिक

स्वाद और संस्कृति का तिलिस्म : वाराणसी

गंगोत्री से उत्पन्न हुई गंगा का सफर 3000 सालों से आबाद इस शहर से हो कर गुजरता है जिसके पहले संगम पे वरुणा तथा दूसरे संगम पर अस्सी नदी का मेल होता है और इन्हीं दोनों नामों को जोड़कर पैदा हुआ 84 घाटों का यह शहर वाराणसी जिसे काशी और बनारस नाम से भी जाना जाता है। जहां इसी काशी ने जन्म दिया कबीरदास और रविदास जैसे अनेक संतों को वहीं इसी काशी में तुलसीदास ने रचे राम चरित मानस के दोहे, प्रेमचंद की इस वाराणसी मे गंगा जामुनी तहजीब की शहनाई बजाई उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने तो इसी नगरी से पूरे विश्व में गुंजा गौतम बुद्ध का धम्मचक्रपरवर्तन का पहला उपदेश, तो आइए जानते है सुर-संगीत, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, साड़ी और स्वाद के इस बेजोड़ संगम से रौशन इस काशी के कुछ बेहतरीन नजारों के बारें में –

काशी विश्वनाथ मंदिर

12 ज्योतिर्लिंगों में से एक भगवान शिव के इस हजारों साल पुराने मंदिर की आज की सूरत मराठा साम्राज्य की महारानी अहिल्या बाई ने बनवाई थी जिसके चतुर्भुज आकार और प्याजनुमा गुंबद पर 1000 किलो सोने की परत महाराज रणजीत सिंह ने चढ़वाई। यहाँ भगवान शिव को विश्वनाथ अर्थात ब्रह्मांड के स्वामी के रूप में पूजा जाता है ।

गंगा स्नान और काशी विश्वनाथ दर्शन के बाद अब बारी है सुबह के नाश्ते की

राम भंडार की कचौड़ी सब्जी वैसे तो राम भंडार नाम से मशहूर ये दुकान ठठेरी बाजार नाम की गलियों में है पर आपको ये दुकान खोजने मे कोई दिक्कत नहीं आएगी क्योंकि गली में जाते ही दुकान से उठती देशी घी की खूशबू आपको खुद ही दुकान की तरफ खींच लाएगी। यह दुकान 1888 ईस्वी से काशी के बाशिंदों को अपना स्वाद परोस रही है। यह आपको देशी घी मे नहा कर निकली पूर्णिमा के चाँद के आकार की गोल कचौड़िया बेहतरीन मसालों से बनी आलू की खूशबुदार, रसेदार सब्जी के ऊपर हरी खट्टी चटनी, लाल मीठी चटनी और उसके ऊपर कसी हुई मूली और गाजर से बनी रंगोली के साथ मिलेगी।

श्री जी मलाईयो

बेहतरीन स्वाद से भरपूर कचौड़ी सब्जी के बाद अब बारी है कुल्हड़ों में कैद जाफरानी बुलबुलों की जिनका दीवाना पूरा बनारस है। कहते हैं मलाईयो की ईजाद काशी की ही देन है, सर्दी के मौसम में ग्वालों का समूह खौलते हुए दूध को गंगा किनारे ओंस की बूंदों से पूरी रात ठंडा करते है जिस वजह से घंटों मथने पर यह जादुई झाग पैदा होता है जिसे बनारस मे 'मलाईयो', कानपुर में 'निमिश', लखनऊ मैं 'माखन मलाई' और दिल्ली में 'दौलत की चाट' कहते है।

ब्लू लस्सी

कचौड़ी गली मे इस दुकान पर लगभग 90 सालों से 150 अलग-अलग जायकों वाली कुल्हड़ों से बाहर झाकतीं हुई ठंडी लस्सी मिलेगी जिसका स्वाद जन्नत का एहसास कराता है।

काशी चाट भंडार

गोदौलिया चौराहे पर स्थित काशी चाट भंडार पर 70 सालों से परोसी जा रही है टमाटर चाट, पालक चाट, पापड़ी चाट, समोसा चाट जैसी हिंदुस्तान की सबसे बेहतरीन चाट। यहाँ की मशहूर टमाटर चाट (कहा जाता है कि जिसकी शुरुआत इसी दुकान से हुई थी) पुरवे में परोसी जाती है जिसके देशी घी और मसालों से उठती खूशबू नथुने से होते हुए मन में हमेशा के लिए समां जाती है।

केशव ताम्बूल भंडार

कहा जाता है कि बनारस आए और पान नहीं खाया तो क्यों बनारस आए। संत रविदास गेट के सामने बनारसी पान को शोहरत दिलाने वाले इस दुकान पर 1966 से मिलतें आ रहे है बनारस की शान बनारसी पान। हरे रंग की चादर में छिपे बैठे गुलाबी कत्थे, गीली मीठी सुपारी, गुलाब और चासनी से बना गुलकंद और सुनहरी चटनी को समेटते हुए जैसे ही मुँह के अंदर रखो लगता है मानो दिन भर की सारी थकान पैरों के रास्ते उतर गई ।

इतने जयकों को चखने के बाद शाम में चलते है उस घाट की तरफ जहां ब्रह्मा ने अश्वमेध यज्ञ के लिए 10 अश्वो की बलि चढ़ाई थी अर्थात दशाश्वमेध घाट। सूरज के विदा लेते ही दशाश्वमेध घाट का भव्य रूप जगमगाने लगता है और पूरा घाट गंगा आरती के लिए भीड़ से पूरी तरह घिर जाता है। आरती शब्द संस्कृत के शब्द आर्तिका शब्द से बना है जिसका अर्थ है अंधेरे को दूर करने वाली रोशनी। यहाँ अंधेरा होते ही गंगा आरती रोशन हो जाती है जहां सात पुजारी जाफरानी रंग के सात तख्तों पर घंटों की धुन पर मंत्रों का जाप करते हुए आरती करते है। गंगा आरती की शुरुआत शंखनाद से होती है उसके बाद यह गंगा आरती पाँच तत्वों से पूरी की जाती है –

सूरा गाय की पुंछ से बने चावन को हांक कर आकाश तत्व, मोर पंख को हिलाते हुए वायु तत्व, सात मंजिला दीपों की इमारत से अग्नि तत्व, गंगा के जल से पानी तत्व और अंत में फूलों की पंखुड़ियों की वर्षा करते हुए पृथ्वी तत्व को शामिल करते हुए गंगा आरती मुकम्मल होती है।



मयंक सिंघानिया
लेखापरीक्षक

डिजिटल इंडिया

भारत सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने वित्तीय समावेशन के साथ-साथ डिजिटल आधारभूत संरचना के उपयोग को बढ़ावा दिया है। हाई स्पीड वाईफाई सहित डिजिटल बुनियादी ढाँचे तक देशव्यापी पहुँच प्रदान करने की योजना ने भारत में डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है। आज का युग तकनीकी युग है। हर छोटे से लेकर बड़े काम में नई नई तकनीकों का इस्तेमाल करके आप अपना काम सरलता से और तीव्रता से कर सकते हैं। इसलिए हर चीज में डिजिटलाइजेशन को महत्व दिया जा रहा है। हमारे देश को डिजिटल रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए एक अभियान डिजिटल इंडिया की शुरुआत हुई, जिसमें सूचना प्रोद्यौगिकी को बल दिया गया है। आज हम सरकार द्वारा चलाए गए इस महत्वपूर्ण अभियान " डिजिटल इंडिया " को समझेंगे।

डिजिटल इंडिया अभियान की आवश्यकता क्यों?

हमारा भारत देश अन्य किसी देश से कम नहीं है, लेकिन फिर भी इसे विकासशील देश का दर्जा दिया है। हमारे देश की जनसंख्या इतनी ज्यादा है और यहां हर व्यक्ति मेहनतकश है, फिर भी देश विकासशील ही क्यों है? दूसरे बड़े देशों की तरह विकसित क्यों नहीं। ऐसा इसलिए क्योंकि हमें मेहनत के साथ-साथ स्मार्टवर्क करना भी जरूरी है, तभी हम तरक्की कर पाएंगे। आज हमारे देश में अमेरिका जैसे बड़े देश से भी अधिक इंटरनेट यूजर्स हैं। लेकिन बहुत से लोग इंटरनेट को सिर्फ मनोरंजन के लिए ही उपयोग करते हैं। इसलिए जरुरत है उन्हें सही राह दिखाने की। जिससे हमारा देश विकसित होने के साथ ही आत्मनिर्भर भी बनेगा।

डिजिटल इंडिया अभियान की शुरुआत

इस अभियान की शुरुआत केंद्र सरकार द्वारा 1 जुलाई 2015 को किया गया। इसके तहत सारे भारत का डिजिटलाइजेशन करके हर छोटे-बड़े शहर और गांव में तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएगी। तथा सभी जरूरी काम डिजिटल पद्धति से ही पूर्ण किए जाएंगे।

इस अभियान के अन्तर्गत तीव्र स्पीड से चलने वाले इंटरनेट की सुविधा भी हर गांव और छोटे कस्बों को पहुंचायी जाएगी। जिससे उनके अधिकतर काम इंटरनेट पर ही हो जाएंगे, उनका समय बचेगा और बार-बार सरकारी ऑफिस नहीं जाना पड़ेगा। इस योजना का जिम्मा मुख्य रूप से संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी को दिया गया है। सरकार ने आधार कार्ड बनवाकर सारे देशवासियों को अपनी एक पहचान दी और अब उसी आधार कार्ड के नंबर से लिंक करके विभिन्न ऑनलाइन कार्य सुरक्षित रूप में पूरे किए जाएंगे, जो कि एक बड़ी उपलब्धि है।

डिजिटल इंडिया अभियान के मुख्य लक्ष्य

इस अभियान का लक्ष्य भारत को हर क्षेत्र में डिजिटलाइजेशन से जोड़कर शक्तिशाली और विकसित देश बनाना है। इसके अलावा भारत के नागरिकों की जरूरत को देखते हुए उसके अनुसार उन्हें डिजिटल सेवाएं प्रदान करना भी इसका लक्ष्य है। इस अभियान के द्वारा सरकार ये भी चाहती है कि सभी नागरिक डिजिटलाइजेशन को अपनाएं और डिजिटल उपकरणों के उपयोग में दक्षता प्राप्त करें ताकि वे पैसों का और वस्तुओं का लेन देन, कागजी काम, सरकारी काम और हर प्रकार के सरकारी कामकाज भी इंटरनेट से ही कर पाएं।

डिजिटल इंडिया अभियान के फायदे

हर घर में – अभियान से हर जगह नई तकनीकों का इस्तेमाल किया जाएगा। हर घर में आय और व्ययसाय का लेखा जोखा करने में, शॉपिंग में, सारे महीने से लेकर साल भर के भी खर्च और आय सम्बन्धी अकाउंटिंग करने में डिजिटल इंडिया अभियान बहुत फायदेमंद रहेगा। इसके अलावा पैसों का ट्रांजिक्शन ऑनलाइन होने के साथ-साथ यूआरआई लिंक से सुरक्षित भी किया जाएगा।

डिजिटल इंडिया अभियान विद्यार्थियों के लिए कौन सा स्कूल और कॉलेज चुनना है इसके लिए, जल्दी और उचित मूल्य पर आसानी से अध्ययन के लिए, जरूरी वस्तुएं और कॉपी, किताबें इत्यादि खरीदने के लिए, स्कालरशिप पाने के लिए, ऑनलाइन अध्ययन में और एप्लीकेशंस भेजने में भी बहुत लाभदायक है।

इससे विद्यार्थियों के खातों में स्कॉलरशिप के धन का वितरण प्रभावी रूप से और तेजी से हो सकेगा। नौकरी और रोजगार में – डिजिटल पद्धति से नौकरी पाना और भी सरल हो जायेगा। आप नौकरी के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं, इसके साथ ही मनचाही फुल टाइम या पार्ट टाइम जॉब की तलाश भी कर सकते हैं।

कई जगह पर ऑनलाइन इंटरव्यू भी रखा जाता है और जॉब से संबंधित अपने सारे डॉक्युमेंट्स, सर्टिफिकेट्स आदि भी ऑनलाइन जमा करवा सकते हैं।

व्यापार और कुटीर उद्योगों में- डिजिटल उपकरणों और पद्धति के उपयोग से व्यापार में आने वाली लेन-देन और भुगतान सम्बन्धी परेशानियां दूर हो जाएंगी। ऑनलाइन ऑर्डर लेकर डिजिटल बिल भी भेजे जा सकते हैं, जिससे व्यापारी और ग्राहक दोनों का समय बचेगा। इससे धोखाधड़ी और फर्जीवाड़ा भी खत्म होगा। जो लोग गृह उद्योग चलाते हैं उनके लिए तो डिजिटलाइजेशन किसी वरदान से कम नहीं है। क्योंकि उन्हें अपने माल के वितरण और प्रचार-प्रसार में परेशानी आती है, परन्तु इस पद्धति से ये सभी कार्य आसानी से ऑनलाइन ही हो जायेंगे। अन्य कार्यों में और कई तरह के सरकारी कामकाज में इस तरीके से बहुत सरलता होती है और धोखेबाज दलाल जो काम करवाने के बहुत से पैसे लेते हैं उनसे छुटकारा मिल जाता



है। विभिन्न कागजात और डॉक्युमेंट्स सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

डिजिटल हस्ताक्षर और मोबाइल बैंकिंग की सेवाएं भी बहुत फायदेमंद हैं। इसके अलावा हर जगह ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन होने से घर बैठे पंजीकरण हो जायेगा।

आज के डिजिटल युग में डेटा गोपनीयता तथा इंटरनेट तक सभी की समान पहुँच स्वच्छ हवा या स्वच्छ पेयजल की तरह है। यह समाज के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक गतिशीलता का एक केंद्रीय स्तंभ बन गया है। जनता के हित में बेहतर होगा कि इस स्तंभ को कानूनों के माध्यम से एक सामूहिक अधिकार के रूप में सुरक्षा दी जाए और बिग डेटा पर कब्ज़ा जमाए बैठी दिग्गज कंपनियों को जवाबदेह बनाया जाए।

डिजिटल इंडिया अभियान के 9 स्तंभ

1. **ब्रॉडबैंड हाईवे** – इसके अंतर्गत करीब ढाई लाख पंचायतों को ब्रॉड बैंड की सुविधा दी जाएगी, ताकि सिर्फ शहर ही नहीं बल्कि हर गांव भी इस अभियान को अपना सके।
2. **मोबाइल कनेक्टिविटी के लिए सार्वभौमिक पहुँच** – इसके तहत सभी जगह पर जहां नेटवर्क प्रॉब्लम है वहां पर नए नेटवर्क टावर लगवाए जाएंगे, जिससे किसी को भी इंटरनेट कनेक्शन से संबंधित असुविधा ना हो।
3. **पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम**- जहां पर भी सार्वजनिक सुविधाएं दी जाती हैं जैसे की बैंक, डाक विभाग, जन सेवा केन्द्र इत्यादि में तीव्र स्पीड वाला इंटरनेट कनेक्शन प्रदान करना।
4. **ई-गवर्नेंस प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार**- जितने भी सरकारी कामकाज के कार्यालय हैं उनमें ज्यादातर काम ऑनलाइन किया जाएगा और लेन-देन की प्रोसेस को भी ऑनलाइन ही किया जाएगा।
5. **ई-क्रांति सेवाओं की इलेक्ट्रानिक डिलीवरी**- देश में हर जगह पर इलेक्ट्रॉनिक और संचार प्रौद्योगिकी को फैला देना और स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग आदि हर क्षेत्र में एक क्रांति की तरह इसका प्रसार करना।
6. **सभी के लिए सूचना**- कोई भी सरकारी स्कीम हो या फिर प्राइवेट स्कीम हर स्कीम की सारी जानकारी इनकी ऑनलाइन वेबसाइट्स के द्वारा से दी जाएगी और इसके साथ ही एप्लिकेशन प्रोसेस भी ऑनलाइन ही रखा जाएगा।
7. **इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण**- पहले हमारे देश में अधिकतर इलेक्ट्रॉनिक उपकरण विदेशों से मंगवाए जाते थे, लेकिन अब हमारे यहां ही इन उपकरणों का निर्माण किया जा रहा है। जिससे हमें बहुत फायदा होगा और साथ ही कई लोगों को जीवन निर्वाह के लिए काम भी मिलेगा।
8. **नौकरियों के लिए आईटी**- देश में कई बेरोजगार इंजीनियर हैं, उन्हें अच्छी नौकरी दिलाने के लिए आईटी को बढ़ावा दिया जा रहा है और बड़ी आईटी कंपनियां अपनी ब्रांच छोटी जगहों पर भी संचालित कर रही हैं। इससे कई लोगों को नौकरी मिलेगी और साथ ही टेक्नोलॉजी को प्रोत्साहन भी मिलेगा।
9. **अर्ली हार्वेस्ट कार्यक्रम**- इसके तहत केंद्र सरकार देश के कई ऑफिसों में फिंगरप्रिंट लेकर काम करती हैं। ऐसे सॉफ्टवेयर भी बनाए जा रहे हैं, जिससे कामकाज में आसानी होगी।

डिजिटल इंडिया के दौरान इन एप्लीकेशंस की भी शुरुआत हुई –

1. मायगॉव मोबाइल एप्लीकेशन

ये एप्लिकेशन सारे नागरिकों के लिए शुरू की गई है, इसके अंतर्गत सभी लोग अपने विचार और सुझाव सभी से बांट सकते हैं। इसके अलावा वे किसी भी समस्या के लिए अपने सुझाव दे सकते हैं।

2. स्वच्छ भारत अभियान एप्लीकेशन

इस एप्लिकेशन को सभी नागरिकों को स्वच्छता को लेकर जागरूक बनाने के लिए शुरू किया गया है। इसमें स्वच्छता अभियान के लिए जो विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं, उनकी भी पूरी जानकारी दी गई है।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए कई करोड़ रुपए खर्च हो गए हैं। अतः हमारा भी फ़र्ज़ बनता है कि हम इसकी सफलता में सहयोग करते रहे, ताकि हमारा देश तरक्की के सीढ़ियों को पार कर सकें और हर व्यक्ति डिजिटलाइजेशन से जुड़े। हमें अशिक्षित और पिछड़े लोगों को डिजिटल प्रक्रिया की जानकारी देने में उनकी मदद करनी होगी और ऐसे लोगों को ज्यादा से ज्यादा इस अभियान से जोड़ना होगा, ताकि उनके साथ हो रहा अन्याय और धोखाधड़ी समाप्त हो और वे सभी देश के विकास में सहायक बन पाएं।



वेद प्रकाश
भाई : श्री प्रेम प्रकाश यादव (डी.ई.ओ.)

नीली अर्थव्यवस्था

नीली अर्थव्यवस्था का तात्पर्य उस अर्थव्यवस्था से जहाँ हम समुद्र के पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण को केन्द्र में रखकर समुद्र के संसाधनो का उपयोग कर रोजगार, आर्थिक विकास और आजीविका प्राप्त करते हैं। इस अर्थव्यवस्था को ही मरीन अर्थव्यवस्था, तटीय अर्थव्यवस्था और महासागरीय अर्थव्यवस्था के नाम से भी जाना जाता है। हाल ही में भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने भारत के लिए नीली अर्थव्यवस्था नीति के प्रारूप को जारी किया और स्वयंसेवी संस्थाओं, शिक्षा जगत तथा नागरिकों सहित विभिन्न हितधारकों से सुझाव भी आमंत्रित किया।

जैसा कि हम जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस समाज में रहने के लिए उसे एक व्यवस्था की आवश्यकता होती हैं और उस व्यवस्था का नाम है अर्थव्यवस्था। इस समाज उत्पादन, वितरण एवम खपत की सामाजिक व्यवस्था को ही अर्थव्यवस्था कहते हैं। आज भारत की कुल अर्थव्यवस्था 2023 में 3.75 ट्रिलियन डालर तक पहुंच गई है, जो 2014 में लगभग 2 ट्रिलियन डॉलर की थी। इस तरह भारत दुनिया की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में से 5 वीं सबसे बड़ी बन गयी गई। इस 3.75 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में नीली अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा योगदान रहा है। जैसा कि हम जानते हैं कि भारत तीन ओर समुद्र से घिरा है। भारत के 29 राज्यों में नौ राज्य अपनी सीमा समुद्र के साथ साझा करते हैं। इस तरह भारत का कुल समुद्री सीमा 7516.6 KM का है। देश के भूगोल में 1380 द्वीप समूह शामिल हैं। लगभग 199 बंदरगाह जिनमें प्रत्येक वर्ष लगभग 1400 मिलियन टन कार्गो कार्य करने वाले 12 प्रमुख बंदरगाह है। भारत के इस बहुमूल्य संसाधन का हम यदि सही दिशा में इस्तेमाल करते है तो भविष्य में 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनने में हमारी यह विशाल समुद्री तट महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

उद्देश्य

इसका मुख्य उद्देश्य भारत के सकल घरेलू उत्पाद को नीली अर्थव्यवस्था के योगदान को बढ़ाना, तटीय लोगों की जिंदगी को सुधारना, आजीविक बढ़ना, समुद्री जैव विविधता को संरक्षित रखना, तथा समुद्री क्षेत्रों, संसाधनों आदि को बनाये रखना।

यह व्यवस्था काम कैसे करेगी ?

इस अर्थव्यवस्था में सबसे पहले एक समुद्र आधारित व्यावसायिक रूपरेखा तैयार की जाती है जिसमें मुख्य रूप से नये बंदरगाहों को विकसित किये जाते हैं और पुराने बंदरगाहों का आधुनिकरण और नवीनीकरण किया जाता है ताकि समुद्री व्यापार ज्यादा से ज्यादा हो सके। समुद्र के जरिये व्यापार का समान भेजना ट्रकों, ट्रेन, या अन्य साधनों के मुकाबले पर्यावरण की दृष्टि से बेहद फ़ायदेमंद साबित होता है। इसके अलावा इस नील अर्थव्यवस्था में खनिज पदार्थों और समुद्री उत्पादों पर भी ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

अन्य देशों में नीली अर्थव्यवस्था

अनेक देशों ने अपनी नीली अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के प्रयास किए हैं। उदाहरण के लिए ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस तथा नॉर्वे ने बजट के साथ समर्पित रूप से राष्ट्रीय समुद्रीय नीति विकसित की है। कनाडा और ऑस्ट्रेलिया ने इस संदर्भ में कानून बनाये हैं।

चुनौतियां

नीली अर्थव्यवस्था को बल देने के लिए बजट में इस पर विचार की चर्चा आवश्यक है किंतु देश के मौजूदा क्षेत्र से संबंधित कानून विनिमय एवं नियम वर्षों पुराने हैं। महासागर तेजी से प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं। अतः इन्हें प्रदूषण से बचाने के लिए हमें समय-समय पर अच्छे नियम कानून बनाने की आवश्यकता है तभी हम नील अर्थव्यवस्था का सही लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हमें इस क्षेत्र में नए-नए कानून का नियम बनाकर इसे जमीनी स्तर पर लागू भी करने पड़ेंगे अन्यथा इन नियमों का कोई लाभ नहीं होगा। समुद्र के प्रदूषण में मुख्य कारक प्लास्टिक है। इसका जीवन चक्र बहुत बड़ा होता है। यदि इसे कम नहीं किया गया तो यह समुद्री खाद्य श्रृंखला में शामिल हो सकता है, जिसका प्रभाव समस्त समुद्री जैव विविधता पर पड़ेगा और समस्त समुद्री जीव नष्ट होने लगेंगे। इसलिए हमें समुद्रों में फ़ेके जाने वाले प्लास्टिक को कम करने पर भी ध्यान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त जहाज से होने वाले तेल रिसाव को भी महासागरीय जैव विविधता पर खतरे के रूप में देखना चाहिए और इस पर नियंत्रण करना चाहिए।

निष्कर्ष

महासागर ईश्वर का मनुष्य के लिए एक अद्भुत संपदा से भरा भंडार रूपी वरदान है, जिसका उपयोग मनुष्य प्राचीनकाल से करता चला आ रहा है। वर्तमान में कई देश इस महासागरीय संसाधनों का उपयोग कर अपनी अर्थव्यवस्था को दिन-दोगुनी रात-चौगुनी बढ़ा रहे हैं इसलिए भारत को भी इस नीली अर्थव्यवस्था पर बल देना चाहिए ताकि महासागरीय संसाधनों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जा सके। भारत यदि कुशल अवसंरचना के विकास द्वारा महासागरीय संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम होता है, तो यह क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था में निश्चित ही एक प्रमुख योगदान हो सकता है।



शिव शंकर गोरे
कनिष्ठ अनुवादक

इंसान तू है एक दरिंदा जानवर

मैंने खुदा की बनाई इस कायनात में जानवर तो बहुत देखा, पर इंसानी शक्ल में ऐसे दरिंदे जानवर शायद ही कभी देखा।
मैंने मासूम बच्चियों को हवस का शिकार बनाते किसी जानवर को आज तक नहीं देखा।
पर मैंने इंसान को ऐसी हैवानी हरकत करते न जाने कितनी दफे देखा।
मैंने मजहब और फिरके के नाम पर बेगुनाहों का कत्लगारत करते किसी जानवर को आज तक नहीं देखा।
पर इंसानी शक्ल में दरिंदे जानवरों को ऐसे गुनाह करते कई दफे देखा।
मैंने खुदा के नाम पर जानवरों को औरतों का आबरू लूटते कभी नहीं देखा,
पर मैंने इंसान की शक्ल में दरिंदे जानवरों को ऐसी घिनौनी हरकत करते कई बार देखा।
हर मजहबी दीवान यह बतलाता है कि हर इंसान, आदम और हव्वा का औलाद है।
पर उसी मजहब के हिफाजत के बिना पर
जब किसी मासूम का कत्ल करें, तो वह रिश्ते में तेरा भाई
और किसी औरत का आबरू लूटे, तो वह रिश्ते में तेरी बहन है।
मैंने खुदा की बनाई इस कायनात में जानवर तो बहुत देखा,
पर इंसानी शक्ल में ऐसे दरिंदे जानवर शायद ही कभी देखा।
इंसानी तारीख भरी पड़ी है, तेरे ऐसी ही गुनाहों की दास्तान से।
पर तब भी तू शर्माता है, अपने को जानवर कहलाने से।
इत्तेफाक से मैं भी इंसान हूं, इसी खातिर मैं शर्मिंदा हूं।
और ताउम्र शर्मिंदा रहूंगा,
जब तक मुझ पर इंसान होने का तमगा लगा रहेगा।





एक औरत का दर्द

ऐ खुदा मैं छोड़ चली तेरी बनाई खूबसूरत
जहां से अलविदा कह कर ।
क्योंकि इस जहां में अब मेरा आबरू महफूज
नहीं रहा।



राय चौधरी बस्तरिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अंग्रेजी ऑक्सफोर्ड डिक्शनरीज़ में उपस्थित कुछ हिंदुस्तानी शब्द

लोनवर्ड्स के प्रचलन या भाषाओं के बीच शब्दों की अदला-बदली के कुछ मुख्य कारण हैं , जैसे:-

- एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय शब्दों के मायने बदल जाते हैं या वह अपनी ख़ूबसूरती खो देते हैं
- कुछ अविष्कारों या प्रचलित चीज़ों के एक निश्चित स्थान से संबंधित होने की वजह से उनके लिए सिर्फ उसी भाषा में शब्द उपलब्ध होता है
- अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त संबोधनों को बोलने का तरीका बदलने से वह उतने प्रभावशाली नहीं रहते

इसीलिए समय-समय पर ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरीज़ अनेक भाषाओं से शब्दों का चयन करके उन्हें अपनी सर्वमान्य अंग्रेज़ी शब्दावली का हिस्सा बनाती रहती है। ऐसे ही कुछ भारतीय शब्दों के बारे में हम बात करेंगे।

1. किला

1761 में ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरीज़ का हिस्सा बनने वाला शायद यह पहला हिंदुस्तानी शब्द था, जिसे अंग्रेज़ी शब्दों के बीच जगह मिली। सत्रहवीं सदी में भारत के विभिन्न राज्यों में बहुत-सी किलानुमा इमारतें थीं और 'किला' का प्रयोग बहुत आम था। शायद इसीलिए इसे इतनी वरीयता दी गयी होगी।

2. सूर्य नमस्कार

सूर्य नमस्कार एक योग मुद्रा है। इसके नाम का शाब्दिक अनुवाद शताब्दियों से चले आ रहे इस शब्दांश का उतना अच्छा चित्रण शायद ही कर पाएगा। यहाँ आपको बता दें – 'नमस्कार' अलग से भी डिक्शनरी में समाहित है, क्योंकि इसका अंग्रेज़ी समानार्थी मिलना भी मुश्किल ही है।

3. जुगाड़

जुगाड़ करने में भारतीय माहिर होते हैं, यह तो जग-विख्यात है। यह शब्द अपने आप में जितना नायाब है, उतना ही कठिन इसके आंग्ल समक्ष को ढूंढना। जुगाड़ का अर्थ होता है कम संसाधनों में किसी काम को अस्थायी रूप से करने के लिए निकाला गया तरीका।

4. गुलाब जामुन

भारतीय खाद्य व्यंजनों का ज़ायका उनके नाम के साथ जुड़ा हुआ है और अनुवाद से इसका मज़ा कम होना तो तय है। गुलाबजामुनों की बढ़ती प्रसिद्धि के कारण यह शब्द अब कई देशों में बोला जाता है। चाशनी में डूबे इन मीठे और स्वादिष्ट रसगुल्लों को नज़रअंदाज़ करना बहुत मुश्किल है।

5. चमचा

यद्यपि 'चमचा' शब्द मूलतः बड़ी चम्मच के लिए इस्तेमाल होता है, पर आजकल भारत में इस शब्द का प्रयोग चापलूसी करने वाले व्यक्ति को इंगित करने के लिए अधिक होने लगा है। जहाँ अंग्रेज़ी में आपको अलग-अलग प्रकार की चम्मचों के नाम आसानी से मिल जाएंगे, चापलूस का इतना अच्छा और बोलने में सुगम पर्यायवाची शायद ही मिलेगा। ऐसे में इसका ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में दिखाई देना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

6. नमकीन

आलू भुजिया और सेवों से शुरू करके आप भारत में बिकने वाली नमकीनों की सूची तैयार करें तो उसमें सौ से अधिक नाम आसानी से जोड़े जा सकते हैं। स्नैक्स या जल-पान के रूप में खायी जाने वाली इन नमकीनों का स्वाद तो लाज़वाब है ही, इनका नाम भी उतना ही अच्छा है। इसीलिए आपको ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरीज़ में भी नमकीन का अर्थ आसानी से मिल जाएगा।

7. एकदम

सितम्बर 2017 में ऑक्सफ़ोर्ड ने 'एक दम' को क्रिया विशेषण की तरह शब्दकोष में शामिल किया है। एकदम सही किया न?

8. बस

'बस' शब्द का अर्थ इसके वाक्य-प्रयोग के साथ बदलता है। कहीं झुंझलाहट, कहीं प्रतिकार, कहीं औपचारिकता, तो कहीं गुस्से के भाव को बखूबी प्रदर्शित कर सकने वाले इस शब्द के ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में जुड़ने से लोगों को उनकी भावनाएं व्यक्त करने में आसानी होगी।

9. चूड़ीदार

भारतीय पोशाकों में चूड़ीदार पाजामों के लिए अंग्रेज़ी शब्द ढूंढना एक टेढ़ी खीर है। साथ ही ऐसा करने से इसका शब्दार्थ समीकरण भी खराब हो जाता। इसीलिए, आपको अब इसका अनुवाद ढूंढने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

10. उद्योग

उद्योग, यानी व्यापार। विदेशों में रह रहे भारतीयों के व्यापार करने की क्षमताओं और प्रवृत्ति के कारण मशहूर हुए इस शब्द ने 1945 में ही ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरीज़ में अपनी जगह बना ली थी।



वाय. जवाहर
पर्यवेक्षक

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक आज के समय में हमारी जरूरत बन गई है, इससे लगभग सभी लोग परिचित हैं, यह एक ऐसी तकनीकी तथा विज्ञानात्मक क्षेत्र है जिसके द्वारा कंप्यूटर और मशीनें व्यक्तिगत सोच, निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने और सीखने की क्षमता प्राप्त करती हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने हमारे जीवन को विभिन्न तरीकों से प्रभावित किया है।

सकारात्मक प्रभाव

विज्ञान और तकनीक का विकास: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में बहुतायती विकास को प्रोत्साहित किया है। स्वचालित मशीनों और रोबोटिक तकनीकों का उपयोग अब विभिन्न उद्योगों में हो रहा है, जो समय और श्रम को कम कर रहा है।

स्वास्थ्य सेवा: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने चिकित्सा विज्ञान को भी प्रभावित किया है। डॉक्टरों के लिए AI आधारित उपकरणों का उपयोग रोगी का निदान और उपचार करने में मदद करता है। इससे रोगियों को अधिक सुरक्षित और उच्च-तकनीकी चिकित्सा सुविधाएं मिलती हैं।

शिक्षा: शिक्षा के क्षेत्र में भी AI के प्रयोग से बदलाव हुआ है। शिक्षकों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित साधन छात्रों को अधिक समझाने, उनके संदेहों का समाधान करने और उनके शैक्षणिक विकास को ट्रैक करने में मदद करते हैं।

व्यापार: AI का उपयोग मार्केटिंग और खुदरा व्यापार में भी किया जाता है। विज्ञान और ग्राहकों के पसंद के आधार पर उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करने में AI एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्वचालित गाड़ियाँ : AI ने आगामी युग में स्वचालित गाड़ियों के विकास को गति प्रदान की है। ये गाड़ियाँ सुरक्षित और आवाज-हीन होती हैं, जो यातायात को सुरक्षित और अनुकूल बनाती हैं।

रोजगार सृजन: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास से रोजगार के नये अवसर सृजित हुए हैं। AI विशेषज्ञ, डेटा साईंटिस्ट और रोबोटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर के अवसर मिले हैं।

नकारात्मक प्रभाव

रोजगार का खतरा: AI और रोबोटिक्स के विकास से कुछ रोजगारों को खतरा है। कुछ टेक्नोलॉजी आधारित कार्यों को AI के विकास के कारण मशीनों के द्वारा स्वचालित किया जा सकता है, जिससे लोगों को नौकरी से निकालने की संभावना है।

यातायात और असुरक्षा की चिंता : स्वचालित गाड़ियों और रोबोटिक



तकनीकों का उपयोग संचार, यातायात और अन्य क्षेत्रों में भी हो रहा है। इसके साथ ही उनके संचार और सांद्रता की समस्याएं भी बढ़ रही हैं, जिससे लोगों को असुरक्षित महसूस हो सकता है।

गोपनीयता का ध्वंस : AI के उपयोग के क्षेत्र में एक बड़ी समस्या गोपनीयता का ध्वंस है। यह संबंधित डेटा के साथ जुड़े संदेहों को उत्पन्न कर सकता है और व्यक्तियों के निजी जीवन को प्रभावित कर सकता है।

कार्य के लिए मानसिक स्वास्थ्य : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अधिक तकनीकी तरीकों के उपयोग के कारण कुछ लोग तनाव और चिंता का शिकार हो सकते हैं। इसका कारण हो सकता है कि वे कंप्यूटर और रोबोटिक तकनीकों के बीच खुद को असमंजस में पाते हैं।

इंसानियत को खतरा : विज्ञान फिक्शन फिल्मों में दिखाए गए तर्कों के मुताबिक, AI और रोबोटिक्स का उपयोग भविष्य में इंसानियत के लिए खतरा बन सकता है। ऐसे मामूली सी बातें जैसे विश्वासघात, संघर्ष और युद्ध भी AI तकनीक के द्वारा बढ़ सकते हैं।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने वास्तविकता में हमारे जीवन को बहुतायती प्रभावित किया है। इसके सकारात्मक प्रभावों में विज्ञान और तकनीक का विकास, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और खुदरा व्यापार का विकास शामिल है। इसके साथ ही नकारात्मक प्रभावों में रोजगार का खतरा, यातायात और असुरक्षा की चिंता, गोपनीयता का ध्वंस, कार्य के लिए मानसिक स्वास्थ्य और इंसानियत का खतरा शामिल है। इसलिए, हमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास के साथ उसके नकारात्मक प्रभावों को समझकर सावधान रहना आवश्यक है। हमें सकारात्मक रूप से AI का उपयोग करके इसके लाभों का आनंद उठाना चाहिए, लेकिन इसके संबंधित चुनौतियों और जिम्मेदारियों का भी सम्मान करना जरूरी है।



नीरज कुमार
लेखापरीक्षक

महा प्रतापी राजा महाराणा प्रताप

वियतनाम विश्व का एक छोटा सा देश है। जिसने अमेरिका जैसे बड़े बलशाली देश को झुका दिया था। लगभग 20 वर्षों तक चले युद्ध में अमेरिका पराजित हुआ। अमेरिका पर विजय के बाद वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष से एक पत्रकार ने एक सवाल पूछा..

जाहिर सी बात है कि सवाल यही होगा कि आप युद्ध कैसे जीते या अमेरिका को कैसे झुका दिया?

उनके द्वारा दिए गए उस प्रश्न के उत्तर को सुनकर आप हैरान रह जायेंगे और आपका सीना भी गर्व से भर जायेगा। उनके द्वारा दिया गया उत्तर था– सभी देशों में सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका को हराने के लिए मैंने एक महान व श्रेष्ठ भारतीय राजा का चरित्र पढ़ा और उनकी जीवनी से मिली प्रेरणा व युद्धनीति का प्रयोग कर हमने सरलता से विजय प्राप्त की। आगे पत्रकार ने पूछा.... "कौन थे वो महान राजा?"

वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष ने खड़े होकर जवाब दिया... "वो थे भारत के राजस्थान में मेवाड़ के महाराजा महाराणा प्रताप।" महाराणा प्रताप का नाम लेते समय उनकी आँखों में एक वीरता भरी चमक थी। आगे उन्होंने कहा- "अगर ऐसे राजा ने हमारे देश में जन्म लिया होता तो हमने सारे विश्व पर राज किया होता"

कुछ वर्षों के बाद उस राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु हुई तो जानिए उसने अपनी समाधि पर क्या लिखवाया- "यह महाराणा प्रताप के एक शिष्य की समाधि है !!"

कालांतर में वियतनाम के विदेशमंत्री भारत के दौरे पर आए थे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार उन्हें पहले लाल किला व बाद में गांधीजी की समाधि दिखलाई गई।

ये सब देखते समय उन्होंने पूछा... "मेवाड़ के महाराज महाराणा प्रताप की समाधि कहाँ है?"

तब भारत सरकार के अधिकारी चकित रह गए और उन्होंने वहाँ उदयपुर का उल्लेख किया।

वियतनाम के विदेश मंत्री उदयपुर गये और महाराणा प्रताप की समाधि के दर्शन किये। समाधि के दर्शन करने के बाद उन्होंने समाधि के पास की मिट्टी उठाई और उसे अपने बैग में भर लिया। इस पर पत्रकार ने मिट्टी रखने का कारण पूछा तो उन विदेशमंत्री महोदय ने कहा, "यह मिट्टी शूरवीरों की है। इस मिट्टी में एक महान राजा ने जन्म लिया है, ये मिट्टी मैं अपने देश की मिट्टी में मिला दूंगा, ताकि मेरे देश में भी ऐसे ही वीर पैदा हों।"

शायद हम भारतवासी महाराणा प्रताप जैसे महान राजा के बारे में न जानकार अपने इतिहास से अनभिज्ञ हैं। हमने भारत के महान

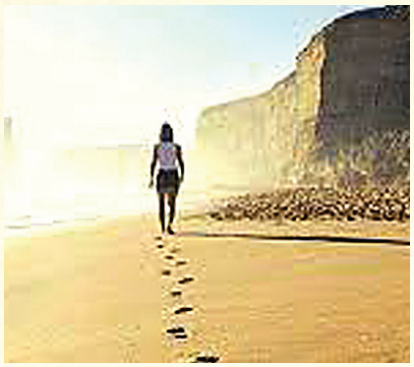


राजाओं एवं योद्धाओं के शौर्य और पराक्रम को भुलाकर उनके साथ अन्याय किया है। आजादी के अमृत काल में भावी पीढ़ी को इतिहास के महापुरूषों के पराक्रम की जानकारी देकर उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली देने का समय है ।



सुजित मंडल
कल्याण सहायक

स्वाभिमान और आत्मसम्मान



आपने भी देखा होगा, बड़े शहरों में सार्वजनिक स्थलों पर कुछ भिखारी अपने कटोरे में साधारण बॉल पेन रिफिल कैंसिल पॉकेट साइज कांगा या अन्य कोई छोटी मोटी चीजें रख कर बैठते हैं। एक सज्जन भिखारी के कटोरे में 2 का सिक्का डालकर वहीं खड़े-खड़े उसके बारे में सोचने लगे और कुछ ही समय बाद वह आगे चलने को मुड़ते ही भिखारी बोला : बाबू साहब आपने 2 का सिक्का तो कटोरा में डाल दिया पर वही खड़े रहे। पर उसमें राखी पेंसिल या रिफिल आपने नहीं ली आपको जो पसंद है उठा लीजिए साहब। सज्जन बोले- भाई मैंने तो भिखारी समझ कर तुम्हें सिक्का दिया है। भिखारी बोला : नहीं बाबू साहब उसके बदले कुछ तो ले लीजिए भले ही 50 पैसे की हो अब वहां सज्जन असमंजस में पड़ गया कि वह भिखारी है या दुकानदार ? और उसकी ओर मुस्कुराते हुए देखने लगे.. भिखारी बोला साहब हालात ने मुझे भिखारी जरूर बना दिया है लेकिन थोड़ा सा आत्मसम्मान अब भी बचा है अगर आप सिक्के के बदले कुछ भी ले लेंगे तो मुझे कम से कम इतना संतोष रहेगा कि भिखारी होने के बावजूद मैंने अपना स्वाभिमान नहीं खोया है। यह सुनकर उस सज्जन की आंखें भर आई उन्होंने अपने पर्स से ₹ 100-100 के दो नोट निकालकर उस भिखारी के हाथ में दे दिए और कटोरी में रखा सारा सामान जो ₹50 से ज्यादा मूल्य का नहीं था, लेकर उससे पूछा- भैया ₹200 कम तो नहीं है। वह भिखारी कृतज्ञ होकर रुंधे कंठ से बोला- "साहब मैं आपका शुक्रिया किन शब्दों में अदा करूं आपने तो दरिद्रनारायण के रूप में आकर मेरे स्वाभिमान को फिर से ऊंचा कर दिया है यह तो मेरा जीवन बदल देगा। मैं आज ही इन रुपयों से सुबह और शाम का अखबार बेचना शुरू कर दूंगा और फिर भिखारी बनकर कभी नहीं जीऊंगा।" प्रत्येक मनुष्य में आत्मसम्मान की भावना होती है। किसी में कम तो किसी में ज्यादा। एक संत ने मुझे बताया यह जीवन बार-बार नहीं मिलता है। अब समय है मनुष्य उनकी चीज को पकड़े जो उसके भीतर है और फिर उसे समझने की कोशिश करें। अपने हृदय की प्यास बुझाएं ताकि जीवन में शांति आ सके। इसका सार यह है कि हम पहले खुद को जाने, अपनी पहचान करें और फिर खुद को सही रास्ते पर लाकर आनंद से जिएँ।



मोहम्मद ज़फ़र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



धड़कन

धड़कन की धुन सुनो, जीवन की मिसाल है,
सांसों की गहराई में, एक नया ख्वाब है।
रिश्तों की गहराई में, धड़कती हैं धड़कन,
जब सब कुछ छोड़कर भी, साथ निभाए विश्वास है।
जीवन की संगीनी, धड़कन की धुन है,
खुशियों के तार से, सभी अलंकार छुपे हैं।
दर्द और दिल की दास्ताँ, धड़कन में बसी है,
सबको सुनाती है यह, जीवन की कहानी।

धड़कन की धुन सुनो, जीवन की मिसाल है,
सांसों की गहराई में, एक नया ख्वाब है।
खुशियों का संगम है, धड़कन की मिठास है,
विश्वास और सम्मान से, जीवन का सार है।
आँखों की गहराई में, बसी है सच्चाई,
धड़कन की धुन सुनो, समझो जीवन की राही।
धड़कन की धुन सुनो, जीवन की मिसाल है,
सांसों की गहराई में, एक नया ख्वाब है।



नीरज कुमार
लेखापरीक्षक

नरम बिस्तर में वैज्ञानिक विचार

हमने भौतिकी विषय लिया ही इसलिए था ताकि वैज्ञानिक बनकर कोई बढ़िया सी चीज खोज निकालें, लेकिन इसके सिद्धांतों के बंडल हमारे बुद्धि-छिद्रों से ज्यादा मोटे साबित हुए। यह भी कह सकते हैं कि ऊपर वाले ने हमारे दिमाग की भौतिक शास्त्र धारिता बहुत कम सेट कर रखी थी। बात अभी भी समझ न आ रही हो तो समझिए कि हमारी समझ भी भौतिकी के मामले में बिलकुल आप जैसी ही थी।

एक दिन उदास बैठे टंडन की "पदार्थ के सामान्य गुण" पढ़ने के प्रयास कर रहे थे यानी उस पर चढ़े कवर में छपी रवीना टंडन की तस्वीर का अवलोकन कर रहे थे कि तभी बद्री भाई आ टपके। हमारी हालत देखते ही उन्हें हमारे सामान्य गुणों का आभास हो गया। सांत्वना दी कि आइंस्टीन सर को भी पहले भौतिकी समझ नहीं आती थी। उन्होंने पेटेंट क्लर्क की नौकरी पकड़ी, उसके बाद से उनके दिमाग से ऐसे झन्नाटेदार शोधें निकलीं कि बस पूछो मत। हमें वैज्ञानिक बनने हेतु यह रास्ता सुगम लगा। झट से आइंस्टीन सर के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प किया। सबसे पहले तो भौतिकी को विदा कहा। यह "तुझे छोड़ रहा, तुझे पाने की खातिर" टाइप का मामला था। हालांकि छोड़ने का क्या, वो वैसे भी कौन सा पकड़ में आ रही थी। किसी को मुकम्मल जहां मिलता कहां है। चले थे पेटेंट क्लर्क बनने और बन गये लेखाधिकारी। बद्रीभाई ने फिर से सांत्वना दी कि पेटेंट क्लर्क की फाइलें भी उनके लेखाधिकारी के पास ही आती होंगी। उनकी बातें सुनकर विश्वास हो गया कि ईश्वर ने हमारे लिए भी आइंस्टीन सर वाला रास्ता ही चुनकर रखा है। इधर साल-दर-साल निकलते जा रहे हैं पर लेखाधिकारी से वैज्ञानिक बनने के प्रयोग में सफलता के कोई आसार नहीं दिखते। मुझसे बहुत लोग पूछते हैं कि तुम भौतिकी में स्नातकोत्तर करके लेखाधिकारी बन गये, इसका अफसोस नहीं होता? मैं उन्हें बताता हूं कि अफसोस तो होता है पर पेटेंट क्लर्क न बन पाने का। दरअसल कृपा वहीं अटक गयी, वरना तो सब योजना के अनुसार ही हुआ।

जिस दिन गलती का अहसास हुआ, तो लगा कि आइंस्टीन बनना अब नहीं हो पायेगा। तब न्यूटन सर के पदचिन्हों की खोज की। शिमला जाकर सेब के पेड़ के नीचे बैठे भी, पर दिमाग भयंकर मंहगे होटल और टैक्सी किराये के गुनतारे में ही लगा रहा। एक बात तो पक्की है कि सेब के पेड़ न्यूटन सर के गृहनगर में ही होते होंगे। वे पर्यटन के लिए सेब वाली जगह गये होते तो यात्रा बजट के आगे कुछ सोच ही नहीं सकते थे, फिर चाहे उसके फल नीचे टपकें या ऊपर जायें। किताबों में न्यूटन सर के और भी ढेर सारे सिद्धांत मिले, लेकिन वे उन्हें किस पेड़ के नीचे सूझे, इसका उल्लेख कहीं नहीं मिला। मिलता तो उसकी छांव में बैठकर जगत को गति का चौथा सिद्धांत देने की कोशिश करता।

एक उल्लेख आर्कमिडीज सर के दिमाग की घंटी घनघनाने का अवश्य मिला। यह तरीका भी उत्साहजनक था। हमने यूरेका-यूरेका चिल्लाने की प्रेक्टिस भी कर ली थी। नहाने के लिए एक बाथटब वाला बाथरूम न मिल पाने से इस योजना पर अमल नहीं कर सका। आर्कमिडीज सर निश्चित ही बड़ी प्रापर्टी के मालिक रहे होंगे। 2BHK के बाथरूम में ऐसे चमत्कारी विचारों का जन्म लेना संभव ही नहीं है। वैसे भी जिस आदमी से राजा सीधे संवाद करता हो वो बड़ा तो होगा ही।

हमने प्लांक, डॉ. रमन, मैडम क्यूरी आदि-आदि ढेरों वैज्ञानिकों के पदचिन्हों का पता जानने के भी प्रयास किए पर अब तक कोई क्लू मिला नहीं है। मिले तो भी पता नहीं उन पर चल पाऊं या नहीं। आपको किसी ऐसे वैज्ञानिक का पता चले जिसे रजाई ओढ़कर बिस्तर में पड़े-पड़े ज्ञान हुआ हो। अवश्य बताइयेगा। उनका अनुगमन करूंगा। मेरी दिली तमन्ना है वैज्ञानिक बनने की।





ऋषभ जैन
वरिष्ठ संभागीय लेखाधिकारी
लोक निर्माण विभाग, खैरागढ़

जगतगुरु शंकराचार्य से जुड़े बहुत ही रोचक तथ्य

शंकराचार्य जी ने संपूर्ण भारत का भ्रमण कर अद्वैतवाद एवं वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए अनेक श्रमण, बौद्ध तथा हिंदू संतों एवं विद्वानों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया। शंकराचार्य ने देश के चारों कोनों में चार मठों की स्थापना भी की, जो बाद में शंकराचार्य पीठ के नाम से पहचाने जाते हैं। शंकराचार्य से संबंधित कुछ रोचक तथ्य प्रस्तुत है -

मां के लिए नदी का मोड़ा रुख

शंकराचार्य जी अपनी माता की बहुत सेवा और सम्मान किया करते थे. पौराणिक कथाओं के अनुसार उन्होंने अपनी माता के लिए गांव से दूर बहने वाली नदी को भी अपनी दिशा मोड़ दिया था। दरअसल, शंकराचार्य जी की माता को स्नान करने के लिए पूर्णा नदी तक जाना पड़ता था, यह नदी गांव से बहुत दूर बहती थी। शंकराचार्य जी की मातृ-भक्ति देखकर नदी ने भी अपना रुख उनके गांव कालड़ी की ओर मोड़ दिया था।

गरीब ब्राह्मण के घर हुई सोने की वर्षा

शंकराचार्य जी संन्यासी बालक होने की वजह से गांव-गांव भटक कर भिक्षा मांगते थे। एक दिन वह एक ब्राह्मण के घर भिक्षा मांगने पहुंचे। लेकिन वह एक ऐसे ब्राह्मण का घर था जिसके पास खाने तक को कुछ नहीं था। संन्यासी बालक को देखते ही रोते हुए उस ब्राह्मण की पत्नी ने बालक के हाथ पर एक आंवला रखा और अपनी गरीबी के बारे में बताया। महिला की उस करूण अवस्था को देखकर उस बालक का हृदय द्रवित हो उठा और अपनी वेदना के स्वर में अनायास ही मां लक्ष्मी का स्त्रोत गाने लगा। उसके उस स्त्रोत से द्रवित होकर माँ लक्ष्मी ने उस निर्धन ब्राह्मण के घर में सोने के आंवलों की वर्षा कर दी। यह कनकधारा स्त्रोत के नाम से प्रसिद्ध है।

अपनी माँ को दिया वचन पूरा किया जो परंपरा बन गयी

शंकराचार्य जी ने संन्यास लेते समय अपनी मां को वचन दिया था कि वह उनके जीवन के अंतिम समय में उनके पास रहेंगे और खुद उनका दाह-संस्कार भी करेंगे। अपनी मां को दिए वचन को पूरा करने के लिए जब शंकराचार्य मां के अंतिम समय में उनका दाह-संस्कार करने गांव पहुंचे तो लोगों ने यह कहकर उनका विरोध करना शुरू कर दिया कि संन्यासी व्यक्ति किसी का अंतिम संस्कार नहीं कर सकते। लोगों के इस तर्क पर शंकराचार्य जी ने जवाब देते हुए कहा कि जब उन्होंने अपनी मां को वचन दिया था तब वह संन्यासी नहीं थे। उन्होंने अपने घर के सामने ही मां की चिता सजाकर उनकी अंतिम क्रिया की, जिसके बाद केरल के कालड़ी में घर के सामने दाह-संस्कार करने की पंरपरा बन गई है ।

शास्त्रार्थ में हुए विजय

एक बार शंकराचार्य जी यात्रा करते हुए बिहार के मिथिला प्रदेश पहुंचे। यहां करीब 16 दिनों तक उन्होंने मंडन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ किया। इस शास्त्रार्थ में मंडन मिश्र की धर्मपत्नी भारती को निर्णायक बनाया गया था। कहा जाता है कि इस शास्त्रार्थ की निर्णय घड़ी जैसे ही पास आई तो अचानक देवी भारती को किसी काम से बाहर जाना पड़ा। लेकिन जाते-जाते उन्होंने दोनों विद्वानों को एक-एक फूल की माला पहनने के लिए दी। उन्होंने कहा, 'यह दोनों मालाएं मेरी अनुपस्थिति में आपकी हार और जीत का फैसला करेंगी। थोड़ी देर बाद जब देवी भारती वापस लौटीं तो उन्होंने अपना निर्णय सुनाते हुए शंकराचार्यजी को विजय घोषित कर दिया। देवी भारती के इस निर्णय से सभी चकित लोगों ने उनसे इसका कारण पूछा।

इस पर देवी भारती ने स्पष्ट उत्तर देते हुए कहा, 'जब भी किसी को चिंता या क्रोध महसूस होता है तो वह उस भाव को छिपा नहीं पाता। जब मैं वापस लौटी तो मैंने पाया कि मेरे पति के गले में डली हुई फूलों की माला उनके क्रोध के ताप से सूख चुकी है, जबकि शंकराचार्य जी की माला के फूल अब भी पहले की भांति ताजे हैं। उनका कहना था कि इससे यह बात तो स्पष्ट हो गई कि शंकराचार्य ही विजय हुए हैं और मेरा निर्णय गलत कदापि नहीं है ।

"ब्रह्म सत्य है तथा जगत् माया है।"

शंकराचार्य का स्थान विश्व के महान दार्शनिकों में सर्वोच्च माना जाता है। उन्होंने ही इस ब्रह्म वाक्य को प्रचारित किया था कि 'ब्रह्म ही सत्य है और जगत माया।' आत्मा की गति मोक्ष में है। मात्र 32 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया। उनका अन्तिम उपदेश था, "हे मानव! तू स्वयं को पहचान, स्वयं को पहचानने के बाद तू ईश्वर को पहचान जाएगा।"

देह त्याग : आदि शंकराचार्य के समय जैन राजा सुधनवा थे। उनके शासन काल में उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया। उन्होंने उस काल में जैन आचार्यों को शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया। राजा सुधनवा ने बाद में वैदिक धर्म अपना लिया था। राजा सुधनवा का ताम्रपत्र आज भी उपलब्ध है । यह ताम्रपत्र आदि शंकराचार्य की मृत्यु के एक महीने पहले लिखा गया था। उनके मित्र द्वारा लिखे एक श्लोक में आदि शंकराचार्य के जन्म का उल्लेख मिलता है जिसमें उन्होंने 2631 युधिष्ठिर संवत में आदि शंकराचार्य के जन्म की बात कही है। गुरुरत्न मालिका में उनके देह त्याग का उल्लेख मिलता है। मात्र 32 साल की उम्र में केदाननाथ में उनकी मृत्यु हो गई, जहां मंदिर के पीछे उनकी समाधि स्थित है।



वाय. जवाहर
पर्यवेक्षक

चाहत जो अधूरी रही

एक बार जरूरी काम की वजह से मुझे अचानक अपने घर जाना पड़ रहा था। मैं सफर पर अकेला था। सब अजनबी चेहरे थे। ट्रेन चलने को ही थी की अचानक कोई जाना पहचाना चेहरा बोगी में आया। स्लीपर का टिकट नहीं मिला तो जर्नल डिब्बे में ही बैठना पड़ा। मगर यहाँ ऐसे हालात में उस शख्स से मिलना जिंदिगी के लिए एक संजीवनी के समान था। ज़िंदगी भी कमबख्त कभी कभी अजीब से मोड पर ले आती है और ऐसे हालातों से सामना करवा देती है जिसकी कल्पना तो क्या कभी ख्याल भी नहीं कर सकते।

वो आई और मेरे पास ही खाली जगह पर बैठ गई। ना मेरी तरफ देखी और ना ही पहचानने की कोशिश की। कुछ इंच की दूरी बना कर चुप-चाप पास आकर बैठ गई। बाहर सावन की रिमझिम फुहारें गिर रही थी। इस कारण वो थोड़ी भींग गई थी। चेहरे पर दुपट्टा लपेटी हुई थी। बैठते ही उसने अपना दुपट्टा हटाया तो मैंने कनखियों से नज़र बचा कर देखा। उम्र के इस पड़ाव पर भी कमबख्त वैसी की वैसी ही थी। बस कुछ मोटी हो गई थी मगर उतनी ज्यादा भी नहीं।

फिर उसने अपने पर्स से चश्मा निकाला और मोबाइल में लग गई। चश्मा देख कर मुझे आश्चर्य हुआ। उम्र की यही एक निशानी उस पर नज़र आई थी कि आँखों पर चश्मा चढ़ गया था। सर पे मैंने सफ़ेद बाल खोजने की कोशिश की मगर मुझे दिखे नहीं। वैसे बालों को डाई किए मुझे भी काफी दिन हो गए थे। ज्यादा सफ़ेद बाल तो नहीं थे मेरे सर पे मगर इतने जरूर थे की गौर से देखो तो नज़र आ जाए। मैंने जल्दी से रुमाल से अपना चेहरा ढक लिया। थोड़ी देर बैठा रहा फिर मैं उठकर बाथरूम चला गया। जेब से फ़ेसवास निकाला चेहरे को ढंग से धोया फिर शीशे मे खुद को गौर से देखा, पसंद तो नहीं आया मगर अजीब सा मुँह बना कर फ़ेसवास जेब मे डाला और वापस अपनी जगह पर आ गया। मगर वो साहिबा तो खिड़की की तरफ से मेरा बैग सरकाकर खुद खिड़की के पास बैठ गई थी।

मुझे पूरी तरह देखी भी नहीं बस बिना देखे ही कहा, " सॉरी, भाग कर चढ़ी तो पसीना आ गया था तो थोड़ा सुख जाए फिर अपनी जगह बैठ जाऊँगी। " फिर वह अपने मोबाइल मे लग गई। मेरी इच्छा जानने की कोशिश भी नहीं की। उसकी यही बात हमेशा मुझे बुरी लगती थी। फिर भी न जाने उसमे ऐसा क्या था की आज तक मैंने उसे भूलाया नहीं। एक वो थी की चार-पाँच सालों मे ही भूल गई। मैंने सोचा शायद अभी तक गौर नहीं की, पहचान लेगी। मैं भी थोड़ा मोटा हो गया हूँ, शायद इसलिए नहीं पहचाना। मैं थोड़ा दुखी हो गया। जिस साहिबा को जीवन मे कभी भुला ही नहीं पाया उसको मेरा चेहरा ही याद नहीं।

माना की ये मर्दो और लड़को को ताड़ने की उसकी आदत नहीं मगर पहचाने भी नहीं। शादीशुदा है जानता हूँ, पर जानता था इसके साथ रहना मुश्किल है मगर इसका मतलब यह तो नहीं की अपने ख्यालों और अपने सपनों को जीना छोड़ दूँ। एक तमन्ना थी कि कुछ पल खुल के उसके साथ गुज़ारूँ, माहौल दोस्तना ही हो मगर हो तो सही। आज वही शख्स पास बैठी थी जिसे स्कूल टाइम से मैंने दिल मे बसा रखा था। सोसल मीडिया पर उसके सारे अकाउंट चोरी छुपे देखा करता था। उसकी हर कविता, हर शायरी में खुद को खोजा करता था, जो आज पहचान ही नहीं रही।

माना कि हम लोगों मे कभी प्यार कि पींगे नहीं चली, न कभी इजहार हुआ। हाँ वो हमेशा मेरी केयर करती थी और मैं उसकी करता था। कॉलेज छूटा तो मेरी जॉब लग गई मैं अपनी लाइफ में व्यस्त हो गया। कुछ समय बाद उसकी भी शादी हो गई थी। जब भी मैं गाँव जाता उसकी सारी खबरें ले आता था। बस ऐसे ही ज़िंदगी गुजर रही थी।

आधे घंटे से ऊपर हो गया, वो आराम से खिड़की के पास बैठी मोबाइल मे लगी थी। देखना तो दूर चेहरा भी ऊपर नहीं किया उसने।

मैं कभी मोबाइल मे देखता तो कभी उसकी तरफ। सोशल मीडिया पर उसके अकाउंट खोल कर देखा। तस्वीर मिलाई, वही थी, पक्का वही थी, कोई शक नहीं था। वैसे भी हम लड़के पहचानने मे कभी भी धोखा नहीं खा सकते। बीस-तीस साल बाद भी सिर्फ आँखों से पहचान ले। फिर कुछ और वक्त गुजरा, माहौल वैसा का वैसा ही था। मैं बस पहलू बदलता रहा।

फिर अचानक टीटी आ गया। सबसे टिकट पूछ रहा था। मैना अपना टिकट दिखा दिया। उससे पूछा तो उसने कहा नहीं है।

टीटी बोला, "फ़ाइन लगेगा"

वह बोली, "लगा दो"

टीटी, "कहाँ का टिकट बनाऊँ?"

वो जल्दी जबाब नहीं दी। मेरी तरफ देखने लगी। मैं कुछ समझा नहीं।

उसने मेरे हाथ मे थमी टिकट को गौर से देखा फिर टीटी से बोली, "राँची।"

टीटी ने राँची कि टिकट बना कर दी और पैसे लेकर चला गया।

वह फिर से मोबाइल मे तल्लीन हो गई।

आखिर मुझसे रहा नहीं गया। मैंने पूछ ही लिया, "राँची में कहाँ रहती हो ?" वह मोबाइल मे नजरें गड़ाए हुए बोली, "हटिया।" इसके बाद मैं चुप हो गया।

मैं चुप हो गया तो वह फिर बोली, किसी काम से जा रहे हो। मैं बोला, हाँ "इसके बाद मैं फिर चुप हो गया। उसे लगा मैं अजनबी की तरह बात कर रहा हूँ और अजनबी से कैसे पूछ लूँ कि वहाँ किस काम से जा रहे हो।

कुछ देर चुप रहने के बाद फिर उसने पूछ ही लिया, "वहाँ शायद नौकरी करते हो ?"

मैंने कहा, "नहीं"

फिर उसने पूछा, "तो किसी से मिलने जा रहे हो?"

मैंने फिर कहा, "नहीं"

मेरा आखरी जवाब सुनकर उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह मुझसे कुछ और ही पुछे, तो वह मुँह फेरकर अपने मोबाइल में लग गई।

उसे चुप देख कर मैं खुद ही बोला, "ये भी पूछ लो क्यूँ जा रहा हूँ रांची?"

मेरे प्रश्न खत्म करते ही बोली, "बताओ, क्यों जा रहे हो?" फिर वो अपने ही उतावलेपन पर शर्मा सी गई।

मैं थोड़ा सा मुस्कराते हुए कहा, " ट्रेन टिकिट नहीं मिलने पर रांची तक ट्रेन से आने के बाद वहाँ से बस लेकर घर जा रहा था पर अब एक पुरानी दोस्त मिल गई है जो आज अकेले सफर पर जा रही है। भले ही मैं फौजी आदमी नहीं हूँ लेकिन सुरक्षा करना मेरा भी कर्तव्य है। अकेले कैसे जाने देंगे, इसलिए अब उसे हटिया तक छोडने जा रहा हूँ। "इतना सुनकर उसने हिम्मत कर के फिर पूछा, "कहाँ है वो दोस्त?"

कमबख्त मैं मुस्कराता हुआ बोला, "यहीं मेरे पास बैठी है ना" यह जानकर उसे इतनी खुशी मिली की उसकी आंखों में आँसू आ गए। मैं बोला, "रो क्यों रही हो?"

वो बस इतना ही कह पाई, "तुम मर्द हो नहीं समझ सकते"

मैं बोला, क्योंकि मैं थोड़ा बहुत पढ़ लिख लेता हूँ और अपने घर का एक जिम्मेदार इंसान भी हूँ। सब समझ सकता हूँ।"

उसने खुद को संभालते हुए कहा "शुक्रिया, मुझे पहचानने के लिए और मेरे लिए इतना टाइम निकालने के लिए"।

वह बोली," प्लैटफ़ार्म पर अकेली घूम रही थी। तुम्हें देखा तो आ गई सोचा कोई तो जाना पहचाना साथ होगा। कल रक्षाबंधन था और भाई यहाँ बिलासपुर में आकर बस गए हैं। उनको छुट्टी नहीं मिल रही थी और राखी बांधने तो आना ही था।"

तुम्हें यूं अकेले सफर नहीं करना चाहिए और ऐसे भाइयों को राखी बांधने क्यों आई हो जिनको ये भी फिक्र नहीं की बहन इतना लंबा सफर अकेले कैसे तय करेगी? "भाई शादी के बाद भाई रहे ही नहीं। भाभियों के हो गए। मम्मी पापा रहे नहीं।" कह कर वह एकदम उदास हो गई।

मैं फिर बोला, "तो पति को तो समझना चाहिए।"

उसने कहा "उनकी बहुत बिजी लाइफ है मैं ज्यादा डिस्टर्ब नहीं करती और आजकल इतना खतरा भी नहीं रहा। कर लेती हूँ मैं अकेले सफर, तुम अपनी सुनाओ कैसे हो?"

"अच्छा हूँ , कट रही है ज़िंदगी"

उसने फिर मुझसे पूछा "मेरी याद आती थी क्या?"

मैं एकदम चुप सा हो गया मानो उसने मेरी दुखती रग पर ही हाथ रख दिया हो।

कुछ नहीं बोला तो वह फिर बोली, "सॉरी, यूँ ही पूछ लिया। वैसे अब तो हमलोग परिपक्व हो गए हैं। कर सकते हैं ऐसी बात।"

मैंने शर्ट की बाजू की बटन खोल कर अपने हाथ मे पहना वो टाइमेक्स की घड़ी दिखाई जो उसने ही फ्रेंडशिप डे पर मुझे दिया था। बोला, "याद तो नहीं आती पर कमबख्त ये तेरी याद दिला देती थी।"

घड़ी देखकर वो बहुत खुश हुई, बोली, "कभी संपर्क क्यों नहीं किया?"

मैं अपने आप को संभालते हुए बोला, "डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था। तुम्हारी अपनी ज़िंदगी है और मेरी अपनी।"

उसने सकपकाते हुए पूछा, "तुम्हें छू लूँ !

मैं बोला, "पाप नहीं लगेगा?"

वह बोली, "नहीं छूने से नहीं लगता।" और फिर वह रांची तक मेरा हाथ पकड़ कर बैठी रही। बहुत सी बातें हुईं।

ज़िंदगी का एक ऐसा यादगार सफर जिसे मैं आखिरी साँस तक नहीं भुला पाऊँगा। मैं उसे सुरक्षित उसके घर तक छोड़ कर बाहर से लौट गया, रुका नहीं। उसके बाद कभी हम दोनों में बातें नहीं हुई क्योंकि हम दोनों ने एक-दूसरे के फोन नंबर नहीं लिए।

हालांकि हमारे बीच कभी भी नापाक कुछ भी नहीं हुआ। एक पवित्र सा रिश्ता था, मगर रिश्तों की गरिमा बनाए रखना सबसे ज्यादा जरूरी था।

करीब एक महीने बाद हीं मैं जरूरी काम से फिर अपने घर गया हुआ था, वहीं मैंने एक अखबार में पढ़ा की ल्यक्षिका के ससुराल वालों ने दहेज के लिए प्रतारित कर उसकी जान ले ली थी। मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता की उस समय मुझ पे क्या गुजरी और पता नहीं उसके परिवार पर क्या गुजरी होगी। लोक लाज के डर से मैं अंतिम बार उसे देखने भी नहीं जा सका।

आज उससे मिले लगभग तीन साल हो गए है और आज भी रक्षाबंधन का दूसरा दिन है आज भी बिलासपुर से राँची का सफर कर रहा हूँ। जानबूझकर जनरल डिब्बे का टिकट लिया है, मैंने। अकेला हूँ, ना जाने दिल क्यों आस लगाए बैठा है की आज फिर आएगी और पसीना सुखाने के लिए उसी खिड़की के पास बैठेगी।

एक वो सफर था जिसमे कोई हमसफर थी। एक आज सफर है जिसमे उसकी यादें हमसफर है। बाकी ज़िंदगी का सफर जारी है देखते हैं कौन मिलता है और कौन साथ छोड़ जाता है।



सचिन कुमार
लेखापरीक्षक

साइबर सुरक्षा-हमारा उत्तरदायित्व



साइबर अपराध

आज का समय मोबाइल/इंटरनेट के बिना असंभव हैं, अगर यह वरदान है तो अभिशाप भी। हमारे हर क्षण की जानकारी मोबाइल में संरक्षित होती रहती हैं और मोबाइल से यह जानकारी इंटरनेट पर विचरण करती हैं। इन ऑनलाइन जानकारियों को डाटा कहते हैं। इन डाटा का उपयोग कर किसी व्यक्ति या समूह को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षति पहुंचाना साइबर अपराध कहलाता हैं।

जानकारी की चोरी

व्यक्तिगत जानकारियों की चोरी पैसो की चोरी से भी अधिक घातक होते हैं, क्योकि इससे आर्थिक क्षति के साथ-साथ सामाजिक छवि को भी धूमिल किया जा सकता है।

साइबर जासूसी

सोशल मीडिया प्लैटफ़ार्म का उपयोग करके छुपकर किसी की जानकारियों को इकट्ठा करके किसी और को बेचना या ब्लैकमेल करने की खबर समाचार पत्रों में आम हो गई है।

वाइरस अटैक

मेलवेयर सॉफ्टवेयर के जरिए साइबर अपराधी की पहुँच हमारे मोबाइल/कंप्यूटर के सारे डाटा तक हो जाती हैं, जिसका उपयोग डाटा को चुराने या क्षति पहुंचाने के लिए करते हैं।

सिम अदला-बदली

हमारा सारा बैंकिंग तंत्र मोबाइल के सिम कार्ड के जरिए चलता है इसलिए साइबर अपराधी सिम का प्रतिरूप बनाकर आर्थिक क्षति पहुंचाते हैं।

धोखा देना (Fraud)

एटीएम मशीन पर कई तरीको से छेड़खानी कर, एटीएम कार्ड का प्रतिरूप तैयार कर, कई सारे ऑफर का लालच देकर, मेसेज़/ईमेल या कॉल करके लूट को अंजाम दिया जाता है।

पाइरेसी

बौद्धिक सम्पदा का अवैधानिक रूप से प्रतिरूप बनाकर किसी और को बेचना।



साइबर सुरक्षा के उपाय

1. मजबूत आईडी एवं पासवर्ड बनाकर सुरक्षित रखना एवं उन्हे समय-समय पर बदलते रहना, साथ ही दो कारक प्रमाणीकरण का उपयोग करना और विभिन्न वैबसाइट के लिए अलग अलग पासवर्ड रखा जाना चाहिए।
2. एंटीवाइरस, एड-ब्लोकर सोल्युशन एवं फायरवॉल सॉफ्टवेयर का उपयोग मोबाइल एवं कंप्यूटर की सुरक्षा हेतु आवश्यक हैं।
3. ओपन फ्री वाई-फ़ाई का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।
4. अनजान मेसेज, लिंक या लुभावने ऑफर का लालच देने वाले वैबसाइट को क्लिक नहीं करना चाहिए।
5. बैंकिंग एप्लिकेशन का उपयोग सावधानी से किया जाना चाहिए एवं ऑनलाइन माध्यम से खरीददारी करते समय एटीएम कार्ड से संबन्धित जानकारी सेव नहीं किया जाना चाहिए।
6. गूगल से जानकारी या कस्टमर केयर का नंबर के जांच-परख के बाद उपयोग किया जाना चाहिए।
7. सोशल मीडिया का उपयोग करते समय गोपनियता संबंधी विकल्पो का चयन किया जाना चाहिए एवं गोपनीयता विकल्प को सिर्फ पहचान के व्यक्तियों तक सीमित रखा जाना चाहिए। निजी तथा गोपनीय जानकारियाँ सोशल मीडिया या इंटरनेट पर कभी साझा नहीं किया जाना चाहिए।
8. डाटा का बैक-अप बनाके सुरक्षित रखा जाना चाहिए एवं डिवाइस तथा सॉफ्टवेयर को अपडेट करते रहना चाहिए।
9. किसी भी तरह के साइबर हमलों की जानकारी साइबर पुलिस और आर्थिक क्षति होने पर बैंक को सूचना दी जानी चाहिए।
10. वैबसाइट के यूआरएल पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, यूआरएल की वर्तनी एवं वैद्यता की जांच के बाद ही सर्च किया जाना चाहिए।
11. पॉप-अप बिना देखे क्लिक नहीं करना चाहिए और पॉप-अप को ब्लॉक करके रखना उचित रहता हैं।
12. मोबाइल एप पर नियंत्रण किया जाना चाहिए, एप में अनुमति यह सोच-समझकर दी जानी चाहिए कि एप को कितने इन्स्ट्रुमेंट की आवश्यकता हो सकती हैं।

साइबर अपराध को रोकने वाले योद्धा

1. आईटी अधिनियम, 2000 डिजिटल कॉमर्स एवं साइबर अपराधों से सुरक्षा का आधारस्तंभ एवं प्राथमिक विधि हैं।
2. साइबर सुरक्षा नीति 2013 के तहत देश के नागरिकों एवं व्यावसायिक गतिविधियों को सुरक्षित एवं लचीला साइबर स्पेस बनाकर भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र एवं साइबर क्राइम वालंटियर की स्थापना की गई हैं।
3. साइबर स्वच्छता केंद्र एवं साइबर क्राइम पोर्टल www.cybercrime.gov.in साइबर अपराधों से बचने और लड़ने के उपाय बताते हैं।
4. भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-IN) प्रतिदिन होने वाले साइबर हमलों के विषय में जानकारी प्रदान करते हैं और रोकथाम के सुझाव देते हैं।
5. बड़े शहरो में साइबर अपराधो से निपटने के लिए साइबर सेल की स्थापना की गई हैं, साइबर अपराधों के विषय में अधिक जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर 1930 की शुरुआत की गई।

साइबर अपराध की पहुँच प्रत्येक नागरिक तक हो गयी हैं, ईमेल हैक होने की जानकारी haveibeenpwned.com से मिल सकती हैं। अपराधों से सुरक्षा का उत्तरदायित्व सरकार के साथ-साथ हमारा भी होता हैं। साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक होकर, इन अपराधों की रोकथाम के लिए परितंत्र विकसित करने में सहभागी बनना आज की हमारी आवश्यकता हैं, क्योकि कहा जाता हैं:- "रोकथाम इलाज से बेहतर होता हैं।"



डूमेश कुमार धनकर
लेखापरीक्षक

बुद्ध



बुद्ध....
तुम उतरते हुये आते हो हजारों सीढ़ियां,
और समा जाते हो मेरे हदय में .....
तब तुम्हारे गर्भ गृह में प्रवेश करते हुए,
मैं बदल जाता हूं छोटे से भिक्कू में .....
बुद्ध....
तुमने छोड़ दिया अपना महल,
और त्याग दी अनावश्यक सारी इच्छाएं .....
जिसकी खोज में मैंने, बिता दिया सारा जीवन,
और भटकता रहा ढोते हुए सारी इच्छाएँ ....
बुद्ध....
तुम्हारा त्याग कभी देख ही नहीं पाया मैं,
कभी इन बातों का एहसास हुआ ही नहीं मुझको....
तुम देते रहे होंगे आवाज मेरे अन्दर के बुद्धत्व को,
कांटो भरी राह में चलने की प्रेरणा देते रहे होंगे मुझको....
बुद्ध....
जब जब भी मैंने तुम्हे तितली समझ के,
चुटकी में पकड़ने का प्रयास किया है....
मेरे लिए तुम साक्षात् सूर्य बन गए और,
मेरे अंधियारे अंतरमन में उजाला किया है .....
बुद्ध....
जब कभी तुम्हारी तस्वीर की तरफ ,
दिनभर देखते रहता हूँ मै एक टक .....
तब तब खुल जातें है मेरे मन के दरवाजे,
और टूट कर बिखर जाते है उनकें पट.....
बुद्ध....
हजारों सालों से मेरी विचार क्षमता,
जो की बांध रखी थी जंग लगी जंजीरों में....
मैं तोड़ देता हूँ उन जंग लगे तालों को,
और विचरण करता हूँ स्वतंत्र वैज्ञानिक विचारों में....
बुद्ध....
मैं अंत में फिरता हूँ सारा संसार,
बुद्ध के बुद्धत्व से विश्व को रूबरु कराने में.....
अतः दीप मय मंत्र के साथ अनंत तक,
विलीन हो जाता हूँ मैं उसी बुद्धत्व में.....

बबूल का पेड़

बबूल का पेड़ अकेले ही खड़ा रहता है खेत के मेड़ पर ....
कभी चरवाहा, कभी मजदूर,
तो कभी राहगीर,
बैठता है उसके छाया में,
उन्हें कभी भी बबूल का पेड़ काटेदार नहीं लगता था।

बबूल ने जैसे खाने दी अपनी पत्तियाँ बकरियों को.....
वैसे ही जलावन भी दिया चूल्हे को,
बबूल ने गोंद दिया,
वैसे ही मधु का छत्ता भी दिया,
वह बबूल है कि कल्प वृक्ष कभी पता ही नहीं लगता था।

बबूल के पीले फूलों से हम मालाएँ बनाते थे....
और पहनाते थे गाय- बकरियों को,
बहुत सुन्दर दिखती थी वे,
वे भी निहारती रहती ,
उन्हें भी बबूल का पेड़ बहुत पसंद है ऐसा लगता था ।

कभी-कभी खेतों में उगी हुई छोटी-छोटी बबूल.....
उखाड़ लेता है किसान,
काटी जाती खेती के औजारों के लिए,
तो कभी घर बनाने के लिए,
फिर भी कभी इस बात का बबूल को बुरा नहीं लगता था ।

बबूल ने कभी निकाला है हमारे पैरों में चुभा हुआ कांटा.....
सिखाया कांटे भरी राहों में चलने का सलीका,
बबूल ने सिखाया है त्याग,
बबूल ने अपनापन सिखाया,
बबूल भी एक सही जीवन जीने का उदाहरण सा लगता था ।



मेंडके मनोज रविन्द्र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पहन (धारण कर)

सुन-सुन भारत की बेटी, भारत की बहन,
पहन-पहन तू कुछ भी पहन, नील केशरी पहन,
श्याम श्वेत पहन, स्वर्ण पीत पहन,
शुभ हरित पहन, सभ्यता और संस्कृति पहन ।।
ना कोई विवाद बन सके, तू कुछ ऐसा पहन,
ना कोई तुमसे नग्नता पर विवाद कर सके, कुछ ऐसा पहन॥
रेखा-जया, किरण-सुषमा, ममता-माया,
श्वेता, वविता से कोई कह ना पाया,
बेटी तू ऐसा पहन, बहन तू वैसा पहन,
बस तू शालीन दिखे, कुछ ऐसा पहन ॥
तू बेटी दिखे पिता को ऐसा पहन,
तू बहन दिखे भ्राता को ऐसा पहन,
तू माँ दिखे संतान को ऐसा पहन,
तू सम्मान दिखे इंसान को कुछ ऐसा पहन ॥
तू शक्ति और उक्ति दिखे ऐसा पहन,
तू भक्ति और मुक्ति दिखे ऐसा पहन,
तू वेद और श्रुति दिखे कुछ ऐसा पहन,
तू सभ्यता और संस्कृति दिखे ऐसा पहन ॥
सुन-सुन भारत की बेटी, भारत की बहन,
पहन-पहन तू कुछ भी पहन,
पर जो समाज और परिवार को अच्छा लगे कुछ वैसा पहन ॥



सचिन कुमार
लेखापरीक्षक

आंतरिक महाभारत

महाभारत एक युद्ध – धर्म और अधर्म के बीच, पांडवों और कौरवों के बीच, जिसके बारे में हम सब ने सुना है कि कैसे पांडवों ने कौरवों के विरुद्ध युद्ध कर के विश्व में धर्म की स्थापना की थी। आज के इस युग में हमें भी आवश्यकता है कि हम अधर्म के विरुद्ध युद्ध करें एवं धर्म कि स्थापना करें परंतु यह युद्ध बाहरी युद्ध ना हो कर अन्तः युद्ध होना चाहिए। सजातीय प्रवृति रूपी पांडवों और विजातीय प्रवृति रूपी कौरवों के मध्य। परंतु हमें अन्तः युद्ध कि आवश्यकता कब होती है, जब हमारा मन अज्ञान से आवृत हो जाता है और यही अज्ञान से आवृत मन ही धृतराष्ट्र है जिससे उत्पन्न होता है दुर्योधन। दुर्योधन अर्थात मोह और मोह के उत्पन्न होने के पश्चात अनेक प्रकार के विकारों का उदय होता है जिनकी तुलना कौरवों से की जा सकती है। इन्हीं कौरवों के वध हेतु हमें आवश्यकता है परमात्मा में प्रवेश दिलाने वाली पुण्यमयी प्रवृति रूपी पांडवों की।

पांडव अर्थात अनुरागरूपी अर्जुन (जिसमें परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी विषय वस्तु का क्षण भर भी टकराव न हो उसी को अनुराग कहते हैं), भावरूपी भीम (भाव अर्थात श्रद्धा में वह क्षमता है कि वह परमात्मा को भी जीत ले), धर्मरूपी युद्धिष्ठिर (आत्मा का परमात्मा से मिलन कराना ही धर्म है), नियमरूपी नकुल (नियम को उन्नत कर के ही हम अशुभ का शमन कर सकते है) तथा सत्संगरूपी सहदेव (मन को सब ओर से समेट कर आत्मा की संगत ही सत्संग है) ।



इन्हीं पांडवों की सेना का सेनापति है दृष्टद्युम्न, दृढ़ और अचल मन ही दृष्टद्युम्न है और कौरवों के सेना के सेनापति हैं पितामह भीष्म अर्थात भ्रम। भ्रम ही भीष्म है और जब तक भ्रम जीवित है तब तक कौरवों अर्थात विकारों पर विजय पाना दुर्लभ है और भीष्म को इच्छा-मृत्यु का वरदान प्राप्त था अर्थात जब तक हमारे अंदर इच्छा है तब तक भ्रम भी जीवित रहेगा।

इसीलिए हमे धीरे-धीरे स्वयं में इच्छाओं को कम, भ्रम को क्षीण करते हुए तथा पांडवरूपी प्रवृत्तियों को बढ़ाते हुए कौरवों रूपी विकारों का शमन करना है और अपने हृदय रूपी विश्व में धर्म कि स्थापना करनी है।



मयंक सिंघानिया
लेखापरीक्षक

सपनों का झुला

सपना एक सुन्दर विलोभनीय एवं उतना ही रहस्यमय शब्द...! इसमें मानवीय मन अनंतकाल से मोहक सपनों में खोने पर महकता हुआ आया है। इंसान सृष्टि के उत्पत्ति से लेकर आज तक ये सपने इंसान को एहसास दिला रहे हैं और इंसान इस साथ को हमेशा निभाता आया है। उत्पत्ति एवं अंत संसार का एक अटूट नियम है। देखा जाए तो इंसान की उत्पत्ति ही इस सृष्टि का एक सुन्दर स्वप्न है। इसलिये इस संसार में इंसान को सपना देखने का अनोखा वरदान सृष्टि ने ही दिया है। इस पृथ्वी तल पर असंख्य प्राणियों में यह एक अलग वरदान सिर्फ इंसान को ही मिला है। सपना यानी मन के अनंत घटनाओं का एहसास कराने वाला चित्र है।

इंसान के जीवन का मधुर गीत संगीत और आत्मा की पवित्रता ऐसा मन ही है। इसलिए इंसान का मन समय-समय पर रात-दिन, अनगिणत क्षणों में सपनों के अनोखे झूले पर झूलता रहता है। अनजाने में यह सपना इंसान को अपने अदृश्य हाथों से संवारता भी है। ये सच्चे इंसान को आलिंगन देता है। अपने सपनों के झूले दिखाकर उसे सपनों के झूले पर झूलाता है। इंसान को हमेशा होशियार रहना पड़ता है और सपनों का संसार ढूंढकर अपने सपनों का बगीचा हरा भरा करना पड़ता है। इंसान अगर गलतफहमी में हो या भूतकाल के उजड़े हुए क्षणों में फंसा हो, तब ये सपना उसे जीने का सहारा देगा।

यह सपना इंसान के मन में अनंत तक घर करके रहने वाला होता है। सपना इंसान के मन, हृदय की बातें आँखों तक लाता है और उसको स्वच्छ एवं सुगन्धित बनाता है। एक सुगन्धित स्वप्न में इंसान का जीवन सुगन्धित होकर खिल उठेगा वह नाच उठेगा और उसकी आखें और अच्छे-अच्छे सपने देखने लगेंगी। सच तो ये है कि सम्पूर्ण सृष्टि में अनंत सागर की गहराई में यह सपने गड़े हुए रहते हैं। वह हंसते-हंसते धूप-हवाओं में, नदी-बारिशों में, आकाश-बादलों में, पर्वत–खाइयों में सपने समाये रहते हैं। सपने हंसते रहते हैं। छोटे बच्चों के होठों पर पंछियों के उड़ते पंखो में, सागर के विशाल लहरों में, आसमान के नीले- नीले रंगों में, बहते हुए झरनों में, क्योंकि ये सब देख हम अपने हृदय में समेट लेते हैं और खो जाते हैं। इन्हीं सपनों ने ही इंसान का जीवन सुन्दर बनाया है।

हर दिन सुबह पास के खेतों में घूम के आने का मन करता है। भोर का दिवा स्वप्न, छोटे-छोटे घास में स्वप्न रूप में खिला हुआ दिखाई देता है। राहों में दोनों ओर झाड़ियों पर बैठे पंछी मधुर गीत सुनाकर सपनों का एहसास कराते रहते हैं। जंगल के पगडंडी पर दोपहर की हल्की सी सुनहरी धुप सर्वत्र फैली है। गांव के चौपाल पर ऐसा लगता है कि एक सपना लेकर धूप यूं ही बिखरी हुई है। धीरे-धीरे शाम होगी अंधेरे का एक सपना लेकर गांव की तरफ बढ़ने वाला होगा, गांव की ओर लौटते



गाय और बछड़ों के गले की घंटी की आवाज का सपना, अपने घोसलों की तरफ लौटते पंछियों का सपना और खेत से घर लौटते किसान का सपना। पलास के फूल खिले होंगे, गांव के बाहर के रास्तों पर जो लाल पीले रंग के सपनों का आभास करायेंगे। गांव की कोई स्त्री अपने आंगन में आकर ठहर जाती है और अपने यजमान के खेत से लौटने के रास्ते को निहारते सपनों में खो जाती है।

सपने अनेक प्रकार और आकार में आपके आँखों में समाए हैं। इंसान को भूल भुलैया में ले जाने वाली अपने अलग से तिलस्मी जाल में अटकाने का प्रयत्न करता है। कभी-कभी सपने अपनी आशा और इंसानों पर लड़ते हैं। सपनों का संसार अजब और अनोखा भी है। जैसे कि फूलों जैसा कोमल और शिला जैसा कठोर भी है। सपने होते हैं आँखों को सजाने वाली और दिल में बस जाने वाली घटनाओं का स्त्रोत। दुःख के समुद्र में डुबा ले जाने वाली बात भी सपनों में होती है। सच देखा जाये तो अपने आँखों को जानना चहिए कि कौन-सा सपना देखा जाए। सपने तो देते ही रहेंगे आमंत्रण अपने आँखों को, हमारे आँखों को हमेशा अच्छे सपने देखने का ही साहस करना चाहिए।

सपने देखने की तो उम्र होनी ही नहीं चाहिए। इंसान के शरीर पर समय का असर अपनी छाप छोड़ दे, तो भी इंसान के मन में मलिन भावना आने न पाए। हमारा यह स्वभाव हो कि हमारा मन, हरदम हरा भरा, सुन्दर और स्वस्थ रहे। हमारे मन के इस दृढ़ निश्चय पर मन के ताकत का अंदाजा लगाया जा सकता है। एसे दृढ़ मन के लिए सपने आतुर रहेंगे और हमारे मन के करीब मंडराते रहेंगे। मन शरीर की बढ़ती उम्र को हावी नहीं होने देगा। खुद पर और सपनों पर नियंत्रण रखेगा अपनी आँखों तक में आने के लिये।

आँखों को होगी मन की साथ, तभी तो एक परिपूर्ण सपने की ओर होगा मन का अखंड प्रवास। मन शरीर की अस्वस्थता का आधार नहीं बनेगा। सपने दौड़ेंगे, सपने भागेंगे, सपने खेलेंगे और फिर सपनों से भरा संसार बन जायेगा एक सुन्दर संसार। संसार को इतिहास मिलेगा सपनों के आक्रमणों से भरा हुआ। जिन्होंने सपने को संजोया अपने आँखों में, वही संसार के निर्माता बनेंगे। उन्होंने आँखों से वह सलीका सिखा और उन्होंने अपने नियम भी बनाये अपने तंत्र और उन्होंने ही निर्माण किये अपने मंत्र।

मानव जीवन सच में अमूल्य है। निसर्ग का अमृततुल्य दान है। यह पूरा संसार इंसानों के सुखद ऐसे संवेदनाओं से भरा हुआ है। सपने भी वैसे सुख-दुःख के संतुलन को साथ देते हैं। अर्पण मन से असंख्य संकेतों के दीपस्तंभ अनेक आँखों के सपनों के होते हैं। सपना होता है, अपना वर्तमान, भूत, भविष्य। सपना बनता है, जीवन का आधार। सपना कहता है, आव्हान करो, अपने अन्दर के इंसानियत को, वह हमें याद दिलाता है, भटकने से क्या सपने बनाते हैं दिशाएं हमारे लिये। सपनों से ही हमारे जीवन को आकार मिलता है। इसलिए हमारी जिन्दगी मंगलमय होती है। आँखों के किनारे पर सपनों का एक गांव बसाना चहिये और उस गांव में एक सपनों का महल और उसमें एक सपनों का झूला बांधकर खूब झूलायें उसमें अपने मन को। हमारा मन आँखों की तरह स्वच्छ और सुन्दर हो जाये, सपनों की झूले में झूलकर.....!





मेंडके मनोज रविन्द्र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता के तहत आयोजित कार्यशाला

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) का एक और उपलब्धि

भारत के संविधान की अनुसूची 3 के अनुच्छेद 148 - 151 में नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सी. ए. जी) का उल्लेख किया गया है। सी. ए. जी का प्रमुख कार्य संघ एवं प्रत्येक राज्य तथा संघ शासित प्रदेशों के प्राप्तियों की व्यय की लेखापरिक्षण है। इसके अंतर्गत भारत एवं इसके राज्यों की संचित निधि एवं आकस्मिक निधि और भारत के सार्वजनिक खाते के साथ प्रत्येक राज्य की आकस्मिक निधि एवं सार्वजनिक खाते से होने वाले सभी खर्चो का लेखा परीक्षण करना है।

छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा वित्त विभाग, छत्तीसगढ़ शासन के अंतर्गत कार्यरत संचालनालय है, इसका प्रमुख कार्य, राज्य के स्थानीय निकायों, (इसमें पंचायती राज संस्थाओं एवं स्थानीय नगरीय निकायों के तीनों स्तर समाहित है) स्वायत्तशासी संस्थाओं, अनुदान प्राप्त संस्थाओं एवं ट्रस्ट के फण्ड की लेखा परीक्षा की जाती है। इसके साथ ही इन विभागों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के वेतन भत्तों का सत्यापन भी किया जाता है।

चार्टड एकाउंटेंट, एक मान्यता प्राप्त वित्तीय प्रोफेशनल हैं, जो ऑडिटिंग, टैक्स और व्यवसायिक गतिविधियों का प्रबंधन करते हैं। चार्टर्ड एकाउंटेंट किसी व्यवसाय, सरकार अथवा व्यक्तियों के लिए विशेषज्ञ वित्तीय सलाह एवं कोष के प्रबंधन का कार्य भी करते हैं, राजकीय संस्थाओं में ऑडिट कार्य हेतु सी. ए. जी में निर्धारित अर्हता उपरांत चार्टर्ड एकाउंटेंट्स का इंपैनलमेंट किया जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा अधिनियम 1973 की धारा 3(5) के तहत राज्य के स्थानीय, स्वायत्त एवं अनुदान प्राप्त संस्थाओं के अंकेक्षण के लिए भी, चार्टर्ड एकाउंटेंट की सेवाएं ली जा सकती हैं।

11वें वित्त आयोग की अनुशंसाओं के पैरा 8.19 में यह प्रावधान दिया गया था कि सी. ए. जी द्वारा राज्यों मे कार्यरत लोकल फण्ड आडिट के आडिटर्स को तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान किया जायेगा । इस अनुक्रम में छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा दिनांक 24.10.2011 को जारी राजपत्र में स्थानीय निकायों के अंकेक्षण एवं छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा को प्रदान किये जाने वाले तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता का उल्लेख किया गया है।

छत्तीसगढ़ राज्य में ग्राम पंचायतों की वृहत संख्या एवं छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा के अंकेक्षकों की आनुपातिक तौर पर कम संख्या के कारण राज्य में ग्राम पंचायतों के 100 प्रतिशत अंकेक्षण का कार्य काफी मात्रा में लंबित है। इन लंबित अंकेक्षण कार्यों को पूर्ण करने के लिए राज्य में संचालित छत्तीसगढ़ लोक वित्त प्रबंधन एवं जवाबदेही कार्यक्रम, जो विश्व बैंक से लिए गए ऋण एवं राज्यांश से संचालित हो रही है, के तहत 05 वर्षों (2017-18 से 2021-22) के बैकलाग अंकेक्षण (वित्त लेखा परीक्षा) का कार्य, सी. ए. जी पैनल में शामिल चार्टर्ड अकाउंटेंट से कराए जाने का निर्णय लिया गया है । इस कार्य के तहत जारी किए गए "रुचि की अभिव्यक्ति" (REOI) में चयनित चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्मस् का परिचयात्मक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम, छत्तीसगढ़ प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) कार्यालय में दिनांक 04.08.2023 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रधान महालेखाकार श्री यशवंत कुमार, संचालक, छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा श्री सत्यनारायण राठौर एवं ICAI रायपुर के ब्रांच सचिव, श्री किशोर बरडिया जी उपस्थित थे।

इस प्रकार भारत की सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्था की राज्य इकाई महालेखाकार, राज्य के स्थानीय निकायों की लेखा परीक्षा संस्था, छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा एवं "इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट आफ इंडिया" (ICAI) के चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्मस के प्रतिनिधियों का अंकेक्षण के कार्य हेतु एक साथ एक मंच पर उपस्थित होना काफी महत्वपूर्ण एवं हर्ष की बात है । इस कार्यक्रम के अवसर पर तीनों संस्थाओं के प्रमुख ने अपने-अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए और इस प्रशिक्षण में प्रमुखता से शामिल होने पर अपना प्रसन्नता एवं आभार व्यक्त किये।

यद्यपि तीनों ही संस्थाओं का कार्य अंकेक्षण करना है, किंतु तीनों ही संस्थाओं के अंकेक्षण के तरीके एवं अधिकारिता में भिन्नताएं एवं सीमाएं हैं। वर्तमान में प्रधान महालेखाकार कार्यालय से छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा को तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान किया जा रहा है। इसी प्रकार विभिन्न संस्थाओं के अंकेक्षण हेतु सी ए जी कार्यालय से दिशानिर्देश जारी होते हैं, यदि उन निकायों के किसी कार्य या योजना का अंकेक्षण, चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्म्स के द्वारा किया जाता है, तो उसे भी सी. ए. जी के दिशानिर्देशों का पालन करना होता है। राज्य में संख्यात्मक दृष्टि से अधिकतम संस्था पंचायती राज संस्था के अंकेक्षण का कार्य करने के लिए प्रधान महालेखाकार कार्यालय के दिशानिर्देश की आवश्यकता, छत्तीसगढ़ राज्य संपरीक्षा के साथ साथ चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्म्स को भी होगी । इसका लाभ राज्य के वित्तीय प्रबंधन और सार्वजनिक प्रशासन की वैद्यता, नियमितता, मितव्ययिता, दक्षता और प्रभावशीलता पर पड़ेगा।

यह पहल स्थानीय निकायों, विशेष रूप से पंचायती राज संस्थानों के वित्तीय पहलुओं के ऑडिट में चार्टर्ड अकाउंटेंट के समझ और दक्षता को बढ़ाने के लिए डिजाईन की गयी थी।

कार्यशाला में निम्नलिखित मुख्य विषय पर चर्चा की गई

परीक्षण की प्रक्रिया: चार्टर्ड अकाउंटेंट को पंचायती राज संस्था के परीक्षण की प्रक्रिया से अवगत करवाना, जिसमें लेखा से लेकर रिपोर्ट तक की प्रक्रिया का विवरण दिया गया।

निधि प्रबंधन के महत्वपूर्ण तत्व : विभिन्न निधि प्रबंधन के तरीकों और प्रशासनिक नियमों की चर्चा की गई जो पंचायती राज संस्था के लिए महत्वपूर्ण है।

रिपोर्टिंग और दस्तावेजिकरण : सही रिपोर्टिंग और दस्तावेजीकरण के महत्व को समझाने का प्रयास किया गया ताकि लेखापरीक्षक अपने लेखा प्रक्रिया को और भी पारदर्शी बना सके।



इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से, चार्टर्ड अकाउंटेंट को वित्तीय प्रक्रियाओं, रिपोर्टिंग तंत्र और पंचायती राज संस्थानों के लिए विशिष्ट अनुपालन आवश्यकताओं की व्यापक समझ से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण पंचायती राज संस्था के वित्त को नियंत्रित करने वाले विशिष्ट क़ानूनी और नियामक ढांचे पर केंद्रित था। परिणाम स्वरूप, चार्टर्ड अकाउंटेंट अब अनुपालन सुनिश्चित करने और किसी भी विसंगति को प्रभावी ढंग से पहचानने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित रहेंगे। कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले चार्टर्ड अकाउंटेंट ने अपनी ऑडिट गुणवत्ता में सुधार कर सकेंगे, जिससे पंचायती राज संस्थानों के भीतर पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

अंत में पंचायती राज संस्थाओं के लेखापरीक्षण के लिए तीनों अंकेक्षण संस्थाओं का समन्वय एवं सहयोगात्मक प्रयास न केवल अधिक सटीक और व्यापक ऑडिट रिपोर्ट तैयार करने में मदद करेगा बल्कि पंचायती राज संस्थाओं के भीतर शासन, वित्तीय प्रबंधन और जवाबदेही के समग्र सुधार में भी योगदान करेगा।

टीजीएस कक्ष
लेखापरीक्षा कार्यालय









लेखा परीक्षा शब्दावली
AUDIT TERMINOLOGY

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयीन कार्यों में अधिकतर उपयोग होने वाले शब्द तथा उनका रूपांतरण हिन्दी के कार्यों में वृद्धि हेतु संकलित किया गया है। अनुरोध है कि उक्त सूची का लाभ अवश्य उठाएं।

Acknowledgement	पावती
Adjustment	समायोजन
Annexure	अनुबंध
Anomaly	असंगति/विषमता
Appendix	परिशिष्ट
Appropriation	विनियोजन
Aquittance Roll	वेतन चिठ्ठा
Assets	परिसंपत्ति
Audit	लेखापरीक्षा
Audit Area	लेखापरीक्षा क्षेत्र
Audit Cage	लेखापरीक्षा खाना
Audit Card	लेखापरीक्षा कार्ड
Audit Chart	लेखापरीक्षा संचित्र
Audit Circle	लेखापरीक्षा मंडल/सर्किल
Audit Cirtificate	लेखापरीक्षा प्रमाणपत्र
Audit Code	लेखापरीक्षा संहिता
Audit Comments	लेखापरीक्षा टीका टिप्पणी
Audit Completion	लेखापरीक्षा समापन
Audit Coordination	लेखापरीक्षा समन्वय
Audit Department	लेखापरीक्षा विभाग
Audit Drill	लेखापरीक्षा ड्रील
Audit efficiency	लेखापरीक्षा दक्षता
Audit enfacement	लेखापरीक्षा मुखांकन
Audit Expenditure	लेखापरीक्षा व्यय
Audit interpretation	लेखापरीक्षा निर्वचन/व्याख्या
Audit jurisdiction	लेखापरीक्षा अधिकार क्षेत्र
Audit Lapses	लेखापरीक्षा की गलती
Audit Objection	लेखापरीक्षा आपत्ति
Audit observation	लेखापरीक्षा प्रेक्षण
Audit of Stores Account	भंडार लेखे की लेखापरीक्षा
Audit Office	लेखापरीक्षा कार्यालय
Audit Officer	लेखापरीक्षा अधिकारी
Audit Para	लेखापरीक्षा पैरा
Audit Period	लेखापरीक्षा अवधि
Audit Principle	लेखापरीक्षा सिद्धांत
Audit Procedure	लेखापरीक्षा प्रक्रिया
Audit Programme	लेखापरीक्षा कार्यक्रम
Audit purview	लेखापरीक्षा क्षेत्र/कार्यक्षेत्र
Audit Report	लेखापरीक्षा रिपोर्ट
Audit Review	लेखापरीक्षा समीक्षा
Audit Rules	लेखापरीक्षा नियम
Audit Ruling	लेखापरीक्षा विनिर्णय
Audit Section	लेखापरीक्षा अनुभाग
Audit Visit	लेखापरीक्षा दौरा
Audited & observed	लेखापरीक्षित व प्रक्षित
Audited & passed	लेखापरीक्षित व पारित
Audited Account	लेखापरीक्षित लेखा
Auditing	लेखापरीक्षण
Auditing Controller	लेखापरीक्षण नियंत्रक
Auditor	लेखापरीक्षक
Bad debt	अशोध्य ऋण/डूबी रक़म
Balance Sheet	तुलन पत्र
Bearer Cheque	धारक चैक / वाहक चैक
Blank Cheque	कोरा चैक/निरंक चैक
Book Adjustment	बही/खाता समायोजन
Borrow	उधार लेना
Brought forward (B/F	अग्रानीत
Budget	बजट
Budget provisions	बजट प्रावधान
Capital	पूँजी/मूलधन/राजधानी
Carried forward (C/F	अग्रेनीत
Cash in hand	हाथ रोकड/रोकड शेष
Certificate of Completion	पूर्णता का प्रमाण पत्र
Certificate of Issues	निर्गम प्रमाण पत्र
Certificate of Utilisation	उपयोगिता प्रमाण पत्र
Cess	उपकर
Character Certificate	चरित्र प्रमाण पत्र
Charge	प्रभार / खर्च / आरोप
Charged	प्रभारित
Charges	प्रभार
Cheque	चैक
Class of voucher	वाउचर की श्रेणी
Classification code	वर्गीकरण कूट
Classified	वर्गीकृत

Classified Documents	वर्गीकृत प्रलेख
Closing Balance	अंत शेष
Closing the year	वर्ष के अंत में
Code Head	कूट शीर्ष
Collection	वसूली करना
Compiled	संकलित
Condemmed Stock	अनुपयोगी स्टॉक
Consolidated	समेकित
Contingency	आकस्मिकता
Contingent Bill	फुटकर खर्च बिल
Contract	ठेका/संविदा
Cost	लागत
Credit	जमा/क्रेडिट
Crossed Cheque	रेखीत चैक/क्रॉस चैक
Deficit Budget	घाटे का बजट
Depriciation	मूल्यह्रास/अवक्षय
Paid Cheque	प्रदत्त चैक
Payments	भुगतान/अदायगियाँ
Plus Rt/ch	धन प्राप्तियाँ/प्रभार
Post Audit	पश्च लेखापरीक्षा
Pre Audit	पूर्व लेखापरीक्षा
Price	कीमत
Punching Medium	पंचिंग माध्यम
Rate	दर / रेट
Re Appropriation	पुनर्विनियोजन
Realization	वसूली
Receipts	प्राप्तियाँ / आवतियाँ
Receipts	प्राप्तियाँ
Regional Audit Officer	क्षेत्रीय लेखापरीक्षा अधिकारी
Schedule	अनुसूची
Scheduling	अनुसूचीकरण
Sub Head	उप शीर्ष
Direct	प्रत्यक्ष
Director of Audit	लेखापरीक्षा निदेशक
Discrepency	विसंगति
Dividend	लाभांश
Doubtful	संदिग्ध
Enclosure	अनुलग्नक/संलग्नक
Estimate	प्राक्कलन, अनुमान
Fee	शुल्क
Financial Audit	वित्तीय लेखापरीक्षा
Forfeiture	ज़ब्ती करना/समपहरण
Fund	निधि/धन/राशि
Grand Total	कुल योग
Account Head	लेखा शीर्ष
Inflation	स्फीति/मुद्रास्फीति
Interim Audit	अंतरिम लेखापरीक्षा
Internal Audit	आंतरिक लेखापरीक्षा
Ledger	खाता/खाता बही
Lend	उधार देना
Liability	दायित्व/देयता
Loan	कर्ज़/ऋण/उधार
Major Head	मुख्य शीर्ष
Minor Head	लघु शीर्ष
Minus Receiptst	ऋण प्राप्तियाँ
Mis Appropriation	दुर्विनियोजन
Muster Roll	उपस्थिति नामावली
Net	जाल / शुद्ध / निवल
Nominal Roll	नामावली
Obligation	दायित्व/आभार/बाध्यता/बंधन
Octroi	चुंगी
Opening Balance	अथ / आदि शेष
Excesspayment	अधिक भुगतान
Supplementary	पूरक
Surplus Budget	बचत का बजट
Suspense Head	उचंत शीर्ष
Tax	कर
Tender	निविदा
Terms	निबंधन
Terms & Conditions	निबंधन और शर्ते
Test Audit	जाँच लेखापरीक्षा
Toll	सीमाकर
Total	योग / जोड़
Transfer Entry	अंतरण प्रविष्टि
Turn over, Arrear, Outstanding, pending, Balance, Remaining, Left over	बकाया
Value	मूल्य
Voucher Number	वाउचर संख्या
Write off	बट्टे खाते डालना



के.पी. संतोष
पर्यवेक्षक

लेखापरीक्षा कार्यालय

दिनांक 01/08/2022 से 31/07/2023 तक नव नियुक्त कर्मचारियों/ अधिकारियों की सूची

क्रमांक	नाम (श्री)	पदनाम	विशिष्ठ पहचान संख्या	नियुक्ति दिनांक
1.	प्रमोद काद्यान	लेखापरीक्षक	CGRPA 3250551	23/03/2023
2.	मयंक सिंघानिया	लेखापरीक्षक	CGRPA 3250550	22/03/2023
3.	उज्जल कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA 3250547	14/03/2023
4.	आलोक कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA 3250548	14/03/2023
5.	विदयार्थ वर्मा	लेखापरीक्षक	CGRPA 3250549	21/03/2023
6.	संतोष कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA 3250553	27/03/2023
7.	अजित कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA 3250552	27/03/2023
8.	शिव शंकर गोरे	कनिष्ठ अनुवादक	CGRPA 3250557	27/06/2023

दिनांक 01/08/2022 से 31/07/2023 के दौरान सेवानिवृत्त कर्मचारियों/ अधिकारियों की सूची

क्र	नाम (श्री/श्रीमती /सुश्री)	विशिष्ठ पहचान संख्या	पदनाम	सेवा निवृति दिनांक
1.	सूरज लाल टेमभरे	CGRPA 3250418	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2022
2.	प्रतुल कुमार शर्मा	CGRPA 32500061	पर्यवेक्षक	30.09.2022
3.	पराथुरी सोमेश्वर राव	CGRPA 3250007	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2023
4.	ए शुबालक्ष्मी	CGRPA 3250072	पर्यवेक्षक	31.05.2023

दिनांक 01/08/2022 से 31/07/2023 के दौरान पदोन्नत कर्मचारियों/ अधिकारियों की सूची

क्रमांक	नाम (श्री)	विशिष्ठ पहचान संख्या	पदनाम	पदोन्नत पदनाम	नियुक्ति दिनांक
1.	दीपक कुमार शुक्ला	CGRPA 3250329	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	26.08.2022
2.	नवदीप कुमार	CGRPA 3250409	लेखापरीक्षक	सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	26.08.2022
3.	नीतेश पालीवाल	CGRPA 3250402	लेखापरीक्षक	सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	26.08.2022
4.	मुकेश रानी	CGRPA 3250305	डाटाएंट्री ऑपरेटर ग्रेड `बी'	लेखापरीक्षक	18.08.2022
5.	मनमोहन सिंह मंडावी	CGRPA 3250108	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	03.10.2022
6.	संजीत डबास	CGRPA 3250324	डाटाएंट्री ऑपरेटर ग्रेड `बी'	लेखापरीक्षक	12.10.2022
7.	सोनल तोमर	CGRPA 3250324	डाटाएंट्री ऑपरेटर ग्रेड `बी'	लेखापरीक्षक	12.10.2022
8.	सुब्रत पॉल	CGRPA 3120932	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	19.01.2023
9.	मनीष कुमार गुप्ता	CGRPA 3250261	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	02.01.2023
10.	दीपक शर्मा	CGRPA 3250312	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	02.01.2023
11.	रवि प्रकाश	CGRPA 3250274	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	02.01.2023
12.	लौकिक पुण्डलिक संगोलकर	CGRPA 3250277	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	02.01.2023
13.	अभिषेक राज	CGRPA 3250298	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	02.01.2023
14.	ए संतोष	CGRPA 3250307	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सहायक पर्यवेक्षक	27.01.2023
15.	अभिजीत कुमार साहू	CGRPA 3250465	लेखापरीक्षक	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	02.01.2023
16.	नेमकला नेताम	CGRPA 3250200	लेखापरीक्षक	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	02.01.2023
17.	प्रमिला बाघ	CGRPA 3250292	लेखापरीक्षक	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	02.01.2023
18.	किरण यदु	CGRPA3250172	एमटीएस	लेखापरीक्षक	02.01.2023
19.	हेमंत कुमार	CGRPA3250165	एमटीएस	लेखापरीक्षक	02.01.2023
20.	मोहम्मद जाफ़र	CGRPA3250194	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सलेपअ	09.04.2023
21.	अभिजीत कुमार साहू	CGRPA3250465	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सलेपअ	06.04.2023
22.	कुमार अर्जुन	CGRPA3250487	लेखापरीक्षक	सलेपअ	06.04.2023
23.	लवदीप सिंह	CGRPA3250488	लेखापरीक्षक	सलेपअ	06.04.2023
24.	सुशांत सुरेश पराते	CGRPA3250338	लिपिक	लेखापरीक्षक	18.05.2023
25.	केदार नाथ जंघेल	CGRPA3250303	लिपिक	लेखापरीक्षक	18.05.2023
26.	हेमलाल	CGRPA3250192	एमटीएस	लेखापरीक्षक	18.05.2023
27.	प्रमोद तिर्की	CGRPA3250318	एमटीएस	लेखापरीक्षक	18.05.2023
28.	आशुतोष जाधव	CGRPA3250247	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	07.06.2023

लेखा एवं हकदारी कार्यालय

01.08.2022 से 31.07.2023 तक की पदोन्नति सूची

क्र.	नाम	दिनांक	पदोन्नति से पूर्व पद	पदोन्नत होकर प्राप्त पद
1	श्री एस.पी. सुनील	30.08.22	सहा. लेखा अधिकारी (तदर्थ)	सहा. लेखा अधिकारी (स्थायी)
2	श्री एम. पी. एस राजगोंड	28.9.22	वरिष्ठ लेखापाल	सहायक पर्यवेक्षक
3	श्री मनोज कुमार	01.01.23	वरिष्ठ लेखापाल	सहायक पर्यवेक्षक
4	श्री अमन बारला	01.01.23	डी.ई.ओ -`B'	लेखापाल
5	श्री मोहित गुप्ता	01.01.23	डी.ई.ओ -`A'	लेखापाल
6	श्री मनहरन लाल बंजारे	01.01.23	लिपिक	लेखापाल
7	श्री टी. आर ईश्वर राव	01.01.23	लिपिक	लेखापाल
8	श्री परवीन	01.01.23	डी.ई.ओ -`A'	डी.ई.ओ -`B'
9	श्री वाय जवाहर	01.02.23	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक
10	श्री ई.टी मनोज	01.02.23	वरिष्ठ लेखापाल	सहायक पर्यवेक्षक
11	श्री के.पी संतोष	01.03.23	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक
12	श्रीमती माया उइके	01.03.23	वरिष्ठ लेखापाल	सहायक पर्यवेक्षक
13	श्री एच वसंत बावने	01.03.23	वरिष्ठ लेखापाल	सहायक पर्यवेक्षक
14	श्रीमती बसंती नेताम	21.04.23	वरिष्ठ लेखापाल	सहायक पर्यवेक्षक
15	श्री मनदीप	21.04.23	डी.ई.ओ -`A'	डी.ई.ओ -`B'
16	श्री आर एल लिमजे	31.07.23	सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक

01.08.2022 से 31.07.2023 तक की सेवानिवृत्ति सूची

क्रमांक	नाम	पद	सेवानिवृत्ति तिथि
1	श्री ए.के.वाघमारे	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.08.22
2	श्री एम.के रामटेके	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.10.22
3	श्री एस.के नेमा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.10.22
4	श्री दशरथ कुम्भारे	वरिष्ठ लेखापाल	31.10.22
5	श्री विजय कुमार राजपूत	एम टी एस	30.11.22
6	श्री एस.एस. सरोजकर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.12.22
7	श्रीमती फ्लोरा डी तिग्गा	पर्यवेक्षक	31.01.23
8	श्रीमती कामिनी बादल	पर्यवेक्षक	28.02.23
9	श्री एन.एस.समरथ	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.23
10	श्री मुरलीधर कुरुप	सहा. लेखा अधिकारी	31.03.23
11	श्री एन.कुंदल राव	सहायक पर्यवेक्षक	13.04.23
12	श्री एस.के.इवानती	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.23
13	श्री एम.देवदास	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.23
14	श्री ओ.पी. बोरकर	सहा. लेखा अधिकारी	31.07.23
15	श्री जी.एस.डेहरी	पर्यवेक्षक	31.07.23

01.08.2022 से 31.07.2023 तक मृत अधिकारियों/ कर्मचारियों की सूची

क्रमांक	नाम	पद	मृत्यु तिथि
1	श्री एम.पी.सिंह राजगोंड	सहायक पर्यवेक्षक	20.01.23











अनन्या
पिता : श्री ई. राज शेखर राव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी







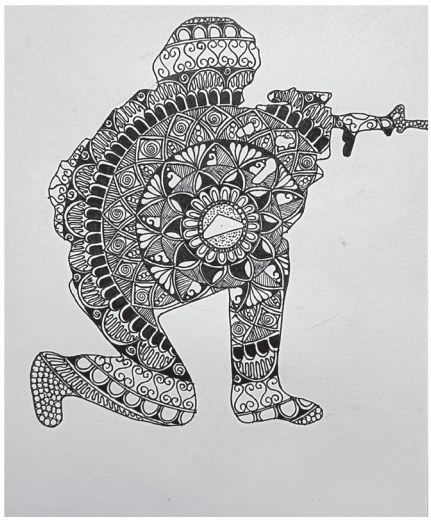




प्रवीण साहू
लेखापरीक्षक



Navneeta











ए. नवनीता
पिता : श्री ए. ईश्वर राव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में हिन्दी के प्रागामी प्रयोग पर चर्चा



कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला





rawpixel

आस्था का गढ़...

छत्तीसगढ़



स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़-रायपुर

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा